हिमशैल

(रोमांचक उपन्यास)

डॉ. भगवतशरण चतुर्वेदी

इसी उपन्यास से



पृथ्वीग्रह की विशेषता यह है कि वहाँ कोई सत्य नहीं बोलता। एक-दूसरे पर कोई विश्वास नहीं करता। सम्बन्ध इसलिए चलते रहते हैं कि उनसे किसी को कोई लगाव नहीं है। वहाँ किसी आँख में अपनापन नहीं है। किसी मन में प्यार नहीं है।

पृथ्वीग्रह का कोई रक्षक नहीं है। जहाँ भाई-भाई आपस में लड़ते हों; जहाँ एक देश के निवासी, अपने ही देशवासियों से, आपस में, आँखों में बबूल लिये बात करते हों, जहाँ एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को खूनी इरादों से देखता हो, जहाँ दुराव, छिपाव और अलगाव की छाया में, इंसानियत जी रही हो; जहाँ हर व्यवहार छलपूर्ण हो; जहाँ आदमी को जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर टुकड़े-टुकड़े कर बाँट दिया हो; ऐसे आचरणहीन, सस्कारहीन ग्रह से यदि सूर्य का प्रकाश चुरा लिया जाए तो पृथ्वी के विभिन्न राष्ट्र एक दूसरे पर सदेह और अविश्वास कर, आपस में, टकरा-टकरा कर ही मर जायेंगे।

तोप, बम, बारूद की खाद देकर भाईचारे के पौधे को पनपाने की चेष्टा हम बरसों से करते रहे हैं। अपनेपन के जले हुए बिरवे को दिलासा की ऑक्सीजन पर जिन्दा रखने की हमारी कोशिश बराबर नाकाम रही है। आज अनेक सवाल खड़े होकर हमसे जवाब माँग रहे हैं। हम इंसान होकर इंसान को क्यों मारते हैं? हम क्यों चाहते हैं उसे बोली, लिबास और मजहब के नाम से पहचानना? क्या [illegible] इंसान के लिए ये जानना काफी नहीं है कि सामने वाला भी उस जैसा ही इंसान है, इसलिए उसका अपना है? फिर क्यों बनाते हैं हम जमाने भर को जला डालने वाले ये हथियार? किसके लिए बनाते रहे हैं ये सब?

स्वस्ति

स्वप्नद्रष्टा, कवि-कथाकार डॉ. भगवतशरण चतुर्वेदी का नया स्वप्न हिमशैल पढते-पढते सहसा बलबीर सिंह 'रंग' की ये पंक्तियां याद हो आईं :

गायक के स्वर-संधानों को,
दसों दिशाएँ भी दुहराती,
और चितेरे की रेखाएँ,
वसुधरा पर पूजी जाती,

पर कवि के कल्पित स्वप्नों का तीखा सत्य अमर कब होगा ?

हिमशैल डॉ चतुर्वेदी का ऐसा ही स्वप्न है जिसे आकार लेकर धरती पर उतरना ही होगा, तभी हमारा यह संसार एक परिवार बन सकेगा।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने डॉ. भगवतशरण चतुर्वेदी के गद्य लेखन के बारे मे कहा था—उनका गद्य पढते-पढते, ऐसा लगता है जैसे, कहीं अवचेतन में कोई पायल बजने लगी हो। वास्तव में, डॉ. भगवतशरण चतुर्वेदी का कवि शब्दों के पाँवों में नूपुर बाँध देता है जो अपनी खनक के साथ पाठक को उस रसलोक में ले जाते हैं जो अनहद नाद का मूल स्रोत है।

हिमशैल एक ऐसी युग-प्रतिनिधि विश्व कथा है जिस पर हमारा सम्पूर्ण पृथ्वीग्रह गर्व करेगा। और मुझे प्रसन्नता है कि इस गौरव और श्रेय का वरण करेंगे हिन्दी के रससिद्ध कवि एवं अप्रतिम कथाकार डॉ. भगवतशरण चतुर्वेदी।

उम्र के आखिरी पडाव पर आकर मैं ऐसी कृति पढा सका यह मेरे लिए भी आत्म-तुष्टि का क्षण है।

सांगली, बम्बई —दा. धर्माधिकारी

विश्वास की रक्षा



- जहाँ धरती, आकाश से मिलकर, गगन की निस्सीमता को नकार रही है।

- जहाँ सूर्य, अहर्निश जलकर भी, अंधकार की अट्टालिका को जला नही पा रहा है।

- जहाँ, शताब्दियों से, रूप का प्रतीक बना चांद, अपना मुँह दर्पण में निहार, आँसू बनकर ढल रहा है।

- जहाँ आदमी ने आदमी के अस्तित्व को चुनौती दे डाली है।

- जहाँ पूरी पृथ्वी ने अलगाव को अपना आलम्बन मान, घृणा के वस्त्र पहन, अविश्वास और सदेह के गुलाबी डोरो से सजी अपनी आँखो में बबूल उगा लिये है—

  हिमशैल की कथा इस मुकाम से प्रारम्भ होती है।

- **हिमशैल** एक अविस्मरणीय अनुभव एवं रहस्यमय रोमाच है।

- इस कथा का अन्तिम स्पर्श जाति, धर्म, सम्प्रदाय के पहाड़ों को तोड, आँखों में उगे बबूलो को बुहार, नफरत के पौधे को समूल उखाड़, समूचे संसार को गध से महमहाता एक पवित्र पडाव बना देता है।

- इस विश्वकथा का समापन उस क्षितिज पर हुआ है जिसे धरती पर उतारने के लिए इक्कीसवीं शताब्दी को कई-कई बार जीना पड़ेगा।

- सामूहिक और संकल्पित प्रयत्नो से ही यह स्वप्न धरती पर उतर सकेगा।

हिमशैल इसी विश्वास के साथ आपको समर्पित है कि आप इस सपने को साकार करने में सार्थक सहयोगी की भूमिका का निर्वहन करेंगे। और मैं जानता हूँ, मेरे इस विश्वास की रक्षा आप करेंगे।

कृतज्ञ हूँ, साहित्यगार के भाई रमेश वर्मा का जो इस सपने को बुनने में मेरे सहयोगी रहे। आभारी हूँ, भाई राजन सभरवाल, गगन मालपाणी और तेजप्रकाश जोशी का जो इन अनुभूयमान क्षणों के साक्षी रहे। उपकृत हूँ, श्री के० एल० जैन, डॉ० सी० के० वरठे और डॉ० सुरेन्द्र उपाध्याय द्वारा जो पाण्डुलिपि के अध्येता रहे। और धर्माधिकारी जी के अमोघ आशीर्वाद के प्रति प्रणत होते हुए नमित हूँ आप सब के सहज स्नेह के समक्ष।

—डॉ० भगवतशरण चतुर्वेदी

हिमशैल

इस पृथ्वी की आकाश गंगा के एक छोर पर बसा हुआ था वह ग्रह।

पृथ्वी से सहस्त्रों प्रकाश वर्षों की दूरी पर स्थित था वह ग्रह जहाँ सूरज की किरणें भी नहीं पहुँच पाती थीं। सदियों में कभी कोई किरण भूले मे जा टकराती तो वह ग्रह क्षण भर को टिमटिमा उठता और फिर अंधकार में विलीन हो जाता।

इस ग्रह की खोज पाने की भी बड़ी विचित्र कहानी है। आकाश-मार्ग से आदमियों का आना-जाना पुनः प्रारम्भ हो गया था। पृथ्वीवासी विभिन्न ग्रहों की यात्रा करने लगे थे। अपने स्थूल शरीर में पृथ्वी तत्व की मात्रा का ह्रास एवं वायु तत्व की प्रबलता कर कोई भी व्यक्ति गगनचारी बन सकता था। इसलिये अधिकांश पृथ्वीवासी नभचारी बन गये थे। वे यदा-कदा किसी भी ग्रह पर चले जाते। वहाँ के निवासियों से मिलते और फिर वापिस अपने ग्रह पर लौट आते।

एक बार हिमालय की तलहटी में रहने वाले कुछ व्यक्तियों का एक समूह विभिन्न ग्रहों की यात्रा करते-करते पृथ्वी की दृष्टि से ओझल हो गया। उनका सूक्ष्म शरीर हवा में उड़ते-उड़ते अन्तरिक्ष के पार अपनी आकाश गंगा की परिधि को उलांघना ही चाहता था कि अचानक किसी बर्फ के पहाड से टकराकर वे अपना सूक्ष्मत्व खो बैठे और वही गिर पडे।

वहाँ चारो ओर बर्फ ही बर्फ थी। खून को जमा देने वाली प्रबल ठंड का साम्राज्य था वहाँ। जब वे मानव कुछ सचेत हुये तो उन्होने सम्पूर्ण स्थिति को समझने की चेष्टा की। वे धरती पर बिछी बर्फ पर पड़े हुये थे।

एक-दो बार अपनी आँखें मलकर वे उठ खडे हुये। इधर-उधर देख कर वे समझ गये कि वे किसी ऐसे ग्रह पर आ गये थे जो सूरज की पहुँच से

बहुत दूर था और जहाँ चौबीस घण्टे रात रहती थी। वे अपनी इस नई खोज से प्रसन्न भी थे और अपनी दुनिया से कट जाने पर खिन्न भी। तभी किसी ने धीरे से कहा—हमें अपनी धरती पर वापिस चलने की चेष्टा करनी चाहिए।

किसी अन्य ने उत्तर दिया—उत्साही अनुसंधान व्यक्ति को अमर बना देता है। इस आकाश गंगा में स्थित इस ग्रह को खोजने का श्रेय हमें वरण करना ही चाहिये। और यहाँ की स्थिति इतनी प्रतिकूल भी नहीं कि हम लोग यहाँ रह ही न सकें। हमें इस ग्रह को अपनाना चाहिये।

निश्चय के बाद किये तर्क-वितर्क बुद्धि की क्षुद्रता के साक्षी होते हैं। अतः इस निश्चय के उपरान्त फिर कोई चर्चा नहीं हुई। अब उस ग्रह को देखने, परखने और समझने की बात थी।

वे सब आगे बढ़ने के लिये किसी दिशा का निश्चय करते कि दो व्यक्ति उनके सम्मुख आ खड़े हुए। हिम प्रदेश में विचित्र वस्त्रधारी व्यक्तियों को देख धरती के इन मानवों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन दोनों आगन्तुकों ने संकेत से उन्हें अपने साथ चलने का आदेश दिया और वे सब उनके पीछे हो लिये।

जब वे एक गुफा को पार करके अन्दर पहुँचे तो उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। अब वे एक बड़े सज्जित कक्ष में थे। सामने सिंहासन पर एक व्यक्ति बैठा हुआ था और उसके सम्मुख अनेक व्यक्ति बैठे हुये थे।

एक गम्भीर वाणी गूँजी और फिर शांत हो गई। इसके बाद वहाँ विभिन्न भाषाओं के स्वर गूँजने लगे। सम्भवतः उस गम्भीर वाणी के भाषानुवाद प्रसारित होने लगे थे। तभी उन आगन्तुकों ने सुना—आप जिस भी ग्रह से आये हैं हिमशैल ग्रह आपका स्वागत करता है।

समूह-प्रमुख ने झुकते हुये कहा—पृथ्वी ग्रह की ओर से आप हमारा भी नमन स्वीकार करें।

पलक झपकते वहाँ एक सिंहासन और लाया गया और उन सब को बैठने का संकेत किया ग्रह-सम्राट ने।

जब वे सब बैठ गये तो फिर आवाज उभरी—यहाँ आने का प्रयोजन ?

— केवल दिशा भ्रम। हम लोग विभिन्न ग्रहों की यात्रा कर पृथ्वी ग्रह वापिस जाना चाहते थे कि किसी अज्ञात आकर्षणवश इस ग्रह पर आ गिरे। समूह-प्रमुख ने उत्तर दिया।

हल्की हँसी के बीच सम्राट ने कहा—आप आये नहीं, लाये गये हैं। हमने अपने मानव सम्मोहास्त्र से आपको यहाँ बुलाया है।

— मानव सम्मोहास्त्र ?

— हाँ, चुम्बकीय किरणें सजीव होने के पश्चात् किसी भी देह को अपनी ओर खींच सकती हैं। धातु-आकर्षण का यह परिष्कृत स्वरूप है।

—इसका अर्थ तो यह हुआ कि आप पृथ्वी के विज्ञान से बहुत आगे हैं।

— ठीक समझा तुमने। इस प्रकाशहीन और अग्निहीन ग्रह को हम विज्ञान की सहायता से ही चला रहे हैं। यहाँ सब कुछ कृत्रिम है, मानव निर्मित है। प्रकृति द्वारा तो केवल धरती, प्रबलतम ठंड और बर्फ ही हमें प्रदान की गई है।

— किन्तु जीवन के सहज निर्वहन के लिये तो और भी बहुत-सी अनिवार्य आवश्यकताओं की आपूर्ति करनी होती है।

— होती है। और उनकी आपूर्ति हम अपने निकटवर्ती ग्रहों के सहयोग से करते हैं। यहाँ कोई उत्पादन नहीं होता। इसलिए हमें भोजन, वस्त्र आदि दूसरे ग्रहों से ही मँगाने पड़ते है।

— और बदले मे आप क्या देते है ?

— बदले मे ? क्या मतलब ?

— पृथ्वी ग्रह पर जब किसी अन्य मुल्क मे कोई सामान मँगाया जाता है तो उसका मूल्य चुकाना पड़ता है।

— तुम इस समय मूल्यनगर में नहीं हो। तुम –तुम मित्रनगरों के समूह वाले एक ग्रह पर हो। यहाँ एक-दूसरे की आवश्यकता को पूरा



इस बार पंचांग में खग्रास का उल्लेख था। खग्रास गोया पूर्ण ग्रहण। अमावस्या को पूर्ण सूर्य-ग्रहण की भविष्यवाणी थी। ठीक मध्याह्न में, मध्य रात्रि का दृश्य उपस्थित होने की चेतावनी। पंडितजन इस ग्रहण के दूरगामी प्रभाव का अध्ययन कर रहे थे। वैज्ञानिक आकाश की स्थिति पर दृष्टि जमाये हुये थे। ज्योतिषी विभिन्न राशिधारियों पर पड़ने वाली संभावित प्रतिकूलता को परख रहे थे। ग्रहण की सूचना ने निष्क्रियता को क्रियाशीलता सौंप दी थी।

स्थापित असत्य को सत्य सिद्ध करने की चेष्टा व्यक्ति जब-तब किया ही करता है। अपनी मूर्खता स्वयं को दिखाई नहीं देती। मुँह पर प्रशस्ति और पीठ पीछे निन्दा करना हमारी संस्कृति है। आशंकाओं को ओढ़े रहना हमारे संस्कारों में है।

ज्योतिषियों की भविष्यवाणियाँ प्रकाशित हो रही थीं। मेष, कन्या, धनु और कुम्भ राशि के अतिरिक्त सभी राशिधारियों के लिये यह ग्रहण भारी था। उसके गुरुत्व को कम करने के लिए यज्ञ-पाठ का प्रावधान प्रचारित किया जा रहा था। आठों राशि वाले आठ दिशाओं में घूम रहे थे। सूर्य ग्रहण से पहले उनके सपनों को आशंका ने ग्रस लिया था। उनके मुँह पर ग्रहण की छाया पड़ने लगी थी। हवाओं में शुद्ध घी के जलने का धुँआ उठने लगा था। मन्दिरों की दीवारों से टकराकर स्वर बाहर निकलने लगे थे।

वैज्ञानिक युग की मान्यताओं को अज्ञात भय की चादर ने ढक लिया था।

मार्ग में जो मिलता वो कहता—बरसों बाद पूरा सूर्य ग्रहण होगा।

घर में गृह-स्वामिनी कहती—ग्रहण के दिन कोई घर से बाहर न निकलना। ग्रहण की छाया पड़ने से आँखें कमजोर हो जाती हैं।

दफ्तर में लोग कहते—साहब, अजीब खेल है कुदरत का। दिन में रात हो जाएगी, ग्रहण के दिन।

कोई बुजुर्ग समर्थन में कहता—पच्चीस साल पहले भी ऐसा ही ग्रहण पड़ा था। मैंने अपनी आँखों से दिन में तारे देखे थे।

हिमशैल में वर्फ से ऊर्जा बनाने का प्रयोग चल रहा था। पृथ्वी-वासी विस्मय से यह सब देख रहे थे। उन्हें पृथ्वी के हिमालय की याद थी। पृथ्वी पर कभी उन्होंने कोई सार्थक प्रयोग होते नहीं देखा था वर्फ का। वहाँ लोग वर्फ से डरते थे और यहाँ बर्फनगर में लोग पूरे मन से, प्रसन्नता से, विभिन्न प्रयोगों में लगे हुये थे। श्रम का परिवर्तित स्वरूप ही तो ऊर्जा है। वे अपने उसी श्रम के फलस्वरूप वर्फ से ऊर्जा प्राप्त करने की चेष्टा कर रहे थे।

प्रयोग कक्ष में वैज्ञानिक जहाँ विभिन्न मशीनों से उलझे हुये थे, वहाँ शोध-कक्ष में पारस्परिक चर्चा से निश्कर्ष निकाले जा रहे थे।

ग्रह-सम्राट अपने कतिपय परामर्शदों के साथ पृथ्वी समूह-प्रमुख से बातों में व्यस्त थे।

ग्रह-सम्राट ने पूछा—तंदुल ! तुम अपने ग्रह की कोई विशेष बात बताओ।

तंदुल। यही नाम था पृथ्वी मानव-प्रमुख का।

तंदुल ने कहा—सम्राट ! पृथ्वी से अधिक सामान्य ग्रह इस आकाश गंगा में और कोई नहीं है।

—सामान्य ग्रह ? कैसी बात कर रहे हो, तंदुल। हमने तो उस ग्रह की पुराकथाओं में सुना है कि विभिन्न ग्रहों के निवासी पृथ्वी ग्रह पर पैदा होने के लिये तरसते हैं।

—आप सच कह रहे हैं, सम्राट ! ऐसा भी एक युग था जब पृथ्वी ग्रह पूरी आकाश गंगा के ग्रहों को सम्मोहित करता था। वहाँ का भाई-चारा, पारस्परिक प्रेम, सच्चाई और अटूट सम्पदा निश्चित रूप से लोगों को आकर्षित करती थी किन्तु अब ऐसा नहीं है।

—हम .... हम कुछ समझे नहीं, तंदुल !

—अब मैं कैसे समझाऊँ आपको, सम्राट ! किसी दिन आप स्वयं धरती पर चलें। एक क्षण में आप सब कुछ समझ जायेंगे।

—चलना इतना सरल नहीं है, तंदुल ! यहाँ की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने की जिम्मेदारी हमें इतना समय ही नहीं देती कि हम कुछ और सोच सकें। तुम हमें वैसे ही बताओ, हम समझ लेंगे।

तंदुल ने धीरे से कहा—सम्राट ! पृथ्वी ग्रह की अब विशेषता यह है कि वहाँ कोई सत्य नही बोलता । एक-दूसरे पर कोई विश्वास नहीं करता । सम्बन्ध इसलिए चलते रहते हैं कि उनसे किसी को कोई लगाव नहीं है । वहां किसी आँख मे अपनापन नही है । किसी मन में प्यार नहीं है ।

—तंदुल ! ये – – ये क्या कह रहे हो ? क्या कह रहे हो तुम ? क्या ऐसा भी कोई ग्रह हमारी आकाश गंगा में है ? नही, हम यह नहीं मान सकते । सम्राट ने सिंहासन से उठते हुये कहा ।

तंदुल भी उठते हुए बोला—इसीलिये, सम्राट ! मैं कुछ कहना नहीं चाहता था । *यदि पृथ्वी ग्रह पर भी मे यह कहता तो कोई विश्वास* नहीं करता । सच को कोई सुनना, समझना या मानना नही चाहता । सब एक भुलावे और दिखावे की जिन्दगी जी रहे हैं, सम्राट !

—तुम सच कह रहे हो, तंदुल !

—आपके प्यार का मैं झूठ बोलकर तिरस्कार नही कर सकता । मै पृथ्वी ग्रह का निवासी अवश्य हूँ किन्तु सभ्य मानव के ससार से सदा दूर रहा हूँ, इसलिए मुझे उनके प्रगतिशील सस्कारो की धरोहर नहीं मिली ।

—मुझे तो अभी भी विश्वास नही हो रहा है । सम्राट ने तंदुल के कधे पर हाथ रखते हुए कहा ।

—आप सच कह रहे है, सम्राट ! ऐसे अविश्वासी ग्रह की कल्पना भला कौन कर सकता है किन्तु यह सत्य है, परम सत्य । मेरे पृथ्वी ग्रह पर धरती विभिन्न मुल्कों के नाम से जानी जाती है । पानी और पहाड़ों ने उन मुल्कों की सीमा बना दी है । जहाँ ऐसी कोई सीमा नही है वहाँ बजर जमीन के लिए एक-दूसरे देश के सिपाहियो का खून बहाने में उन्हे प्रसन्नता का अनुभव होता है। जहाँ सीमा है, वहाँ उसका विस्तार करना चाहते हैं वे लोग । कोई मुल्क, किसी मुल्क से सच नहीं बोलता । कोई देश, दूसरे देश की प्रगति नही चाहता । पडोसी, पड़ोसी के सुख से जलता है । देश, देश की प्रगति से कुढता है ।

तंदुल भावावेश में बोले जा रहा था कि सम्राट ने बीच मे टोकते हुए कहा—बस, तंदुल ! *वस । हम ऐसे ग्रह के बारे मे जानना* भी पाप

समझते हैं। हम जिस परायेपन की कल्पना नहीं कर सकते, उसको सुनना भी सहन नहीं कर सकते।

—मैं क्षमा चाहता हूँ, सम्राट ! मैंने आपसे पहले ही कहा था कि पृथ्वी ग्रह की चर्चा करना यहाँ की हवाओं में जहर घोलना है। तंदुल ने आँखें नीचे करते हुए कहा।

—अरे, तुम अपना मन छोटा क्यों करते हो ? वो तो मैंने वैसे ही पूछा था लेकिन तुम्हें देखकर लगता है कि तुम वहाँ के निवासी नहीं हो। सम्राट ने मुसकराते हुए कहा।

तंदुल ने हाथ जोड़ते हुये कहा—मैं हूँ तो पृथ्वी ग्रह का ही, सम्राट! किन्तु उसकी आधुनिकता से हमेशा दूर रहा हूँ। स्वार्थी संस्कारों ने आदमी को आदमी का दुश्मन बना दिया है। मैं उन संस्कारों में नहीं जिया हूँ।

—तभी तुम सब लोग हमें बहुत अच्छे लगे। हिमशैल के सारे निवासी तुम लोगों के व्यवहार और आचरण की प्रशंसा करते हैं।

—आपकी कृपा है, सम्राट ! तंदुल ने विनत भाव से कहा।

तभी किसी ने आकर प्रणाम करते हुए सम्राट को कोई सूचना दी। सम्राट ने तंदुल की ओर देखते हुए पूछा—कुछ समझे ?

—नहीं, सम्राट ! यहाँ की भाषा समझने में थोड़ा समय तो लगेगा ही।

—कान और मन खुले हों तो कोई भी भाषा अपना अर्थ स्वयं समझा देती है।

—आपने सच कहा, सम्राट ! इसीलिये थोड़ा अर्थ मैं भी समझ गया हूँ।

—अच्छा ! तो बताओ, क्या समझे ? सम्राट ने कौतूहलपूर्वक पूछा।

— यही कि बर्फ से ऊर्जा उत्पादन करने का प्रयोग सफल हो गया है।

— वाह, तदुल ! वाह, तुमने कमाल कर दिया । वास्तव में कमाल कर दिया तुमने । अपनापन अज्ञात रहस्यो को स्वतः उजागर कर देता है । तुम्हारे मन का ये अपनापन ही है जिससे तुम हमारी भाषा न जानते हुए भी उसका सही अर्थ समझ गये । सम्राट ने प्रशसा भरी दृष्टि से तदुल की ओर देखते हुये कहा ।

तंदुल ने हाथ जोड दिये ।

सम्राट बोले—चलो, पडोसी ग्रह से आज मधुपर्क आया है, उसका सेवन करेंगे ।

— मधुपर्क ?

— हाँ, कल्पवृक्ष के पराग से बनाया गया तरल, स्वादिष्ट किन्तु मादक पेय । सम्राट ने मुसकराते हुये कहा ।

और तंदुल उनके साथ हो लिया ।

□ □

मधुपर्क का पात्र एक ओर रखते हुए तदुल ने पूछा—सम्राट ! क्या हम ऊर्जा, ऊष्मा अथवा सूर्य-किरण किसी अन्य ग्रह से प्राप्त नहीं कर सकते ?

यह प्रश्न सुन सम्राट थोडा चौंके । अपना मधुपात्र एक ओर रखते हुये उन्होने ताली बजाई । सेवक के आने पर उन्होने कुछ आदेश दिया और वह चला गया ।

थोडी ही देर में दो व्यक्तियों ने वहाँ आकर सम्राट को नमन किया ?

— आइये, आइये । तदुल को तो आप जानते ही है । और, तदुल ! ये शैंटिन है और ये कुन्दू, इस ग्रह के वैज्ञानिक सूत्रधार, प्रयोग कक्ष के प्रभारी । सम्राट ने दोनो की ओर संकेत करते हुए कहा ।

तंदुल ने उठकर, उन दोनों को देखते हुए, हाथ जोड़ दिये।

जब वे सब बैठ गये तो सम्राट बोले—बात करते-करते तंदुल ने एक विचित्र प्रश्न पूछ लिया, इसीलिए आपको बुलाना पड़ा। सम्राट ने तंदुल की ओर देखते हुये दोनों वैज्ञानिकों से कहा।

वैज्ञानिकों की आँखें तंदुल पर जा टिकीं। तंदुल ने धीरे से कहा—वो तो वैसे ही मैंने सम्राट से पूछ लिया था कि क्या हम अपने ग्रह के लिए सूर्य-किरण या ऊष्मा किसी अन्य ग्रह से प्राप्त नहीं कर सकते ?

ये सुनकर दोनों वैज्ञानिक भी चौंके। वे एक-दूसरे से बात करने में उलझ गये।

सम्राट ने तंदुल से कहा—तुमने आज खोज के लिए ऐसा नया क्षेत्र दिया है जो कभी हमारे ध्यान में नहीं आया। पता नहीं, हमारे वैज्ञानिक ···· ····।

सम्राट की बात बीच में काटते हुये शैटिन बोल पड़ा—ऐसा होना संभव है, सम्राट ! किन्तु मित्रग्रहों के साथ ये विश्वासघात होगा।

— किन्तु क्या ऐसा होना संभव है ? सम्राट ने विस्मयपूर्वक पूछा।

इस बार कुन्दू बोला—हाँ, सम्राट ! किसी ग्रह पर प्रकाशित सूर्य और उस ग्रह के मध्य स्थायी व्यवधान स्थापित कर ऐसा किया जा सकता है क्योंकि सूर्य स्थिर ग्रह है, उसकी स्थिति अपरिवर्तित रहती है इसलिए किसी ग्रह को प्रकाशहीन करके उन रश्मियों को अपने ग्रह की ओर मोड़ा जा सकता है।

— यानी हिमशैल पर सूर्य की रोशनी आ सकती है ? सम्राट ने उठते हुए पूछा। उनकी आँखों में एक विचित्र आभा उभर आई थी। अनदेखे सपने जब आकार लेते हैं तो अनिर्वचनीय सुख देते हैं।

शैटिन ने कहा—हाँ, सम्राट ! ऐसा प्रयोग किया जा सकता है किन्तु जैसा कुन्दू ने कहा, यह तभी हो सकता है जब किसी अन्य ग्रह को हिमशैल जैसा कर दिया जाए—बर्फीला, उत्पादनहीन, बंजर। और ऐसा भी हो सकता है कि यह परिवर्तन वहाँ के निवासी सहन ही न कर पायें।

— तब, ऐसा प्रयोग करना ठीक नही रहेगा। सम्राट ने शून्य मे देखते हुए कहा—हम तो प्रकाशहीन युग में रहने के अभ्यस्त हो गये हैं, किसी दूसरे ग्रह को अंधकारमय करने से क्या लाभ ?

दूसरे के लिये आत्माहुति देने के सुख को व्यक्त करने के लिये अभी तक उपयुक्त शब्दों का जन्म नही हुआ है।

साँसों की शीतल ऊष्मा को चुप्पी की अनचाही ठंड ने आकर जमा-सा दिया था।

वहाँ सिर्फ धडकनों का शोर रह गया था, आवाज चुप हो गई थी किन्तु शैंटिन और कुन्दू की आँखों में जैसे कोई सूरज उतर आया था।

□ □

आज अमावस्या थी। पूर्ण सूर्य ग्रहण का पूर्व उद्‌घोषित दिन। बच्चों में उत्साह था दिन को रात बनते देखने का। युवकों का अनमनापन उनमें यथावत् विद्यमान था। वृद्ध ईश-चिन्तन मे रत थे। महिलाएँ तेल, घी को शुद्ध बनाये रखने के लिये उनमे दूर्वा के टुकडे डाल रही थी।

मंदिरों में की जा रही प्रार्थना के स्वर तीव्र हो उठे थे। घंटे-घड़ियाल पूरी शक्ति से बजाये जा रहे थे। हवन करते हुये 'स्वाहा' की ध्वनि वृक्षों पर बैठे पक्षियों को उड़ा रही थी। आदमी हमेशा भय की आशका को कोलाहल में छिपाने की चेष्टा करता है। इसलिये आज कोलाहल अपने पूरे उत्कर्ष पर था।

मध्याह्न के प्रखर सूर्य को ग्रहण लगना था किन्तु लोग सुबह से ही घड़ी देखने लगे थे। अनहोनी का भय आदमी को अनजाने ही तोड-तोड़ देता है। वही भय आज आदमी की धड़कनो को भडका रहा था।

धीरे-धीरे सूरज को अँधेरा छूने लगा। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं सक्रिय हो उठीं। कीर्तन की आवाज आसमान से टकरा लौटने लगी थी। गलियों का कोलाहल घरों में सिमट गया था। सडकों पर कुछ स्वयभू

युवक ही घूमते दिखाई देने लगे थे। हर युग में यौवन ने अनुभव का तिरस्कार किया है। अज्ञान ने सदैव ज्ञान को मौन किया है। अपने बुजुर्गों के मना करने पर भी वे युवक खुली आँखों से सूरज को अँधेरे की चादर ओढ़ते हुए देखना चाहते थे।

क्षणों के पाँव जम गये थे। दुःख का प्रहर युग के समान लगता है। आज समय बहुत धीमी गति मे बढ़ रहा था।

धीरे-धीरे आकाश पर तारे उभरने लगे थे। आग का गोला ठंडा होकर, कहीं छिपकर, सो गया था। उसका कहीं नामो-निशान नहीं था। अवगुणों के संरक्षण में रहने वाले गुण की कभी समाधि नहीं बनती। अँधेरा उजाले को निगल गया था।

सूरज क्या सोया समूची सृष्टि अनाथ हो गई। कोई इकाई कभी महत्त्वहीन नहीं होती। लोग फिर बेताबी से घड़ी देखने लगे थे। तीन घंटे का समय पहाड़ बन गया था जिस पर चढ़ा नहीं जा रहा था। धीरे-धीरे सूर्य की मोक्ष का समय पास आने लगा। मंदिरों के पत्थर बोलने लगे। धड़कनों में ध्वनि उतरने लगी। आँखों के दीपक में बाती उभरने लगी। और जैसे ही वह घड़ी आई, तुमुल ध्वनि के साथ, बजते हुए सारे वाद्य-यंत्र रुक गये। लोगों ने आकाश को देखा। कुछ तारे तो अदृश्य हो चले थे किन्तु अंधकार और गहरा गया था। आकाश पर दूर-दूर तक एक जानलेवा सन्नाटा पसर गया था। कहीं सूरज के अवशेष भी शेष नहीं थे।

अज्ञानी ज्ञान-प्रदर्शन का समय कभी हाथ से नहीं सरकने देते। ज्योतिष-शास्त्र पर बहस छिड़ गई।

एक ने कहा—पूर्ण सूर्य ग्रहण साढ़े तीन घण्टे से अधिक हो ही नहीं सकता।

दूसरा बोला—चार घण्टे तक चल सकता है।

तीसरे ने कहा—लेकिन अब तो चार घण्टे से ऊपर हो गये। ग्रहण मुक्ति के आसार ही नहीं दीखते।

—पंचांगकार इतनी गलती तो नहीं कर सकते। पहले ने कहा।

—वो गलती कर भी दें किन्तु चार घंटे से अधिक ग्रहण चल ही नहीं सकता। दूसरा बोला।

—इन आणविक, रासायनिक हथियारों की तो कोई माया नही ? तीसरे ने शंका उछाली।

वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ परेशान हो उठी थी। सूरज का तनिक अंश भी दिखाई देना शुरु नही हुआ था। समूची पृथ्वी अंधकारमय थी। आज तक के सूर्य ग्रहणों की ऐसी परम्परा कभी नही रही थी। किसी दिशा में ग्रहण पड़ता तो दूसरी दिशा प्रकाशित रहती। किसी देश में सूर्य ग्रस्त होता तो दूसरे देश में वह अपने प्रखर रूप मे दमकता। यह पहला सूर्य ग्रहण था जो सारे संसार में दिखाई दे रहा था। विज्ञान, विस्फारित नेत्रों से, प्रकृति के इस खेल को देख रहा था। सूर्य के अग्र एवं पार्श्व भाग एक साथ कैसे छिप सकते हैं ? सबके मन को यही एक प्रश्न मथ रहा था। पृथ्वी दो टुकड़ों में बटकर तो उसे ढाप नही सकती।

सूर्य को छिपे घण्टों बीत गये। घडी के हिसाब से रात आई लेकिन बिना कोई परिवर्तन लिये। चाँद को तो चमकना नही था, सितारे उगे नहीं। आकाश बंजर धरती-सा हो गया। समय के साथ ही सूरज के अस्त हो जाने और आकाश के नक्षत्रहीन हो उठने पर दिशाओं के ज्ञान धूमिल हो गये।

दिन के बाद सप्ताह बीतने लगे। छोटे देश भयभीत हो उठे। सामान्य देश चिन्तित और प्रमुख राष्ट्र आशंकित हो उठे। इस आशंका को व्यक्त करने मे पहल की रूस ने। राष्ट्र-प्रमुख ने अमरीकी प्रमुख से पूछा—क्या आपका देश सूर्य ग्रह पर कोई प्रयोग कर रहा है ?

अमरीकी प्रमुख ने कहा—हमारी प्रयोगशालाएँ तो सूर्य की ऊष्मा आपके देश की ओर जाती हुई बता रही हैं।

—कैसी बातें कर रहे हैं आप ? यहाँ तो सारी फसलें नष्ट हो चुकी है। यदि शीघ्र कोई उपचार नही हुआ तो पूरा देश तबाह हो जायेगा। रूसी प्रमुख ने घबराहट मे कहा।

—क्या आप सच कह रहे है ? अमरीकी प्रमुख ने पूछा। रूसी प्रमुख ने गभीर होते हुए कहा—यह सामूहिक दु.ख की घडी है। हमें मिल-बैठकर इसका समाधान खोजना चाहिए। एक-दूसरे पर अविश्वास करके नहीं।

—आप ठीक कह रहे हैं। अमरीकी प्रमुख ने आश्वस्त स्वर में कहा।

जापान, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी ने भी आपस में बात कर एक-दूसरे राष्ट्र की गतिविधि जानने की चेष्टा की।

उधर समुद्र का पानी जमने लगा था। पेड़ों के पत्ते सूखने लगे थे। कच्चे फल, पेड़ों पर लगे-लगे ही, सड़ने लगे थे। सारे संसार पर भयंकर ठंड की एक अदृश्य चादर बिछ गई थी। शैशव का साँस घुटने लगा था। यौवन की आँखें मुँदने लगी थीं। बुजुर्गों का दम टूटने लगा था। पशुधन के तन से मृत्युगंध उड़ने लगी थी।

चारों ओर भय और सिर्फ भय व्याप्त हो गया था।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की आपात बैठक बुलाई गई। सारे राष्ट्रों के प्रतिनिधि पहले तो जोर-जोर से बोलने लगे, फिर आपस में एक-दूसरे से बात करने लगे। अध्यक्ष के बार-बार निवेदन करने और आग्रह करने पर बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

सबसे पहले चीन का प्रतिनिधि बोला—क्या दुनिया का ऐसा कोई देश है जो इस तरह का खतरनाक प्रयोग कर पूरी दुनिया को मार डालना चाहता है?

फ्रांस के प्रतिनिधि ने कहा—हमें आपके बारे में अभी पूरी जानकारी नहीं मिली है।

फिर आरोपों-प्रत्यारोपों की एक अनसुनी और कोलाहली बैठक शुरू हो गई।

अध्यक्ष ने इस बार थोड़े उच्च स्वर में अनुरोध किया— सारे विश्व के सामने उत्पन्न हुई इतनी बड़ी आकस्मिक किन्तु मृत्युतुल्य समस्या का समाधान ढूँढ़ने के लिये हम लोग एकत्रित हुए हैं; एक-दूसरे पर आरोप लगाने अथवा संदेह व्यक्त करने के लिए नहीं।

रूस ने कहा—पहली बार ऐसी समस्या सारे विश्व के सामने आई है और यह निश्चित है कि हमारे संसार का कोई देश अपराधी नहीं है।

—बहुत सही कहा आपने। निश्चित रूप से यह कोई बाहरी हस्तक्षेप है। अमेरिका ने समर्थन करते हुए कहा।

—विज्ञान की सहायता से ही यह सब संभव हुआ प्रतीत होता है। चीन ने अपनी बात कही।

फ्रांस ने कहा—तो कुछ देशों के वैज्ञानिकों का एक दल बनाकर उनके सुपुर्द यह काम कर दिया जाये।

ब्रिटेन ने कहा—अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान, जर्मनी, चीन, भारत और मेरे देश के वैज्ञानिक मिलकर इस समस्या का समाधान खोज सकते हैं।

पाकिस्तान बोला—भारत इस बड़े मसले में क्या कर सकता है?

अमेरिका ने कहा—वहाँ के मस्तिष्क आज भी दुनिया को बहुत कुछ सिखा सकते हैं।

इसके बाद, कोई कुछ नहीं बोला।

भारा हिमशैल ग्रह जगमगा रहा था। प्रसन्नता वहाँ आकार लेकर घूम रही थी। सपनों का सामने आ जाना बहुत सुख देता है। जबसे उस ग्रह को सूर्य का प्रकाश मिलने लगा था, वहाँ चारों ओर जैसे खुशहाली बिखर गई थी। एक बड़े भाग की बर्फ को गलाकर, पूरे ग्रह का चक्कर लगाती हुई, गोलाकार में, एक नहर का निर्माण कर लिया गया था। उस स्थान पर खेती शुरू कर दी गई थी। चारों ओर पेड़ लगा दिये गये थे। फूलों की गंध से समूचा ग्रह महक-महक उठा था।

जब तंदुल सम्राट से मिलने गया तब वे गुलदस्ते में लगे फूलों को देख रहे थे। तंदुल पर नजर पड़ते ही वे बोले—तुम हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी उपलब्धि हो, तंदुल!

—कैसी बातें कर रहे हैं आप, सम्राट! तंदुल ने प्रणत होते हुए कहा।

—हम सच कह रहे है, तंदुल! आज तुम्हारे ही कारण हमारा यह ग्रह अपनी इस आकाश गंगा का सबसे समर्थ ग्रह बन सका है। हमने

इतनी सौर-ऊर्जा एकत्र कर ली है कि अब यदि एक दशाब्दी तक भी सूरज न चमके तो भी यहाँ की व्यवस्था नहीं गड़बड़ायेगी। यहाँ इसी प्रकार फल मिलते रहेंगे, फूल खिलते रहेंगे। बताओ, तुम्हारे इस उपकार को हम कैसे भूल सकते हैं ? सम्राट ने उसे बैठने का संकेत करते हुए कहा।

—उपकार को पूरी तरह भूल जाना हमारे संस्कार में है, सम्राट ! तंदुल ने बैठते हुए कहा।

—पृथ्वी ग्रह के संस्कारों में होगा, तुम्हारे में नहीं।

—हम लोग तो उस सभ्यता से सदा दूर रहे हैं, सम्राट !

—तुम ऐसे आचरण को सभ्यता कहते हो ? सभ्यता तो वह सभ्य आचरण है जो सबको सम्मोहित करे। सम्राट ने एक खिला हुआ फूल तंदुल को देते हुए कहा।

तंदुल फूल लेकर माथे पर लगाते हुए बोला—आपने देखा, सम्राट ! आज तक पृथ्वीवासी यह नहीं जान पाये कि उनके सूरज को क्या हुआ ?

—हाँ, ये सच है। हमारे सम्पर्क कक्ष-प्रमुख ने हमें बताया था कि ध्वी ग्रह के विभिन्न देश एक-दूसरे पर सूरज की चोरी का आरोप ाना चाहते हैं। यह सुनकर हमें तुम्हारी बात याद हो आई। हमारी समझ में पृथ्वी के स्थान पर उसका नाम शंका ग्रह होना चाहिये था। एक-दूसरे के प्रति अविश्वास स्नेह के बीज को कभी अंकुरित नहीं होने देता। सम्राट ने सहज रूप में कहा।

तभी सेवक आकर बोला—सम्पर्क कक्ष के प्रमुख आना चाहते हैं।

—उन्हें तुरन्त भेजो।

चेटिन के आते ही सम्राट मुसकराते हुये बोले—अभी तुम्हारी ही बात हो रही थी। ठीक वक्त पर आये।

तन्दुल चेटिन को पहचानता था। उसने उसे नमन किया। सम्राट का संकेत पा चेटिन बैठते हुये बोला—मैंने चर्चा में कोई व्यवधान तो नहीं डाला, सम्राट !

—कैसी बात करते हो, चेटिन ! तुम मेरे शरीर के अवयव हो। सम्राट ने धीमे स्वर में कहा।

चेटिन गद्गद् हो गया।

सम्राट ने थोड़ा रुककर पूछा—कहो, कैसे आना हुआ ?

चेटिन बोला—सम्राट ! पृथ्वी ग्रह के आठ देशों के प्रमुख वैज्ञानिक मिलकर सूर्य ग्रह की स्थिति का पता लगायेंगे। इस प्रकार पहली बार इन लोगों का मिल-बैठना शुभ संकेत नहीं है।

—क्या मतलब ? हम समझे नही। सम्राट ने चेटिन की आँखों में देखते हुये पूछा।

—सम्राट ! मेरे कहने का अर्थ यह है कि पृथ्वी ग्रह आशंका और अविश्वास का ग्रह रहा है। वहाँ फूट है, अलगाव है। इसलिए उस ग्रह की किसी भी प्राकृतिक सम्पदा का हरण या दोहन किया जा सकता है लेकिन अगर ये लोग मिल-बैठकर अपनी समस्याएं सुलझाने लग गये और यदि इनमें आपसी विश्वास पैदा हो गया तो यह पृथ्वी ग्रह पूरी आकाश-गंगा के लिए भारी पड़ेगा।

—ये बात तो तुम सही कह रहे हो, चेटिन ! सम्राट ने तंदुल की ओर देखते हुए कहा।

तंदुल बोला—सम्राट ! पृथ्वी ग्रह की यह परम्परा ही नही है। वहाँ भाई की आँखों में भाई चुभता है। आज सूर्यविहीन दशा भले ही उन्हें एक-दूसरे के निकट ले आई हो किन्तु उनमें विश्वास और प्यार तो पनप ही नहीं सकता। जिन आँखो में तोते का रग चढ़ गया हो उन्हें अपनेपन का रंग नहीं सुहाता।

—तब भी, चेटिन ! इस ओर विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। तुम अपने सम्पर्क कक्ष को आदेश दे दो कि वह निरन्तर पृथ्वी ग्रह के सम्पर्क में रहकर वहाँ की गतिविधियों को ध्यान से देखता रहे। सम्राट ने गंभीर स्वर में कहा।

चेटिन उन्हे प्रणाम कर चल दिया।

तंदुल ने फिर कहा—सम्राट ! इसमे इतना चिन्तित होने की आवश्यकता नही है। एक साथ बैठकर भी वे एक दूसरे से खुलकर बात नही कर सकते। दुराव पृथ्वी का प्रमुख गुण है। मन वहाँ कभी मुँह तक नहीं आया और जो मुँह पर रहा वह कभी मन तक नहीं उतरा।

—बड़ा ही तिलांजलि योग्य है तुम्हारा ग्रह, तंदुल ! लेकिन करवट लेते समय वक्त की कभी आहट नहीं होती। हो सकता है, यही घड़ी तुम्हारे ग्रह को विश्वास की डोर से बाँध दे। उनमें इंसानी प्यार का जज्बा जगा दे। वे अपने किये पर पछताकर गले मिल लें। सम्राट ने उठते हुए कहा।

तंदुल खड़े होते हुए बोला—अगर ऐसा हो गया, सम्राट ! तो फिर पूरी आकाश गंगा पर पृथ्वी ही राज करेगी।

और सम्राट को लगा—आदमी कहीं पहुँच जाए, किसी न किसी रूप में वह अपनी मिट्टी से जुड़ा रहता ही है।

□ □

आठों देश के कोई चालीस वैज्ञानिक जब पहली बार मिले तो सभी अपने पूर्वाग्रहों से ग्रस्त थे। कोई भी अपनी प्रगति की सीमा से किसी को परिचित कराना नहीं चाहता था। सब एक-दूसरे के गोपनीय हिस्सों पर प्रकाश डालने की तैयारी किये बैठे थे।

शिकारोव ने कहा—रूस ने सूरज की ओर तो कभी ध्यान दिया ही नहीं। उसके स्पेस इन्वेस्टीगेशन चार्ट में सैटर्न तो है, सूरज नहीं।

हेनरी बोला—अमेरिका तो स्पेस लेबोरेटरी की बात करता है। वह सोलर एनर्जी इकट्ठा तो करना चाहता है लेकिन सूरज को बंधक बनाना नहीं चाहता।

कर्णीकर ने कहा—क्षमा करें। आप लोग विज्ञान के क्षेत्र में क्या-क्या करना चाहते हैं, इस पर विस्तार से हम लोग बाद में चर्चा कर लेंगे। मूल प्रश्न है यह खोजना कि सूरज का क्या हुआ ?

—बिल्कुल ठीक ! इंडिया की बात एकदम सही है। हम लोग बेकार की बातों में वक्त जाया कर रहे हैं। जापान के वैज्ञानिक तोशिकू ने कहा।

वैज्ञानिक संगोष्ठी चुप हो गई। अहम् पर अंकुश किसी को नही सुहाता। थोड़ी देर वाद भारत ने ही पहल करते हुये कहा—यहाँ बैठकर चर्चा करने से कुछ हासिल होने का नहीं। अब सूरज तो चमकता नहीं इसलिये उसकी आग भी शांत है। क्यों न हम एक अंतरिक्षयान में उसकी कक्षा तक होकर आयें ?

सारे वैज्ञानिको को जैसे आगे बढने की एक दिशा मिल गई।

हेनरी बोला—वण्डरफुल ! ये एकदम सही सुझाव है।

शिकारोव ने कहा—इसके वाद ही आगे का कदम तय किया जा सकता है।

फ्रांस के सुझाव पर आठो देशों के एक-एक चुने हुये वैज्ञानिक को अमेरिका के अंतरिक्ष केन्द्र से सूर्य की कक्षा में भेजने की आम सहमति हो गई।

प्रस्ताव समझ-बूझ का था इसलिये पारित हो गया लेकिन सूरज की कक्षा तक आठ वैज्ञानिकों को भेजने का काम इतना सरल नही था। यान का निर्माण, आवश्यक उपकरणों का संग्रह, उपयुक्त मात्रा में ईंधन और ऑक्सीजन की व्यवस्था के साथ अंतरिक्ष यात्रियों को भी इस ऐतिहासिक यात्रा के लिये सक्षम बनाना समय साध्य भी था और श्रम साध्य भी किन्तु इसके अतिरिक्त कोई उपचार भी तो नही था। अतः आठों देश के सोलह वैज्ञानिक अंतरिक्ष केन्द्र के सहयोगियो के साथ यान बनाने के कार्य में, समर्पित मन से, जुट गये।

रात-दिन का अन्तर वैसे तो मिट ही गया था, इन वैज्ञानिकों ने उसका आभास तक नही होने दिया। पहली बार पृथ्वी ग्रह के आठ देशों के वैज्ञानिक साथ रहकर, एकजुट होकर, कोई वैज्ञानिक कार्य सम्पन्न कर रहे थे। आज वे आगे बढकर, अपने वैज्ञानिक ज्ञान का परिचय देकर, एक सफल वैज्ञानिक प्रयोग की प्रशस्त पृष्ठभूमि का निर्माण कर रहे थे।

उधर सारी पृथ्वी उजड़ने के कगार पर आ खड़ी हुई थी। न कही फसल थी, न पौधे थे, न फल थे, न फूल थे, न सागर थे, न नदियां थी। ऊर्जा के स्रोत समाप्त हो चले थे। ऐसी स्थिति मे संसार भर के अनाज के गोदाम एक जगह इकट्ठे कर दुनिया के हर हिस्से मे अनाज पहुँचाने का

काम किया जा रहा था। उसी के साथ दूध का पाउडर बाँटा जा रहा था। आज चारों ओर आँसू और पीड़ा का साम्राज्य था। इसलिये चारों ओर प्यार और अपनापन था। भारत पाकिस्तान के बच्चों को दूध बाँट रहा था। चीन तिब्बत को फलों के रस के डिब्बे भेज रहा था। कुवेत ईराक को अनाज पहुँचा रहा था। मिस्र इजरायल को दवा भेज रहा था। अमेरिका रूस में बिस्कुट बाँट रहा था। आज न कहीं कोई पासपोर्ट था, न वीसा था, न कोई आज्ञा थी और न किसी सीमा का उल्लंघन था।

नवनिर्मित यान का जब पूरी तरह निरीक्षण और परीक्षण कर लिया गया तो उन आठ वैज्ञानिकों को इसकी सूचना दे दी गई। उन्हें महीनों से कठिन परिस्थितियों में रखा जा रहा था जिससे अंतरिक्ष यात्रा का उन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। और वैसे भी यह अंतरिक्ष यात्रा सबसे बड़ी थी। सूर्य ग्रह की यात्रा करने का कभी सपना तक नहीं देखा गया था। आज उस अनदेखे सपने को धड़कन सौंपनी थी। असंभव को आकार सौंपना ही नई सृष्टि-रचना है। और ये वैज्ञानिक आज नई सृष्टि की रचना करने जा रहे थे।

और अन्ततः 'सोलर वन' के लिये उलटी गिनती शुरू हो गई। आग के सागर को पीछे धकेलता हुआ वह यान आग के गोले की खोज में निकल पड़ा।

□ □

चेटिन ने तंदुल के घर पर दस्तक देते हुये आवाज लगाई—अरे! अभी तक सो रहे हो क्या ?

तंदुल ने दरवाजा खोला तो सामने चेटिन को देख चौंकते हुए बोला—चेटिन ! तुम यहाँ ? सब खैर तो है ?

—सम्राट के पास जा रहा था, सोचा तुम्हें भी साथ ले चलूँ। चेटिन ने सपाट स्वर में कहा।

तंदुल आश्वस्त होता हुआ बोला—सम्राट से मिलना स्वयं एक सुख है। कुछ लोग ऐसे होते है जिन्हें देखते ही मन बरबस खिल उठता है।

जब चेटिन और तंदुल सम्राट के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा, वहाँ शंटिन और कुन्दू पहले से ही मौजूद थे।

सम्राट इन्हें देखते ही बोले—हम बड़ी बेसब्री से तुम्हारे आने का इन्तजार कर रहे थे, चेटिन ! कैसे हो, तंदुल ?

—आपकी कृपा है, सम्राट ! तदुल ने सिर झुकाते हुए कहा।

—हाँ, चेटिन ! तुमने हमें जो वाणी-संकेत भेजा था, उस संदर्भ में आगे क्या कहना है ? सम्राट ने सीधा प्रश्न पूछा।

चेटिन बोलता इससे पहले ही तंदुल पूछ बैठा—यह वाणी-संकेत क्या है, सम्राट !

—वाणी-संकेत ? सम्राट मुसकराते हुए बोले—तुम हमारा नाम लेकर जो बोलोगे, हम सुन लेंगे।

—ये·······ये कैसे हो सकता है, सम्राट !

—ईथर को सजीव बना देने से यह सभव है। यह जो शून्य है, सब विद्युतमय है। यदि इसे सचेष्ट और जीवन्त कर लिया जाये तो वह संदेशवाहिका का कार्य करने लगता है। फिर सम्राट ने चेटिन की ओर देखा।

—पृथ्वी ग्रह के आठ देशों के आठ वैज्ञानिक सूर्य ग्रह की यात्रा पर निकल पड़े हैं। चेटिन ने चिन्तित स्वर मे कहा।

सम्राट ने तंदुल की ओर देखा।

तंदुल बोला—सूर्य ग्रह की यात्रा और वह भी पृथ्वी के वैज्ञानिकों द्वारा ? मुझे तो संभव ही नहीं लगता।

—यह सम्पर्क कक्ष की सूचना है, तदुल ! सम्राट ने चेटिन की ओर देखते हुए कहा।

चेटिन ने कहा—हमारी सूचनाओं पर शका तुम्ही कर सकते हो, तंदुल ! शंकाओं में घिरे रहने वाले दर्पण पर भी सहज में विश्वास नहीं करते।

—नहीं, मेरा मतलब शंका करना नहीं था, चेटिन ! तंदुल ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा—मुझे पृथ्वी वालों की एकता पर संदेह है। आठ देशों के वैज्ञानिक मिलकर कोई खोज कर ही नहीं सकते। वे एक-दूसरे पर सदेह ही करते रह जायेंगे और कुछ नहीं कर पायेंगे।

—तंदुल ! पृथ्वी ग्रह के निवासी अपनी भूल का सुधार भी तो कर सकते हैं। आज तक जो नफरत की आग में जलते रहे, एक-दूसरे को धोखा देते रहे, गले भी तो मिल सकते हैं। सम्राट ने शून्य में देखते हुए कहा।

तंदुल बोला—आप पृथ्वी पर नई पृथ्वी की कल्पना कर रहे हैं, सम्राट ! जो कभी संभव नहीं।

—ये तो वक्त ही बतायेगा, तंदुल ! कभी-कभी कल्पना भी सपनों से मिलकर आकार ले लेती है। फिर सम्राट ने चेटिन की ओर मुड़ते हुए पूछा—क्या वे सूर्य ग्रह की कक्षा में पहुँच सकते हैं, चेटिन !

—एक सच्चा वैज्ञानिक कहाँ नहीं पहुँच सकता, सम्राट ! चेटिन ने तनिक गर्व से कहा।

—अगर पृथ्वी ग्रह के वैज्ञानिक सूर्य की कक्षा में पहुँच गये तो ? सम्राट ने एक प्रश्न उछाला।

—तो वहाँ से वापिस नहीं लौटेंगे। उत्तर दिया शैटिन ने।

—क्या मतलव ? सम्राट ने शैटिन की ओर देखते हुए पूछा।

उत्तर दिया मुसकराते हुए कुन्दू ने—सम्राट ! सूर्य की कक्षा में आज तक कोई नहीं पहुँचा है और पहुँचेगा भी नहीं।

—हम फिर नहीं समझे। सम्राट ने थोड़ी उलझन से कहा।

—समय आने पर आप सब समझ जायेंगे, सम्राट ! शैटिन ने धीरे से कहा।

तंदुल पहली बार परेशान हुआ। उसे लगा कि इस ग्रह के वैज्ञानिक पृथ्वी के वैज्ञानिकों के साथ कोई दुर्व्यवहार कर सकते हैं। उसे स्वयं आत्मग्लानि होने लगी। आखिर पृथ्वी को वीरान बनाने की दिशा में पहल तो उसी ने की थी।

तंदुल को कहीं खोया देख सम्राट बोले—चलो, तंदुल ! मधुपर्क का सेवन हो जाए। तुम थोड़े चिन्तित से लग रहे हो। अरे, सब ठीक हो जायेगा।

तंदुल ने सम्हलते हुए कहा—नहीं, सम्राट ! ऐसी कोई बात नहीं है।

सम्राट ने उसके कंधे पर हाथ रख मुसकराते हुए कहा—जब आदमी अपराध बोध से ग्रस्त होता है तो उसका सारा शरीर स्वयं साक्षी बन जाता है।

तंदुल अनसमझे, अनबोले सम्राट के साथ चल दिया।

□ □

आठ देशों के निष्णात वैज्ञानिकों को लिये अंतरिक्षयान 'सोलर वन' अपने निर्धारित मार्ग पर बढता जा रहा था। प्रत्येक ग्रह की कक्षा मे प्रवेश करने के लिए वे रॉकेट दागते और यान का एक हिस्सा दहकता हुआ अलग हो जाता।

अनसोये, अनखाये चलते हुए अनवरत यात्रा का यह पाँचवाँ दिन था। आज किसी भी समय उस यान को सूर्य की कक्षा मे प्रविष्ट होने के लिए अन्तिम बार दागना था जिससे यान का अग्र भाग, सूर्य कक्षा में पहुँच, सूर्य ग्रह का चक्कर लगाना शुरू करदे।

वैज्ञानिक सूक्ष्म यन्त्र से अन्तरिक्ष को देख रहे थे तभी जापान के वैज्ञानिक ने संकेत करते हुए ऊँचे स्वर में कहा—वो सामने आसमान के ऊपर एक अलग रंग की चादर-सी क्या है ?

सारे वैज्ञानिक संकेत की दिशा में देखने लगे।

भारत के वैज्ञानिक ने पलकें झपकाते हुए कहा—सूर्य को छिपाने के लिए यह कृत्रिम आवरण चारों ओर लपेटा गया है और ऊपर की ओर से

सूर्य के प्रकाश को एकीभूत कर कहीं ले जाया जा रहा है क्योंकि सूर्य का वह ऊर्ध्वमुखी प्रकाश इसी बात का संकेत करता है।

यह सारी जानकारी पलक झपकते, अन्य वैज्ञानिकों ने नियंत्रण केन्द्र तक पहुँचा दी।

अंतिम भाग अलग होते ही यान तेजी से सूर्य-कक्षा में प्रवेश कर गया। सूर्य के सामने लगाया कृत्रिम आवरण अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा था। सारे वैज्ञानिक असमंजस में थे कि आग को किस धातु में इस प्रकार लपेटा जा सकता है जिससे उस पर कोई प्रभाव न पड़े।

अंतरिक्षयान ने सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाकर अत्यन्त उपयोगी चित्र नियंत्रण कक्ष को, पृथ्वी पर, भेज दिये थे। वैज्ञानिक विभिन्न कोणों से उस आवरण को देख रहे थे कि सहसा सूरज की तेज रोशनी ने उन्हें चौंका दिया। सूर्य-कक्षा अकस्मात् आग उगलने लगी। यान को वापिस मोड़ने की स्थिति भी नहीं रही थी। एक क्षण में सूरज की आग ने उस यान को अपनी लपटों में छिपा लिया।

सारी पृथ्वी अचानक सूरज को आसमान पर देख खुशी से नाच उठी। अरसे बाद आज सूर्य के दर्शन हुए थे। जीवन के चेहरे पर खुशी की रेखा खिंच गई। अप्रत्याशित सुख छिपाये नहीं छिपता है। मन में उमंग और आँखों में रंग जाग उठा था कि अकस्मात सूरज डूब गया। वह जहाँ उगा था, वहीं छिप गया।

सारी पृथ्वी पर अँधेरे की काली चादर फिर बिछ गई। प्रसन्नता तो संचारी भाव की तरह होती है, आँखों का स्थाई भाव तो करुणा ही है।

विश्व के वैज्ञानिक बोझिल हो उठे। अपने-अपने देश के प्रवीण वैज्ञानिकों का अग्नि-स्नान उन्हें भीतर तक तोड़ गया। वैसे नितान्त महत्त्वपूर्ण जानकारी वे दे गये थे किन्तु उनका पृथ्वी के लिए किया ये बलिदान दिलों को और मजबूती के साथ बाँध गया। पृथ्वी पर यह स्पष्ट हो गया था कि किसी विज्ञानसिद्ध ग्रह का यह करिश्मा है जो सौर-ऊर्जा का इस प्रकार एकाँगी उपयोग कर रहा है। अन्तिम संकेत से भी यही निष्कर्ष निकलता था कि किसी अस्थाई वैज्ञानिक आवरण से सूर्य को ढक दिया गया है। आवरण के चित्रों का गहन अध्ययन प्रारम्भ हो गया था।

वैज्ञानिकों की इस यात्रा को अत्यन्त गुप्त रखा गया था ; अतः उस यान के साथ हुई दुर्घटना का विवरण भी रोक लिया गया क्योंकि इस सूचना से सारे संसार में भय व्याप्त हो सकता था।

सूर्य के क्षण भर निकलने के बाद लोप हो जाने पर फिर चर्चाओं के दौर शुरू हो गये थे।

—ये जरूर उस दुष्ट राहू का करतब है। दान-पुण्य नहीं होगा तो ये दिन तो देखना ही पड़ेगा। सफेद दाढ़ी के पीछे ओंठो ने हिलते हुए कहा।

—हमें तो यह राक्षसी माया प्रतीत होती है। किसी साधु ने अपने विचार रखे।

—संसार में इस प्रकार अँधेरा व्याप्त होना प्रलय का संकेत है। किसी कर्मकाण्डी ने कहा।

—ये पापों का फल है। किसी निष्पाप ने कहा।

वैज्ञानिकों के आगे बढ़ने की दिशा सहसा सहम गई थी। यान के जल जाने से जो सूचनायें यान के यत्रों ने एकत्र की थी, वे सब नष्ट हो गई थीं।

यान द्वारा प्रेषित चित्रों का अध्ययन कर रहे दल में बैठे चीन के वैज्ञानिक ने कहा—सूर्य-कक्षा में यान के पहुँचते ही सूर्य का दिखाई देना और यान का जल जाना यह सिद्ध करता है कि हमारी प्रत्येक गतिविधि पर दृष्टि है।

—बिल्कुल ठीक। ब्रिटेन के विज्ञानवेत्ता ने कहा।

—हमें अब अपना हर काम बहुत सावधानी से करना होगा। जर्मनी के वैज्ञानिक ने कहा।

तभी दो चित्रों को गौर से देखते हुए भारत का वैज्ञानिक बोला—मुझे लगता है, सूर्य को हवा की परतों से ढका गया है।

—क्या ? क्या कहा ? सारे वैज्ञानिक एकदम चौंककर बोले।

सूरज पर पड़े उस आवरण के चित्र को दिखाते हुए भारतीय वैज्ञानिक ने कहा—एब्सट्रेक्ट कनवर्शन इनटू मैटर का सिद्धान्त अपनाकर

ध्वनि तरंगों से हवा की स्थूल परतें बनाकर यह आवरण बनाया गया है। इसलिये यह सूरज के कितना ही नजदीक रहे, न जलेगा, न पिघलेगा।

सारे वैज्ञानिक विस्मय से उस आवरण को देखने लगे।

अमेरिका के वैज्ञानिक ने कहा--इसे ऊर्जा और हवा के सम्मिलित घोल से जलाया जा सकता है।

—लेकिन वहाँ तक पहुँचना भी तो संभव नहीं। रूस के वैज्ञानिक ने उदास शब्दों को जोड़ते हुए कहा।

जर्मनी का वैज्ञानिक बोला--आगे बढ़ने के लिए चन्द्रग्रह पर पड़ाव डाला जा सकता है।

—वहाँ साधनों का नितान्त अभाव रहेगा। फ्रांस के वैज्ञानिक ने कहा।

—मुझे लगता है, जापान के वैज्ञानिक ने कहा कि—यह सौर ऊर्जा का ही स्थूल रूप है जिसे आवरण बना कर सूरज को ढका गया है।

—सौर ऊर्जा भी हो सकती है। भारत के वैज्ञानिक ने कहा—किन इसका तोड़ भी सौर ऊर्जा ही है।

ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने सिर उठाते हुए पहली बार कहा--बस, इसी प्रश्न को लेकर हमें आगे बढ़ना है कि सौर-ऊर्जा कहाँ से आये ?

—सूर्यविहीन पृथ्वी पर सौर ऊर्जा ? चीन के वैज्ञानिक ने सहज प्रश्न किया।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—न सही सौर ऊर्जा, कोई समकक्ष ऊर्जा तो हो सकती है।

—समकक्ष ऊर्जा ? फ्रांस के वैज्ञानिक ने अँधेरे आकाश की ओर देखते हुए प्रश्न उछाला।

रूस के वैज्ञानिक ने खड़े होते हुए कहा—मुझे तो इसका कोई उपचार दिखाई नहीं दे रहा है। मेरी दृष्टि में उस ग्रह को खोजना होगा जिसने यह सब कुछ किया है।

—उसे खोजने से क्या होगा ? चीन के वैज्ञानिक ने पूछा।

—या तो उसे नष्ट करना होगा, या समझाना होगा। उत्तर दिया भारत के वैज्ञानिक ने।

—ये तो ठीक है। कहते हुए अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा—क्या उसको खोज पाना संभव है ?

—इस दिशा में सोचना तो पड़ेगा ही। ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने कहा।

जापान के वैज्ञानिक ने भी खड़े होते हुए कहा—केवल सोचने से तो कुछ होना नहीं।

जर्मन का वैज्ञानिक बोला—हम अंतरिक्ष में स्थापित प्रयोगशाला की सहायता से इस दिशा मे आगे बढ़ सकते हैं।

—बिल्कुल ठीक। यही उत्तम उपाय है। फ्रांस के वैज्ञानिक ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

—रूस की प्रयोगशाला अंतरिक्ष में स्थापित है ही, उसका प्रयोग किया जा सकता है। अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा।

—बिल्कुल किया जा सकता है। रूसी वैज्ञानिक ने समर्थन करते हुए कहा।

और पृथ्वी के वैज्ञानिको की वह गोष्ठी भविष्य की कार्य-योजना निर्धारित कर समाप्त हो गई।



तंदुल को रात भर नींद नही आई। उसने पृथ्वी के अतरिक्षयान को जलते हुये देखा था और देखा था उसमें पृथ्वी के आठ श्रेष्ठ वैज्ञानिकों को मुसकराते हुए। मृत्यु को सामने देख उनकी आँखो में कैसी स्वर्गिक आभा उतर आई थी। वे अपनी पृथ्वी के लिए प्राणोत्सर्ग हेतु पूर्णरूपेण तत्पर थे। मातृ-भूमि के लिए प्राणों की बलि चढाने के विरल अवसर सौभाग्य से ही मिलते हैं।

तंदुल को लगा, उन सबकी मृत्यु का अपराध उसके सिर पर है। वह कोसने लगा उस क्षण को जब वह इस ग्रह पर आया और उसने पृथ्वी की वास्तविकता से सम्राट का परिचय कराया। विभीषण किसी भी व्यक्ति के वंश-वृक्ष के आदि पुरुष हो सकते हैं। उसे लगा, यदि पृथ्वी सदा के लिए सूर्यविहीन हो गई तो वहाँ सब कुछ नष्ट हो जाएगा। उसे सहसा स्मृति हो आई उस क्षण की जब वह इस ग्रह पर आया था। कितना श्रीहीन, हरीतिमाहीन, गंधहीन और संततिहीन था यह ग्रह ; जहाँ केवल विज्ञान था और वैज्ञानिक उपलब्धि थी। वहाँ न सम्बन्ध थे, न परिवार था। स्वर्ण भवन का ऐश्वर्य भी मन के निकुंज में सपने नहीं उगा सकता।

तन्दुल बेचैन हो उठा। वह कैसे सहायता करे अपनी पृथ्वी की ? जितना वह अपकार कर चुका था, उसका प्रतिकार कैसे करे ! उसका मन खुरच-खुरच गया। पृथ्वी जैसी भी थी, थी तो उसकी अपनी। यहाँ कितनी ही सुविधा, सम्मान उसे मिले, वह उसका तो नहीं हो सकता। अपनों की उपेक्षा परायों के प्रणाम से श्रेष्ठ होती है।

भोर होते-होते उसकी आँख लग गई। बहुत देर से कोई द्वार पर दस्तक दे रहा था। तन्दुल उठना चाहकर भी नहीं उठ पा रहा था। उसका सारा शरीर दर्द कर रहा था। मन मारकर वह उठा, द्वार खोला। सामने खड़े सम्राट के सेवक ने प्रणाम कर अपनी भाषा में कहा कि सम्राट ने उसे बुलाया है।

तंदुल जब तैयार होकर सम्राट-कक्ष में पहुँचा तो वहाँ पहले से ही अनेक लोग बैठे हुए थे। कुछ को वह पहचानता भी था। उसने सम्राट को नमन किया और आदेश पाकर बैठ गया।

सम्राट बोले—हम बहुत देर से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे, तंदुल !

—जी, सम्राट ! अचानक अस्वस्थ हो जाने से शीघ्र तैयार नहीं हो सका।

—भक्ति अगर बंट जाये तो भक्त भी टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। सम्राट ने मुसकराते हुए कहा।

—मैं समझा नहीं, सम्राट ! तंदुल ने आँखें झुकाते हुए कहा।

—तुम्हारा हृदय निष्कलंक है इसलिए तुम्हारी आंख झुक गई। कुटिल व्यक्ति स्वयं तो झुक जाता है, उसकी आँखें नहीं झुकतीं। खैर, छोड़ों इन बातों को। सम्राट ने गम्भीर होते हुए कहा—प्रयोग-कक्ष, सम्पर्क-कक्ष, संकेत-कक्ष, शोध-कक्ष और ऐश्वर्य-कक्ष के ये प्रमुख पृथ्वी-ग्रह के सम्भावित कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए यहाँ एकत्र हैं। तुम पृथ्वी की प्रकृति से परिचित हो। क्या तुम बता सकते हो अब पृथ्वी-ग्रह के निवासी क्या सोच रहे होंगे ?

—सम्राट ! मैं क्या निवेदन करूँ। जिस पृथ्वी से मैं आया था, वह पृथ्वी शायद पलट रही है। अब मैं कुछ भी कह पाने की स्थिति में नही हूँ। तंदुल ने विनत भाव से कहा।

सम्राट बोले—तंदुल ! हम यह चाहते हैं कि शोध-कक्ष प्रभारी कुमारी केरिन के साथ तुम पृथ्वी-ग्रह की यात्रा पर जाओ और वहाँ आवश्यक जानकारी एकत्र करने में केरिन की सहायता करो।

तदुल को लगा, ईश्वर ने उसकी सुनली। निश्छल मन की कामना निश्चित रूप से आकार लेती है, उसने सिर झुकाते हुए कहा—जैसी आज्ञा, सम्राट !

सम्राट ने केरिन की ओर देखते हुए कहा—तो फिर तुम तंदुल को लेकर सुबह निकल जाओ और ऐश्वर्य-कक्ष से स्वरहीन, अदृश्य विमान ही लेकर जाना जिससे तुम्हारी यात्रा विश्वस्त होने के साथ गोपनीय भी रहे।

—जो आज्ञा ! कहकर केरिन और तदुल दोनो ही सम्राट से विदा लेकर सीधे प्रयोग-कक्ष में जा पहुँचे। केरिन ने यात्रा के लिए आवश्यक उपकरणों की सूची कक्ष-अनुरक्षक को दी। तदुल ने देखा, वहाँ असंख्य अत्याधुनिक उपकरण विभिन्न प्रकार के स्वर उत्पन्न कर रहे थे।

तभी केरिन ने कहा—तदुल ! यह वाणी-सकेत का सचालक तुम अपने पास रखलो। यदि हम पृथ्वी पर अलग-अलग होकर भी काम करेंगे तो जैसे ही इस सकेत-संचालक का यह काला बटन दबाकर बोलोगे, मैं कही भी रहकर तुम्हें सुन सकूँगी। बस, इतना ध्यान रखना कि पीला बटन दबाकर कुछ न बोलना क्योंकि तब वाणी शून्य में फैल जायेगी और उसे कोई भी व्यक्ति ध्वनि-संकलन यंत्र की सहायता से सुन लेगा।

तंदुल ने वह छोटा सा संकेत-संचालक लेकर अपने पास रख लिया। उसकी भावहीन आँखों में पहली बार चमक उभरी।

तभी प्रयोग-कक्ष में सम्राट की आवाज सुनाई दी—केरिन ! तंदुल को संकेत संचालक देने की आवश्यकता नहीं है। वह पृथ्वी-ग्रह पर तुम्हारा मार्गदर्शक है इसलिए तुम्हें साथ रहकर ही कार्य करना है।

केरिन ने तंदुल से संकेत-संचालक वापिस ले लिया। तंदुल को लगा कि यहाँ मन के भाव भी भाषा की भाँति पढ़ लिये जाते हैं। उसकी आँखों की चमक निराशा के अंधेरों में खो गई।

जब केरिन के साथ तंदुल उस गेंदनुमा यान में बैठा तब उसने पहली बार केरिन को इतनी निकटता से देखा। केरिन क्या थी, बर्फ में आग थी। फूल कब, कहाँ खिल जाये, कोई नहीं जानता।

वह स्वरहीन, अदृश्य यान ऐसा था जैसे किसी घर का गोल कमरा। वह किरण-गति से जा रहा था किन्तु कहीं कोई हलचल नहीं थी। यान में चारों ओर बत्तियाँ जल-बुझ रही थीं। अचानक यान के अन्दर लगे दृश्य-पटल को देखते हुए केरिन बोली—लो, तंदुल ! तुम्हारा पृथ्वी-ग्रह आ गया।

सामने विशाल सागर लहरा रहा था। तंदुल यह नहीं जान पाया कि वे पृथ्वी के किस क्षेत्र में उतरे हैं।

केरिन ने यान का द्वार खोल कर उतरते हुए कहा—तंदुल ! अपने ग्रह को देखलो। अब बताओ अपना काम कैसे और कहाँ से शुरू करना है ?

तंदुल ने इधर-उधर नजर दौड़ा कर पूछा – लेकिन, केरिन ! हम उतरे कहाँ हैं ?

—यह तुम्हारा ग्रह है, तुम मुझे बताओगे या मुझसे पूछोगे ? केरिन ने विस्मय से कहा।

तंदुल बोला—केरिन ! मेरी विवशता यह है कि मैं कभी किसी नागरिक सभ्यता से जुड़ा नहीं। न मैं कभी सागर के किनारे आया, न किसी नगर में। मुझे तो आदमियों से चिढ़ रही है इसलिए मैं यह बता ही नहीं सकता कि इस समय हम पृथ्वी-ग्रह पर कहाँ हैं ?

—फिर तुम्हारे साथ आने से क्या फायदा ? तुम्हें सम्राट को साफ-साफ बता देना चाहिए था । अब मैं तुम्हें साथ-साथ लिए कहाँ-कहाँ जाऊँगी । ज्ञानहीन व्यक्ति का साथ, बनते हुए काम को बिगाड़ देता है । कार्य की सिद्धि, संकल्प और चेष्टा से, संभव होती है । चेष्टाहीन संकल्प कभी पूर्ण नहीं होता । इसलिए, अब तंदुल ! तुम्हारे लिए यही श्रेयस्कर है कि तुम इस यान में बैठे मेरे लौटने की प्रतीक्षा करो ।

—तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा मैं जीवन भर कर सकता हूँ, केरिन ! अनजाने में तदुल कह गया और चौंक कर केरिन ने तदुल को देखा । उसके गाल पहली बार गुलाबी हुए । गालों पर गुलाब, मन की कली खिलने के बाद ही खिलता है ।

□ □

अंतरिक्ष स्थित प्रयोगशाला में आठ देशो के जिन वैज्ञानिको का इस बार चयन हुआ उसमें जापान की नितिकाशा और फ्रांस की स्टेनले भी थी । दोनों युवा वैज्ञानिकों की खोज भी अतरिक्ष के अज्ञात ग्रहों से ही सम्बन्धित थी ।

जब पृथ्वी के इन वैज्ञानिकों का दल अन्तरिक्ष की प्रयोगशाला मे पहुँचा तो वहाँ पूर्ववत् कार्यरत रूसी वैज्ञानिकों ने उनका हार्दिक स्वागत किया । पृथ्वी के वैज्ञानिकों को तीन साथियों का और सहयोग प्राप्त हो गया था । अब वे ग्यारह हो गये थे ।

पृथ्वी मे पहुँचे वैज्ञानिक थोड़ा विश्राम कर तरो-ताजा होना चाहते थे तभी प्रयोगशाला प्रभारी ने चीखते हुए कहा—कोई अदृश्य वस्तु पृथ्वी की ओर अत्यन्त तीव्र गति से गई है । मेरे संकेत-पट पर प्रकाश बिन्दु उभरते ही तिरोहित हो गया । इसका अर्थ यह है कि वह निश्चित ही अत्यन्त शक्तिशाली और प्रकाशगति से चलने वाला यान है ।

—यान और इतना गतिशील और अदृश्य ? अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा ।

तभी भारत के वैज्ञानिक ने कहा—जहाँ तक मैं समझता हूँ यह यान उसी ग्रह का हो सकता है जिसने पृथ्वी के सूरज को चुराया है।

सूरज की चोरी की बात सुन सभी वैज्ञानिक इस विषम स्थिति में भी मुसकरा उठे।

नितिकाशा बोली—बहुत ही सही शब्द का प्रयोग किया है हमारे दोस्त ने। यह वास्तव में चोरी है। उसने सरे आम पृथ्वी के सूरज को चुरा लिया है।

—ये तो ठीक है, लेकिन उस यान का क्या किया जाये जो पृथ्वी को गया है? फ्रांस के वैज्ञानिक ने बेताबी से पूछा।

चीन के वैज्ञानिक ने कहा—मेरी समझ में एक बात आई है। हम सबको एक साथ यहाँ नहीं आना चाहिये था। जिस ग्रह ने हमारे सूरज को चुरा लिया, जिसने हमारे वैज्ञानिकों को जला दिया, हमारे अंतरिक्षयान को स्वाहा कर दिया, वह निश्चित रूप से पृथ्वी पर भी अपना खोजबीन अभियान चलायेगा।

यह बात सुन सभी वैज्ञानिक सोच में डूब गये।

ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने कहा—ये बात है तो विचारणीय।

—इसमें विचार क्या करना है? हममें से चार लोग वापिस पृथ्वी पर चले जाते हैं। जर्मनी के वैज्ञानिक ने समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा।

रूसी वैज्ञानिक ने कहा—मेरी समझ में जो यहाँ आ गये हैं, वे वैज्ञानिक सब यहीं रहें। उनके वापिस लौटने में कोई सार नहीं है। हाँ, इतना अवश्य किया जाना चाहिये कि यह सूचना हम पृथ्वी पर अपने नियंत्रण केन्द्र को दे दें।

—और यह भी निवेदन कर दिया जाये कि वहाँ पृथक से कुछ वैज्ञानिकों एवं गुप्तचरों को पृथ्वी पर पहुँचे उस यान के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का काम सौंप दिया जाये। अमेरिकी वैज्ञानिक ने प्रस्ताव को पूरा करते हुए कहा।

—ये प्रस्ताव बहुत ही श्रेष्ठ है। फ्रांस की महिला वैज्ञानिक ने किसी यंत्र पर काम करते हुये कहा।

जर्मन वैज्ञानिक ने प्रयोगशाला प्रभारी को पृथ्वी नियंत्रण केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर यह जानकारी देने का आग्रह किया।

फिर सब वैज्ञानिक एक साथ बोल पड़े—जब आठ वैज्ञानिक पहले जल सकते हैं, तो हम आठ भी एक साथ ही मरेंगे।

इस पर प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने कहा—माफ करें, हम आठ नहीं ग्यारह हैं और हम मरेंगे नहीं, एक साथ जियेंगे।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—तुम सबकी दुआ ईश्वर कबूल करें। यकीनन हम मरेंगे नहीं। हम सब मिलकर पृथ्वी के उस दुश्मन को मार गिरायेंगे।

और अमेरिकी वैज्ञानिक की खुली हुई दोनों हथेलियों पर बीस हाथ और इकट्ठे हो गये।

दुरावहीन प्यार और सार्थक सहयोग पहाड़ को राई बना सकते हैं।

तभी प्रयोगशाला में आवाज गूँजी—स्पेस लेबोरेटरी ? स्पेस लेबोरेटरी ?

—हाँ, बोलिये। यह अंतरिक्ष प्रयोगशाला है।

—हम पृथ्वी के नियन्त्रण केन्द्र से बोल रहे हैं।

भारत के वैज्ञानिक ने कहा—मैसेज नोट कीजिए।

—बोलिये।

—किसी अज्ञात ग्रह का अदृश्य यान अत्यन्त तीव्र गति से पृथ्वी की ओर गया है।

—अदृश्य यान ?

—हाँ, और हमारी राय में यह उसी ग्रह का यान है जिसने हमारा सूरज चुराया है।

—सूरज चुराया है।

—हाँ, हम सब वैज्ञानिक इसे चोरी ही मानते हैं।

—ठीक है, हमें क्या करना है ?

—आप पूरी पृथ्वी पर उस यान की तलाश करायें और आवश्यक जानकारी एकत्र करें।

—इट विल वी डन। ये हो जायेगा। आप निश्चिन्त रहें। ओवर।

और वातों का सिलसिला टूट गया।

□ □

केरिन घूमते-घूमते थक गई। अंधकार में डूवी पृथ्वी पर उसे कोई राह नजर नहीं आई। सागर के किनारे-किनारे वह वहुत दूर तक इस आशा में चली गई कि शायद कोई वस्ती मिले लेकिन उसे निराशा ही हाथ लगी। उसके पास समय-सूचिका भी उसके अपने ही ग्रह की थी इसलिए पृथ्वी का समय ज्ञात कर पाना भी सम्भव नहीं था।

वह जव वापिस अपने यान पर लौटी तव तंदुल सो रहा था। बहुत खटखटाने और आवाज देने के वाद तंदुल ने यान का दरवाजा खोला। केरिन तंदुल का हाथ पकड़ कर यान पर चढ़ी और एकदम निढाल हो, कुर्सी पर पसर गई।

तंदुल उठकर एक गिलास पानी लाया और उसे पकड़ा दिया। कुछ सूखे फल भी उसको दिये। पानी पीकर केरिन थोड़ी स्वस्थ हुई। वह वोली—तंदुल ! अपनी पृथ्वी-यात्रा तो निरर्थक ही रही। यहाँ तो दूर-दूर तक कोई वस्ती नहीं है। इस अँधेरे ग्रह पर हम कुछ भी मालूम नहीं कर सकते।

सूखे फल का एक टुकड़ा मुँह में डाल वह वोली—सम्राट को सूचना दे देते हैं फिर देखें वो क्या आज्ञा देते हैं।

केरिन ने जैसे ही संचार-सम्वन्ध स्थापित किया उसे सम्राट की आवाज सुनाई दी। केरिन ने अपनी यात्रा का पूरा वृत्तान्त उन्हें सुना दिया।

सम्राट ने यह विवरण सुन तंदुल से वात कराने के लिए कहा।

तंदुल की आवाज सुनते ही जरा तल्ख लहजे में सम्राट ने पूछा—तुम्हारे पृथ्वी ग्रह पर जाने से क्या फायदा हुआ, तंदुल ?

तंदुल ने धीरे से कहा—मैंने अपनी विवशता केरिन को समझा दी है, सम्राट ! और वैसे भी अंधेरे की चादर ओढ़े, खामोशी की नींद में सो रहे, इस पृथ्वी ग्रह पर रह कर कोई जानकारी प्राप्त कर पाना भी अब सम्भव प्रतीत नहीं होता। फिर भी अगर आप आज्ञा दें तो कुछ प्रयत्न किया जा सकता है।

—क्या प्रयत्न करोगे ?

—यान को पृथ्वी पर नीचे उड़ायेंगे और जहाँ कोई प्रकाश दिखा, वहीं उतर जायेंगे।

—सुझाव तो ठीक है। सम्राट ने कहा—लेकिन इसमें ध्वनि-संकेत एकत्र किये जाने का खतरा है। मेरे विचार से तुम लोग वापिस आ जाओ। यहीं मिल-बैठ-विचारकर अगले कदम के बारे में कोई निर्णय लेंगे।

—जैसी आपकी आज्ञा, सम्राट !

सम्राट और तंदुल की बात तो समाप्त हो गई किन्तु अंतरिक्ष प्रयोगशाला मुखर हो गई।

स्टेनले ने हैडफोन नीचे रखते हुए कहा—अब बात कुछ समझ में आई।

उसने पूरा विवरण अपने साथियों को सुनाते हुए कहा—उस अज्ञात ग्रह के अज्ञात यान में कोई पृथ्वी की भाषा बोलने वाला भी है। इसका मतलब पृथ्वी का कोई आदमी भी उस ग्रह के सम्पर्क में है।

यह सुन सभी विस्मय से एक-दूसरे को देखने लगे।

—बिलकुल ठीक निष्कर्ष है तुम्हारा, मिस्टर स्टेनले। अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा।

ब्रिटेन का वैज्ञानिक बोला—यू आर एब्सोल्यूटली करैक्ट। तुमने बिलकुल ठीक कहा।

—उसका अन्दाजा तो एकदम सही है लेकिन अब हम लोगों को करना क्या है ? चीनी वैज्ञानिक ने प्रयोगशाला की छत देखते हुए पूछा।

रूसी वैज्ञानिक बोला—वो यान वापिस लौटने को है। वापिस लौटते समय वह इतना सावधान नहीं होगा। हमें अपना खोजी यान तैयार करके उसके पीछे चल देना चाहिये।

—ये बात हुई ना। जर्मन वैज्ञानिक ने रूसी वैज्ञानिक की पीठ पर हाथ मारते हुए कहा।

भारतीय वैज्ञानिक खड़े होते हुए बोला—अपने संकेत-सूचक पर सम्हल कर बैठ जाओ। मैं और नितिकाशा खोजी यान में जा रहे हैं।

यह सुन सारे वैज्ञानिक ओठों ही ओठों में मुसकराके रह गये। किसी ने कुछ नहीं कहा। इस पर अजीब सी धड़कन लिए नितिकाशा उठी और भारतीय वैज्ञानिक के साथ खोजी यान में जाकर बैठ गई।

जैसे ही अन्दर से स्टार्ट की आवाज आई, खोजी यान अंतरिक्ष में उड़ चला।

अदृश्य यान की गति अब उतनी तीव्र नहीं थी। उसके जाने से उभरी ध्वनि तरंगों का पीछा करता हुआ खोजी यान चल रहा था क्योंकि वह यान तो स्वरहीन और अदृश्य था।

नितिकाशा हर तरह, दूरबीन से, उस यान को देखने की चेष्टा कर रही थी किन्तु उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। भारतीय वैज्ञानिक स्क्रीन पर निगाहें जमाये अपने यान को बराबर ऊपर उठाये जा रहा था।

तभी अचानक उस अदृश्य यान से ध्वनि तरंग मिलना बन्द हो गई। स्क्रीन सपाट हो गया। सारी हलचल बन्द हो गई। वह हताश हो बोला—हमारी पकड़ से वह यान निकल गया। और वैसे भी इस खोजी यान से हम अपनी कक्षा से दूसरे ग्रह की कक्षा में प्रविष्ट नहीं हो सकते। यह प्रयास तो बेकार हुआ।

नितिकाशा ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

खोजी यान अंतरिक्ष प्रयोगशाला के लिए वापिस मुड़ गया।



पृथ्वी का नियंत्रण-केन्द्र बराबर अंतरिक्ष प्रयोगशाला से सम्पर्क साधे हुए था। जब अदृश्य यान और किसी ग्रह के सम्राट का विवरण

उसे प्राप्त हुआ तो सब लोग चौंक पड़े। पृथ्वी ग्रह के किसी निवासी के सहयोग की बात सभी को बहुत गहरे तक खरोंच गई।

चीनी वैज्ञानिक ने हताशा के स्वर में कहा—हम लोग आपस में बहुत लड़े है। एक-दूसरे की आँखों में बहुत खटके हैं। बहुत छिपाया है हमने स्वयं को, एक-दूसरे से। बराबर अविश्वास किया है सब पर। वास्तव में, धिक्कार है हम लोगो को।

—आज तुमने वह बात कह दी, जो हमें सदियों पहले सोचनी और कहनी चाहिए थी। अमेरिकी वैज्ञानिक ने चीनी वैज्ञानिक के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

रूसी वैज्ञानिक बोला—सही कह रहे हो, भाई! यदि हम सब एक-दूसरे पर विश्वास करते, एक-दूसरे से सहयोग करते तो फिर किस ग्रह का दुस्साहस होता जो हमारे पृथ्वी ग्रह की ओर आँख भी उठा पाता।

जापानी वैज्ञानिक बोला—मैं तो आज इसलिए खुश हूँ, बहुत खुश कि देर से ही सही, अब तो पृथ्वी के मुल्क इकट्ठे हुए है तो लगता है कि हमारा देश अब भारत, चीन, अमेरिका, जापान या रूस नहीं अपितु पूरा पृथ्वी ग्रह अपना देश है और हमें मिलकर भाई चारे से, प्यार से, विश्वास के साथ, इकट्ठे रहकर इस ग्रह की रक्षा करनी है।

भारतीय वैज्ञानिक की आँखें नम हो गईं। फ्रांसिसी वैज्ञानिक ने उसकी गीली आँखें पोंछी तो वह बोला—हमारे देश ने वसुधा को कुटुम्ब मानने का दर्शन सदियां पहले इस दुनिया को दिया था जिसे आज से पहले किसी ने मान्यता नहीं दी। आज मुझे गर्व हो रहा है अपने पूर्वजो पर कि वे कितने दूरदृष्टा थे।

—इसमें कोई संदेह नहीं, मित्र! जर्मन वैज्ञानिक ने कहा—उनकी कही, सोची बात आज सार्थक हो गई। किसी भी सात्विक दर्शन को यथार्थ बनने में शताब्दियाँ लग सकती हैं किन्तु वह यथार्थ बनता अवश्य है।

ब्रिटेन का वैज्ञानिक बोला—ये तो सब ठीक है लेकिन केवल यह जानकारी कि पृथ्वी-ग्रह का कोई व्यक्ति उस ग्रह का सहयोगी है, हमारे लिए आगे बढने का द्वार नहीं खोल सकती।

—ठीक कह रहे हो, मेरे भाई ! उस ग्रह का पता नहीं, उसकी स्थिति का ज्ञान नहीं, उसकी शक्ति का अनुमान नहीं। आगे बढ़ने के लिए कोई सूत्र तो पकड़ना ही होगा। फ्रांसिसी वैज्ञानिक ने कहा।

रूसी वैज्ञानिक बोला—सूत्र पकड़ने के लिए हमें अपने सम्पर्क-सूत्र का जाल बिछाना होगा।

—क्या मतलब ? अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा।

—सीधी सी बात है। हमें अपने सम्पर्क–केन्द्र शनि, मंगल और चन्द्र ग्रहों पर स्थापित करने होंगे। हमारे वैज्ञानिक इन ग्रहों को अनेक बार देख चुके हैं। वे लोग वहाँ बैठकर उस ग्रह का कोई सूत्र पकड़ने की सार्थक चेष्टा कर सकते हैं। रूसी वैज्ञानिक ने गंभीर होते हुए कहा।

—वाह ! क्या बात सोची है ! सारे वैज्ञानिक चिल्ला पड़े।

—अब वो ग्रह नहीं बच सकता। जर्मन वैज्ञानिक ने खड़े होते हुए कहा।

चीनी वैज्ञानिक बोला—यह सही दिशा में, स्वागत योग्य प्रस्ताव है।

जापानी वैज्ञानिक ने कहा—अपने इन्हीं तीनों केन्द्रों से हम उस ग्रह पर आक्रमण भी कर सकते हैं।

—यह बाद की बात है। भारतीय वैज्ञानिक ने कहा—पहले इन तीनों केन्द्रों पर भेजने के लिए वैज्ञानिक तो तय कर लिये जायें।

ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने कहा—कैसी बातें कर रहे हो ? यह हम तय क्यों करेंगे ? यह हमारा नियंत्रण केन्द्र तय करेगा।

—बिलकुल ठीक। सारे वैज्ञानिक एक साथ बोल पड़े।

खोजी यान की दृष्टि से उस अदृश्य यान के निकल जाने पर सारे वैज्ञानिक अंतरिक्ष प्रयोगशाला में गंभीरता से अगले कदम के बारे में विचार कर ही रहे थे कि वहाँ आवाज गूँजने लगी—स्पेस लेबोरेटरी ? स्पेस लेबोरेटरी ?

—यस, स्पीकिंग। अन्तरिक्ष प्रयोगशाला ने उत्तर दिया।

—मैसेज नोट करो।

—बोलिये।

और जब उस कोड मे मिले मैसेज को डिकोड किया तो प्रयोगशाला प्रभारी उछल पड़ा।

स्टेनले ने पूछा—उस अदृश्य यान की कोई खबर मिली क्या ?

—नहीं, मैडम। पृथ्वी के नियत्रण केन्द्र ने आदेश दिया है कि आप लोग तीन दलों में बँटकर शनि, मगल और चद्र ग्रहों पर जाकर वहाँ सम्पर्क केन्द्र स्थापित करें और उस अज्ञात ग्रह के बारे में जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा करें।

पलक झपकते चीन-फ्रास-जर्मनी, ब्रिटेन-रूस-अमेरिका तथा भारत-जापान के दल बन गये। पहला दल शनि ग्रह के लिए, दूसरा मगल और तीसरा चन्द्र ग्रह के लिए रवाना हो गया।

प्रयोगशाला प्रभारी ने धीरे से कहा—साहस के साथ चल पडने पर मंजिल स्वत: सामने आती सी दिखाई देने लगती है।

□ □

सम्राट के समक्ष जब तंदुल और केरिन पहुँचे तब वे किन्ही दो अजनबी व्यक्तियों से बात कर रहे थे। इन्हें देखते ही सम्राट बोले—हम तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे थे। लौटते समय इतनी धीमी गति से क्यों आये ?

केरिन ने निगाहें झुकाते हुए कहा—आते समय तो जल्दी थी लेकिन लौटते समय, सम्राट ! काम न हो पाने से मन खिन्न था।

—इसलिये तुम मन बहलाते हुए दोनों वापिस आये ?

सम्राट की बात सुन दोनो ही मन में कुछ बिखर से गये।

तंदुल थोड़ा साहस करके बोला—नही, सम्राट ! मन बहलाने जैसी कोई बात नही थी, केवल उत्साहहीनता थी।

—तभी तुम केरिन के लौटने का इन्तजार जिन्दगी भर करना चाहते थे। सम्राट ने हँसते हुए कहा।

तंदुल को सहसा यान में कही वात याद हो आई। उसने सम्राट की प्रवल शक्ति के सम्मुख फिर मन से हार मानते हुए कहा—वो तो सम्राट मैंने केरिन को दिलासा देने और उसका हौसला बढ़ाने के लिए कहा था।

—कोई बात नहीं। ये हमारे पड़ोसी ग्रह जिब्राटो के प्रतिनिधि हैं। उन आगन्तुकों की ओर संकेत करते हुये सम्राट ने कहा।

तंदुल ने हाथ जोड़ दिये और केरिन ने सिर झुका दिया।

सम्राट बोले—यही हमारे मित्र तंदुल हैं जिनके परामर्श से आज हमारा ग्रह सूर्य के प्रकाश में नहा रहा है।

इस वार दोनों आगन्तुकों ने तंदुल को देखकर हाथ जोड़े।

सम्राट ने कहा—तंदुल ! जिब्राटो ग्रह भी सौर-ऊर्जा चाहता है। इसलिए हमने यह निश्चय किया है कि सूर्य के प्रकाश को इनके ग्रह के माध्यम से अपने ग्रह तक लाया जाये जिससे हमारा पड़ोसी ग्रह भी उस प्रकाश के आनन्द का लाभ उठा सके।

—यह तो आपकी दयालुता है, सम्राट ! तंदुल ने धीरे से कहा।

—दयालुता नहीं, हमारा कर्त्तव्य है, तंदुल ! अपने पड़ोसी ग्रहों को सुखी रखकर ही पूरे क्षेत्र में शांति का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है। हम नहीं चाहते कि हमारा बढ़ता वैभव हमारे किसी पड़ोसी की आँखों में बबूल का बीज डाल दे।

—आप सच कह रहे हैं, सम्राट ! पड़ोसी का वैभव ही दूसरे पड़ोसी की आँखों में आँसू उछालता है। तन्दुल चुप हुआ कि शेटिन और कुन्दू भी इस बीच वहाँ आ गये। केरिन को देखते ही शेटिन बोला—हमें तुमसे ये उम्मीद नहीं थी, केरिन !

केरिन ने कहा—शेटिन ! सारा पृथ्वी ग्रह अंधकार में डूबा हुआ है। कहीं कोई प्रकाश की किरण नहीं है। आकाश पर एक सितारा भी नहीं है। वहाँ खोज करने की कोई सुविधा नहीं है और तंदुल क्योंकि नगरों में रहा नहीं इसलिए इसे वहाँ का कोई भूगोल पता नहीं।

सम्राट ने बात काटते हुए कहा—शेटिन ! मेरी इन दोनों से बात हो गई है। ये बहुत दूर की यात्रा करके आये हैं। इन्हें विश्राम के लिए जाने दो। तुम अपने इन अतिथियों की बात सुनकर उचित व्यवस्था करो।

सम्राट का संकेत पाकर, उन्हें प्रणाम कर, तंदुल और केरिन दोनों वहाँ से चल दिये।

थोड़ी देर चुप-चुप चलते रहने पर केरिन ने भरी आँखों से वह मौन तोड़ा—तो तुमने दिलासा देने और मेरा हौसला बढ़ाने के लिए वह बात कही थी।

—कैसी बात कर रही हो, केरिन ! मैंने वह बात सच्चे दिल से कही थी लेकिन सम्राट के अचानक यह कहने पर मुझे कुछ तो बहाना बनाना ही था।

—अगर तुम सच कह देते तो सम्राट मुझे तुरन्त तुम्हें सौंप देते।

—क्या ?

—हाँ।

—ये मुझे क्या पता था ? अब जाकर कहे देता हूँ।

—नहीं।

—फिर ?

—किसी उपयुक्त अवसर पर कहना।

—उपयुक्त से मतलब ?

—जब सम्राट प्रसन्न हों।

—वे तुमसे नहीं पूछेंगे ?

—हमारे सम्राट दिल की भाषा पढ लेते हैं।

—दिल की भी कोई भाषा होती है ?

—बिलकुल। दिल की भाषा लिखी–बोली नहीं जाती, सिर्फ पढ़ी जाती है।

केरिन की बात सुन, सहसा रुककर, तंदुल उसका चेहरा देखने लगा।

—ये क्या कर रहे हो मार्ग में ? केरिन ने रुकते हुए पूछा।

—दिल की भाषा पढने की कोशिश कर रहा हूँ।

—चलो हटो। तुम भी बड़े वो हो ना। पुरुष जो ठहरे।

—क्या दुनिया भर की नारियाँ एक जैसी होती हैं, केरिन ।

—मुझे क्या पता दुनिया के बारे में ?

—मुझे लगता है, आदमी को बिना जाने-पहचाने नारी हमेशा अपना दिल हारती आई है ।

—दिल हारने के लिए सिर्फ दिल ही देखा जाता है । आदमी की जाति, देश, रूप और वैभव नहीं ।

केरिन की बात सुन तंदुल कुछ नहीं बोला ।

और दोनों फिर चलने लगे । अब वे दोनों चुप थे पर मौन बोलने लगा था । मौन की भाषा, आँखों की खिड़कियों से, सीधे मन के आँगन में जा उतरती है । उन दोनों के मन पहली बार इन्द्रधनुष देख रहे थे ।

□ □

जिब्राटो के प्रतिनिधियों की बात सुन शेटिन बोला—सम्राट ! यह मार्ग-परिवर्तन हानिकर भी हो सकता है ।

—वह कैसे ?

—आकाश गंगा के कुछ और ग्रह भी उस प्रकाश-रेखा को देख सकेंगे जो जिब्राटो तक प्रकाश को पहुँचायेगी ।

—जरा खुलकर समझाओ ।

इस बार कुन्दू बोला—सम्राट ! शनि ग्रह को सूर्य की ऊर्जा प्राप्त है किन्तु यदि वहाँ से एक और प्रकाश रेखा जाती दिखाई पड़ेगी तो आदमी चौंकेगा ही ।

—तुम भी, कुन्दू ! क्या बात कर रहे हो ? शनि ग्रह में यदि कोई चौंका भी तो उससे हमें क्या हानि हो सकती है ? सम्राट ने मुसकराते हुए पूछा ।

शेटिन धीरे से बोला—शनि ग्रह, सम्राट ! पृथ्वी ग्रह की पहुँच में है ।

—तुम्हारा मतलब यह है कि उस प्रकाश-रेखा को देखने ग्रँधेरे में दम तोड़ रहे पृथ्वी-ग्रह के निवासी शनि-ग्रह तक आयेंगे? सम्राट ने आश्चर्य से पूछा।

—नहीं, सम्राट! ऐसा तो नही लगता किन्तु शनि-ग्रह से अगर पृथ्वी-ग्रह का कोई सम्पर्क हो तो? शेटिन ने अपनी शका प्रस्तुत करते हुए कहा।

—तुम पृथ्वी ग्रह से घबरा तो नही रहे हो, शेटिन?

—जी नही।

—उसे ग्रँधेरे में डूबे एक साल हुआ चाहता है।

—जी।

—आज तक वे कुछ पता लगा सके?

—जी नही।

—फिर?

—मैं अतीत की नही भविष्य की बात कर रहा हूँ, सम्राट!

—भविष्य की आशंका वाले व्यक्ति वर्तमान को रो-रोकर जीते है। शेटिन को वस्तुस्थिति समझाते हुए सम्राट ने कहा।

कुन्दू ने सुझाव देते हुए कहा—सम्राट! हम अपने पड़ोसी ग्रह की सहायता करना चाहते है, और पूरे मन से करना चाहते है, तो पडोसी ग्रह भी हमारा अहित नही चाहेगा।

—बिलकुल नही। हमको ऐसा प्रकाश नही चाहिए जिससे हमारे मित्र ग्रह पर कोई संकट आये। जिब्राटो के प्रतिनिधि ने कहा।

कुन्दू बोला—हम आपको निराश नही करना चाहते। जब हमारे सम्राट आपकी सहायता करना चाहते है फिर हम तो किसी भी स्थिति में उसमें अवरोध उत्पन्न नही कर सकते। अनिच्छा होते हुए भी स्वामी की इच्छा का सम्मान सेवा-धर्म की अनिवार्यता है।

थोड़ा रुककर सम्राट की ओर देखते हुए कुन्दू फिर बोला—सप्ताह में एक बार जिब्राटो को सुगमता से प्रकाश दिया जा सकता है।

—सप्ताह में एक बार। ऐसा क्यो? सम्राट ने पूछा।

—ऐसा इसलिए, सम्राट ! कि प्रतिदिन प्रकाश-रेखा देखने से कौतूहल बढ़ सकता है। सप्ताह में एक दिन आकाश में उत्पन्न प्रकाश रेखा किसी को विस्मित नहीं करेगी।

—हमें कुन्दू का प्रस्ताव स्वीकार है, सम्राट ! सप्ताह में एक दिन भी हमारे लिए पर्याप्त है। हम सौर ऊर्जा का धीरे-धीरे संचय कर सप्ताह के शेष दिन भी उससे प्रकाशमान कर लेंगे। जिब्राटो के प्रतिनिधि ने कहा।

—फिर ठीक है। सम्राट ने कहा—कुन्दू ! तुम सप्ताह में एक दिन जिब्राटो को सूर्य का प्रकाश देने की व्यवस्था कर दो।

—व्यवस्था हो जाएगी, सम्राट ! कुन्दू ने प्रणत भाव से कहा।

जिब्राटो के दोनों प्रतिनिधि, कृतज्ञतावश सिर झुकाकर, सम्राट को प्रणाम कर चल दिये। उनके मन में एक ही बात थी—स्वर्ग कहीं भी उतर सकता है, उतारने वाला होना चाहिए।

□ □

शनि-ग्रह पर स्थापित सम्पर्क केन्द्र पर किसी के पास कोई काम नहीं था। तीनों वैज्ञानिकों ने अपने संकेत-यंत्र लगाकर आठ-आठ घंटे काम करने का पारस्परिक निर्णय कर लिया था। आठ घंटे एक वैज्ञानिक संकेत-यंत्र पर दृष्टि लगाये बैठा रहता। काम करने से कुछ न करना आदमी को अधिक थकाता है। आठ घंटे के बाद उस थके आदमी का स्थान दूसरा सम्हाल लेता और उसके बाद तीसरा वही क्रम दुहराता।

एक दिन, रात को, स्टेनले संकेत-यंत्र पर बैठी हुई थी कि उसने अचानक आकाश पर सूर्य के प्रकाश को सीधी रेखा में कहीं जाते हुए देखा। उसे लगा कि सूर्य का तीव्र प्रकाश एक नियोजित ढंग से कहीं ले जाया जा रहा है। उसने तत्काल अपने दोनों साथियों को भी जगा दिया।

चीनी वैज्ञानिक आँखें मलता हुआ बोला—क्या हुआ ? कोई संकेत पकड़ में आया क्या ?

जर्मन वैज्ञानिक स्टेनले के चेहरे की ओर देखने लगा तो उसने आकाश की ओर इशारा कर दिया।

आकाश पर प्रकाश–किरण देख दोनों वैज्ञानिक सम्हल कर बैठ गये। शनि-ग्रह का सूर्य तो वे दिन में ही देख चुके थे। अब रात में सूरज की रोशनी का यों आकाश से कहीं दूर जाना, वास्तव में, विस्मयकारी था।

जर्मन वैज्ञानिक ने उस प्रकाश-रेखा के कई कोणों से चित्र उतार लिये।

थोड़ी देर बाद वहाँ का आकाश फिर स्याह हो गया और तारे दिखाई देने लगे।

तीनों ही वैज्ञानिक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके। स्टेनले ने अवश्य कहा—हो न हो यह पृथ्वी के चुराये सूर्य का ही प्रकाश है जिसे कोई ग्रह अपनी ओर खींच रहा है।

यह सुनकर चीनी वैज्ञानिक ने पूछा—क्या सूरज का प्रकाश तीन घंटे ही रहता है ? अब कहाँ गया वो ?

इस प्रश्न का स्टेनले कोई उत्तर नहीं दे सकी।

जर्मन वैज्ञानिक ने कहा—प्रकाश के इन चित्रों को हम अपने नियंत्रण–केन्द्र को तो भेज ही सकते हैं।

—हाँ, यह ठीक है। बिना कोई टिप्पणी किये शनि-ग्रह के आकाश की रात्रिकालीन तीन घंटे की स्थिति तो पृथ्वी को बताई ही जा सकती है। चीनी वैज्ञानिक ने समर्थन करते हुए कहा।

और स्टेनले ने प्रकाश के वे चित्र पृथ्वी को भेज दिये।

मंगल ग्रह पर अपने यंत्र और उपकरण लगाकर तीनों वैज्ञानिकों ने दिन का काम तो संकेत–यंत्र से जुड़े कैमरे के सुपुर्द कर दिया और रात का काम सामूहिक रूप से अपने जिम्मे रख लिया। रात को तीनों वैज्ञानिक जागते, किस्से कहानी सुनते–सुनाते और संकेत–यंत्र को घूरते रहते।

इस क्रम के चलते-चलते एक दिन अमेरिकी वैज्ञानिक बोला—मुझे तो इस प्रयोग से कुछ हासिल होता लगता नहीं है।

रूसी वैज्ञानिक ने कहा—कुछ दिन तो देखना ही पड़ेगा।

ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने नियंत्रण-केन्द्र से आदेश माँगने का सुझाव दिया।

इस पर रूसी वैज्ञानिक ने कहा—आदेश माँगने की अपेक्षा आदेश आने की प्रतीक्षा करना अधिक श्रेयस्कर है।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने भी कहा—वे लोग हर स्थिति पर निगाह रखे होंगे। वे जरूर ही हमें उपयुक्त अवसर पर आवश्यक आदेश देंगे, इसलिए हमें अपनी ओर से पहल नहीं करनी चाहिए।

इसके वाद तीनों फिर संकेत-यंत्र देखने लगे।

चंद्र-ग्रह पर संकेत-यंत्र, कैमरा एवं अन्य उपकरण लगा देने के वाद भारतीय वैज्ञानिक ने कहा—नितिकाशा! तुम दिन को संकेत-यंत्र सम्हालना, रात को मैं जग लूँगा।

नितिकाशा ने मौन रहकर उस प्रस्ताव को स्वीकार किया। वह दिन भर संकेत-यंत्र देखती और भारतीय वैज्ञानिक सोया रहता। शाम को वह संकेत-यंत्र सम्हाल लेता और नितिकाशा थोड़ी देर इधर-उधर घूम कर सो जाती।

एक रात भारतीय वैज्ञानिक संकेत-यंत्र को देख रहा था कि नितिकाशा ने लेटे-लेटे कहा—मैं आज तक वो दिन नहीं भूल पाई जव तुमने अचानक खोजी यान में चलने के लिए मेरा नाम लिया था।

—इसमें न भूलने जैसा कौन सी वात थी ?

—इसलिये कि तुमने मेरा ही नाम क्यों लिया ?

—तो और कौन चलता मेरे साथ ?

—क्यों ? क्या वहाँ और वैज्ञानिक नहीं थे ?

—वैज्ञानिक तो थे ?

—फिर ?

—इस "फिर" का मेरे पास कोई उत्तर नहीं है।

—लेकिन तुम तो रास्ते भर चुप रहे थे। एक शब्द तक नहीं वोले।

—मुझे तो लगा, तुम चुप थी। मैं तो रास्ते भर बोलता ही रहा था।

—तुम बोलते रहे ? मैंने तो सुना नहीं। नितिकाशा ने विस्मय से पूछा।

—दिल जब बोलता है तो दिल ही सुनता है।

—मेरे तो दिल ने भी कुछ नही सुना।

—तुम झूठ बोल रही हो, नितिकाशा !

—मैं झूठ बोल रही हूँ ?

—हाँ। क्या सच, तुमने मेरे दिल की आवाज नही सुनी थी ?

—अब बतादो, तुम्हारे दिल ने क्या कहा था ? नितिकाशा ने हाथ नचाते हुए पूछा।

—मेरे दिल ने ? मेरे दिल ने कहा था—नितिकाशा। तुम बहुत सुन्दर हो। तुम बहुत मासूम हो। तुम मेरे दिल में बस गई हो। पहली बार जब तुम्हें देखा था तभी मुझे लगा था तुम सिर्फ मेरे लिये हो।

भावावेश में पता नही भारतीय वैज्ञानिक क्या-क्या बोलता चला गया और नितिकाशा चन्द्रग्रह की धरती से उठकर आकाश में पहुँच गई।

उस समय सूरज की चोरी की पीडा तक वे दोनो भूल गये। पीडा का घाव वक्त से पहले प्यार भर देता है।

जब दोनों निःशब्द हो गये तब भी वातावरण मे आवाज गूँजती रही। ओठों के चुप होने पर आँखें बोल उठती हैं।

नितिकाशा ने सामान्य होते हुए कहा—उस दिन मुझे तुम्हारा मौन बहुत अखरा था।

—और मुझे बहुत सुहाया था।

—क्या ?

—तुम्हारा मौन और निश्छल, निष्कलक रूप।

—तुम्हें वैज्ञानिक होने की अपेक्षा कवि होना चाहिए था।

—कवि भी तो वैज्ञानिक होता है।

—कवि और वैज्ञानिक ? वो कैसे ?

—कवि, शब्दों में, सपनों के ऐसे उपयोग करता है जिस पर वैज्ञानिक ही प्रयोग कर सकता है। वह उस भविष्य के सपने संसार को सौंपता है जिसे विज्ञान सदियों बाद प्रमाणित करता है।

—मैं समझ गई। तुम कुछ भी सिद्ध कर सकते हो लेकिन यहाँ चन्द्र ग्रह पर रहकर हम क्या सिद्ध कर रहे हैं? मुझे तो यह व्यर्थ का प्रयोग लग रहा है।

—नहीं, ऐसी बात नहीं है, नितिकाशा! हमारे वैज्ञानिक जरूर किसी योजना पर काम कर रहे हैं। पृथ्वी के वैज्ञानिक देवताओं के सहोदर हैं।

—क्या हम अपने नियन्त्रण केन्द्र से सम्पर्क स्थापित करें?

—नहीं। हमें उनके आदेश की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

—मेरे लिए तो तुम्हारा आदेश ही काफी है।

—सच?

—हाँ।

और, एक बार वे दोनों वैज्ञानिक एक-दूसरे की आँखों में डूब गये।

शनि ग्रह से प्राप्त चित्रों ने नियन्त्रण-केन्द्र पर हड़कम्प मचा दिया। शनि ग्रह का आकाश रात्रि में तीन घंटे सूरज की रोशनी से अकस्मात् आलोकित हो उठा था। यह सामान्य बात नहीं थी। बिना सूर्य के वहाँ उसका प्रकाश था। निश्चित रूप से यह एक गम्भीर घटना थी। वैज्ञानिक किसी निश्कर्ष पर नहीं पहुँच पा रहे थे। पृथ्वी के सूर्य का प्रकाश शनि ग्रह के आकाश से किस ग्रह तक ले जाया गया होगा? क्या वह प्रकाश पृथ्वी के सूर्य का ही था? ये दोनों प्रश्न वैज्ञानिकों के मन-मस्तिष्क को मथ रहे थे।

रूसी वैज्ञानिक ने कहा—इस प्रकाश का हमें उद्गम अथवा अंतिम छोर से अध्ययन करना होगा।

—वो कैसे? फ्रांस के वैज्ञानिक ने पूछा।

जापानी वैज्ञानिक बोला—हम पहले तो अपने चंद्र और मंगल-ग्रह के वैज्ञानिक दलों को शनिग्रह पर जाने के आदेश देते हैं जिससे वे भी उस प्रकाश को देख सकें।

—यह ठीक रहेगा। अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा।

चीनी वैज्ञानिक ने पूछा—क्या तीनों दलों को एक स्थान पर रखना उपयुक्त होगा ?

—बिलकुल। क्योंकि मंगल और चन्द्र ग्रह से कोई सूचना अथवा संकेत नहीं मिले हैं इसलिए सभी वैज्ञानिक शनि ग्रह से ही अपनी खोज प्रारम्भ कर सकते हैं। ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने स्पष्ट करते हुए कहा।

जर्मन वैज्ञानिक ने कहा—हमें शनि से आगे अपने दल भेजने की अपेक्षा उन्हें प्रकाश के उद्गम की ओर भेजना ठीक रहेगा।

भारतीय वैज्ञानिक ने कहा—उद्गम-स्थल की ओर भेजने से क्या लाभ होगा ? समझ लीजिए वे उस प्रकाश-रेखा के साथ चलते-चलते पृथ्वी के सूर्य की कक्षा तक पहुँच गये तो ?

इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था।

रूसी वैज्ञानिक ने कहा—हमें जापानी वैज्ञानिक का सुझाव मानते हुए अपने दोनों दलो को भी मंगल और चन्द्र से शनि ग्रह पर पहुँचने के निर्देश दे देने चाहिए।

इस प्रस्ताव को सारे वैज्ञानिकों की सहमति प्राप्त हो गई।

पृथ्वी के नियंत्रण-केन्द्र ने मंगल और चन्द्र ग्रहों पर स्थापित अपने संकेत-केन्द्रों को आवश्यक निर्देश प्रसारित कर दिये।

जब चंद्र ग्रह को निर्देश मिले तब नितिकाशा संकेत-यंत्र की प्रभारी थी। उसने वह संदेश जब पठनीय भाषा में लिखा तो उसने अपने हाथो से, सोते हुए भारतीय वैज्ञानिक को, हिलाकर जगाया और नियंत्रण-केन्द्र का निर्देश उसको थमा दिया।

उसने उठते हुए कहा—समेटो अपने संकेत-केन्द्र को, इन सारे उपकरणों को और चलने की तैयारी करो।

नितिकाशा ने अजीब सी दृष्टि से उसे देखते हुए पूछा—क्या कल नहीं चल सकते ?

—नहीं, नितिकाशा ! अपने स्वार्थ पर समाज के हितों की वलि नहीं चढाई जा सकती।

चन्द्र ग्रह से एक यान उठा और शनि ग्रह की यात्रा पर चल पड़ा।

मंगल ग्रह पर कार्यरत वैज्ञानिकों ने निर्देशानुसार अपना केन्द्र समेटा और शनि ग्रह की राह पकड़ी।

चन्द्र और मंगल ग्रह के वैज्ञानिक हर बात से अनभिज्ञ थे। शनि ग्रह को नियंत्रण-केन्द्र ने कोई सूचना नहीं भेजी थी।

मंगल ग्रह के वैज्ञानिक जब शनि ग्रह की धरती पर उतरे तब तक रात घिर आई थी।

सबका स्वागत करते हुए स्टेनले ने पूछा—नितिकाशा और अँजरेकर कहाँ हैं ?

चीनी वैज्ञानिक ने मुसकराते हुए कहा—दोनों मून पर हैं।

सारे वैज्ञानिक एक साथ इस बात पर हँस पड़े और स्टेनले अपने प्रश्न पर खुद ही शरमा गई।

शब्दों का जाल किसी भी जाल से अधिक मजबूत होता है।

तभी शनि ग्रह का आकाश फिर रोशनी से भर उठा। यह देख मंगल ग्रह से आये सारे वैज्ञानिक चौंक उठे।

यही वक्त था जब चन्द्र ग्रह से आये यान ने शनि ग्रह की धरती को छुआ। नितिकाशा ने उतरते ही आकाश की ओर देखा। रात को इतना प्रकाशित आकाश ? वास्तव में, असंभव सामने संभव हुआ खड़ा था।

भारतीय वैज्ञानिक ने यान से उतर कर उस प्रकाश के अनेक चित्र लिये और जर्मन वैज्ञानिक के पास आकर बोला—जल्दी करो। मैं ऊपर जा रहा हूँ।

कोई व्यक्ति उसकी बात समझता इससे पहले ही वह जर्मन, रूसी और अमेरिकी वैज्ञानिकों को घसीटता-सा अपने यान में ले गया। पल भर में वह यान प्रकाश में नहाता हुआ आकाश में उठता चला गया और थोड़ी देर में आँखों से ओझल हो गया।

स्टेनले ने पूछा—यह क्या हो गया अँजरेकर को, नितिकाशा !

नितिकाशा ने आकाश को देखते हुए कहा—मुझे क्या पता ?

चीनी वैज्ञानिक ने उत्सुकता से पूछा—आखिर ये लोग गये कहाँ ?

ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने कहा—भारतीय वैज्ञानिक वास्तव में महान् है। आज मुझे इस बात का प्रमाण मिल गया।

—वो कैसे ? चीनी वैज्ञानिक ने पूछा।

प्रश्न के उत्तर में प्रश्न करते हुए ब्रिटेन के वैज्ञानिक ने पूछा—तुमने ऐसा प्रकाश पहले भी देखा होगा ?

—हाँ। स्टेनले ने उत्तर देते हुए कहा—हमने कोई सप्ताह भर पहले यह प्रकाश देखा था और हमने उसके चित्र भी नियन्त्रण-केन्द्र को भेजे थे।

—तभी। तभी हमें यहाँ आने के निर्देश मिले।

—इससे क्या बात बनी ? कुछ समझ में नहीं आया। चीनी वैज्ञानिक ने पूछा।

—क्या यह प्रकाश देखते ही आप किसी खोज पर निकले ? ब्रिटिश वैज्ञानिक के प्रश्न का चीनी वैज्ञानिक कोई उत्तर नहीं दे सका।

थोड़ी देर बाद वह बोला—हमने तो सारी सूचना नियन्त्रण-केन्द्र को प्रेषित करदी थी। वहाँ से आदेश प्राप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे थे हम लोग।

और भारतीय वैज्ञानिक यह प्रकाश देखते ही उसकी खोज मे चल पड़ा। वह अकेला भी जा सकता था लेकिन सहयोग की परम्परा को बनाये रखने के उद्देश्य से वह अपने साथ तीन वैज्ञानिको को और ले गया।

इसके बाद कोई कुछ नही बोला।

नितिकाशा मन पर पड़ी शिकन को सहलाने लगी। मन की खरोंच जिन्दगी भर हरी रहती है। उसे गुस्सा आ रहा था अँजरेकर पर कि वह इस खोज पर उसे क्यों छोड गया।

तभी आकाश से प्रकाश लुप्त हो गया और आसमान की चुनर पर सितारे टंक गये। पृथ्वी के वैज्ञानिको का खोजी दल भी [illegible] शनि ग्रह की धरती पर उतर गया।

जब चारों वैज्ञानिक अपने सकेत-केन्द्र पर पहुँचे तो उन्होंने [illegible] कि वहाँ सभी लोग उनकी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे।

चीनी वैज्ञानिक उन्हें देखते ही बोला—यह ठीक नहीं है। कुछ कहकर तो जाना चाहिए था। पता नहीं, मन में कैसे-कैसे सवाल जग रहे थे।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने पूछा—अपनी खोज के बारे में तो बताओ।

स्टेनले और नितिकाशा की निगाहें अँजरेकर के चहरे पर टिकी हुई थीं।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—यह हमारे भारतीय मित्र की सूझबूझ थी कि हम अपनी खोज में थोड़ा सा आगे बढ़ सके।

—थोड़ा नहीं, आगे बढ़ने की एक दिशा निश्चित हो गई। यह एक बड़ी उपलब्धि है। रूसी वैज्ञानिक ने कहा।

जर्मन वैज्ञानिक बोला—वैसे तो यह सब ठीक है लेकिन हमें वास्तविकता जानने के लिए और कठिन प्रयत्न करना होगा।

इस बार भारतीय वैज्ञानिक बोला—जो हम देखकर आये हैं, वह मैं आपको बता देता हूँ जिससे अब तक की स्थिति से परिचित होकर अगले कदम का निश्चय किया जा सके।

सारे लोग उसे देखने लगे।

अँजरेकर ने कहा—दो आकाशगंगाओं के संधि-स्थल पर ऐसे कुछ ग्रह हैं जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता है और वे बारह महीने अंधकार और बर्फ से ढके रहते हैं। वहाँ कोई उत्पादन नहीं होता।

—मतलब यह हुआ कि जैसी दशा आजकल हमारी पृथ्वी की है वैसे हैं वे ग्रह। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने अपनी ओर से कहा।

—आपने बिलकुल ठीक कहा। लेकिन वे ग्रह विज्ञान में पृथ्वी ग्रह से बहुत आगे हैं। यह सूर्य का प्रकाश जो आपने देखा वह एक ग्रह को जा रहा था और वहाँ उसका संचय किया जा रहा है।

भारतीय वैज्ञानिक को टोकते हुए चीनी वैज्ञानिक ने पूछा—वहाँ सौर-ऊर्जा का संचय हो रहा है?

—हाँ। और फिर हमने देखा कि इस प्रकाश के बुझते ही बहुत ऊपर एक प्रकाश-किरण लहराने लगी। इसका यह अर्थ हुआ कि किसी

अन्य ग्रह पर वह प्रकाश निरन्तर जाता रहता है और थोड़ी देर के लिये इस ग्रह को मिलता है।

अँजरेकर के चुप होते ही स्टेनले बोली—एक सप्ताह पहले भी हमने ऐसा ही प्रकाश देखा था।

भारतीय वैज्ञानिक ने कहा—हो सकता है, प्रकाश प्राप्त कर रहे मूल ग्रह ने सप्ताह में एक बार किसी अन्य ग्रह को प्रकाश देने का पारस्परिक समझौता किया हो।

चीनी वैज्ञानिक बोला—इस जानकारी के बाद हमें क्या करना चाहिये।

जर्मन वैज्ञानिक ने कहा—हमें सूर्य को चुराने वाले मूल ग्रह का पता लगाना होगा।

—बिलकुल। रूसी वैज्ञानिक ने कहा।

अमेरिकी वैज्ञानिक बोला—यह काम इतना सरल नहीं है। वह ग्रह निश्चित रूप से पृथ्वी की गतिविधियों की टोह ले रहा होगा। उसके अदृश्य यान की बात हमे याद ही है। हमारा उस ग्रह तक पहुँचना जहाँ सरल नहीं है, वहाँ निरापद भी नहीं।

—उसने हमारा पहला यान तो जला ही दिया था। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने कहा।

—इसीलिए बहुत सावधानी से हमें अपना अगला कदम तय करना होगा। रूसी वैज्ञानिक ने इतना कहकर भारतीय वैज्ञानिक की ओर देखते हुए पूछा—तुम्हारी क्या राय है ?

अँजरेकर ने कहा—हमें अगले सप्ताह तक प्रतीक्षा करनी होगी। इस बार हमें विलम्ब हो गया था। अगली बार प्रकाश फैलते ही यात्रा पर निकल चलेंगे।

नितिकाशा बोली—इस बार मैं भी चलूँगी।

और गंभीर समस्या हल्की हँसी मे बिखर गई जब स्टेनले ने कहा—नहीं, इस बार मैं जाऊँगी, अँजरेकर के साथ। तुम बहुत दिन चाँद पर रहँ आई हो।

वास्तव में, नारी को नारी का न रूप सुहाता है, न वैभव और न उसकी प्रसन्नता।

तभी भारतीय वैज्ञानिक ने स्टेनले से कहा—आज की इस यात्रा का पूर्ण वृतान्त एवं आज लिये उस प्रकाश के इन चित्रों को तुम नियंत्रण-केन्द्र को भेज दो।

□ □

जिब्राटो ग्रह को जिस दिन प्रकाश मिला, पूरे ग्रह पर जीवन जीवंत हो उठा। वहाँ के निवासियों को पहली बार लगा कि सूर्य ही वास्तविक जीवन-प्रदाता ग्रह है। कितना निर्जीव, मृतप्राय ग्रह था जिब्राटो, सूर्य-प्रकाश के अभाव में।

बढ़ता हुआ वैभव घनिष्ठ सम्बन्धों के लिए घुन होता है।

जिब्राटो के ग्रहपति ने अपने विज्ञान-प्रमुख को बुलाकर पूछा—समरीनू ! सप्ताह में तीन घण्टे मिलने वाले प्रकाश की अवधि में वृद्धि नहीं हो सकती ?

—नहीं, ग्रहपति ! ग्रह के विज्ञान-प्रमुख ने कहा—क्योंकि मूल केन्द्र पर हिमशैल का अधिकार है इसलिए हम उसमें व्यवधान उत्पन्न नहीं कर सकते।

—क्या इसका कोई उपाय नहीं ?

—उपाय तो क्यों नहीं है, ग्रहपति !

—हमें बताओ।

—एक तो उपाय यह हो सकता है कि हिमशैल तक जाने वाला प्रकाश जिब्राटो होकर जाये।

—और ?

—और यह कि वहाँ जाने वाले प्रकाश को आकाश में कहीं रोककर द्विमार्गी बना दिया जाये।

—द्विमार्गी ?

—जी, ग्रहपति ! एक प्रकाश सीधा हिमर्शल चला जाये और दूसरा हमारे ग्रह को।

—क्या—क्या ये संभव है, समरीनू !

—बिलकुल संभव है, ग्रहपति !

—क्या इसका पता हिमर्शल को नहीं चलेगा ?

—एकदम तो नहीं चलेगा किन्तु यदि उन्होंने प्रकाश मार्ग की यात्रा की तो सब स्पष्ट हो जाएगा। समरीनू ने हाथ बांधे उत्तर दिया।

ग्रहपति ने खड़े होते हुए कहा—देखो, समरीनू। हिमर्शल सम्राट ने तो निरन्तर प्रकाश देने की बात कही थी किन्तु वहां के विज्ञान-प्रमुखों ने अनेक असुविधाएँ बताते हुए सप्ताह में एक दिन सीमित समय के लिए प्रकाश देने का प्रस्ताव रखा जिसे हमारे प्रतिनिधियों को स्वीकारना पड़ा। आखिर प्रकाश तो प्राप्त होना शुरू हुआ लेकिन सप्ताह में तीन घण्टे बहुत कम है।

—आप कह तो ठीक रहे हैं, ग्रहपति ! समरीनू ने खड़े-खड़े उत्तर दिया।

ग्रहपति ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—हिमर्शल पर फल, फूल और अनाज सब पैदा हो रहे हैं और वह भी प्रचुर मात्रा में। अब वह ग्रह किसी पर आश्रित नहीं है इसलिए निरन्तर शक्तिवान होता जा रहा है।

—हाँ, यह प्रश्न विचारणीय है, ग्रहपति ! इस ओर तो मेरा ध्यान ही नहीं गया था। समरीनू ने कुछ सोचते हुए कहा।

—अब तुम बताओ, ऐसी स्थिति में क्या किया जा सकता है ? सम्राट ने बैठते हुए पूछा।

समरीनू बोला—यह प्रकाश पृथ्वी ग्रह से आ रहा है, ग्रहपति ! वहाँ से तो इसे अलग रास्तों में नहीं बाँटा जा सकता। हाँ, यह हो सकता है कि मार्ग में कहीं सौर-ऊर्जा संचय-केन्द्र स्थापित कर दिये जायें, जहाँ, जितनी ऊर्जा हम यहाँ संचित करते हैं, उतनी ही वहाँ करलें।

—मार्ग से तुम्हारा क्या अभिप्राय है, समरीनू ! ग्रहपति ने कौतूहल-पूर्वक पूछा ।

—मतलव यही, ग्रहपति ! कि हम शनि ग्रह पर सौर-ऊर्जा संचय-केन्द्र स्थापित कर सकते हैं । हमें प्रकाश रात को मिलता है । यह प्रकाश शनि ग्रह के आकाश का स्पर्श करता हुआ आता है । हम वहाँ एक संचय-केन्द्र स्थापित कर सकते हैं ।

—ये वात हुई ना काम की । ग्रहपति ने मुसकराते हुये कहा—ठीक है, फिलहाल संचय ही प्रारम्भ करो । वाद में द्विमार्गीय प्रकाश की व्यवस्था करने की सोचेंगे ।

—जो आज्ञा,ग्रहपति !

□ □

पृथ्वी के नियन्त्रण-केन्द्र को जव शनि ग्रह से पूरा विवरण और चित्र मिले तो सभी वैज्ञानिक इस सफलता पर वहुत प्रसन्न हुए ।

व्रिटिश वैज्ञानिक ने कहा—मंजिल सामने दिखाई देने लगी है ।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—नहीं, यह कार्य इतना आसान नहीं है । जो ग्रह पृथ्वी से सूरज को चुराकर आकाशगंगा के दूसरे छोर तक ले गया है उसकी शक्ति को कम करके नहीं आँका जा सकता ।

जर्मन वैज्ञानिक वोला—आगे वढ़ने की एक दिशा तो निश्चित हुई ।

फ्रांसिसी ने कहा—यह अंतरिक्ष-युद्ध है और इसे विज्ञान के माध्यम से ही लड़ना होगा ।

रूसी वैज्ञानिक वोला—अभी से युद्ध की वात सोचना ठीक नहीं है । शायद चर्चा के माध्यम से कोई समाधान निकल आये ।

—यह कभी सम्भव नहीं होगा । जो ग्रह इतना दुस्साहसी हो कि पृथ्वी का सूर्य चुराके उसका प्रकाश दूसरे ग्रह को भी दान कर रहा हो वह

बिना युद्ध किये बाज नही आयेगा, उसे तो परास्त करना ही पडेगा। चीनी वैज्ञानिक ने अपना निश्चित मत व्यक्त करते हुये कहा।

जापानी वैज्ञानिक ने भारतीय वैज्ञानिक की ओर देखते हुये पूछा—अंतरिक्ष में अंजरेकर की यह महान् उपलब्धि है। अब इस बारे में आगे तुम क्या सोचते हो?

भारतीय वैज्ञानिक ने कहा—अभी कुछ भी निर्णय लेना बहुत जल्दी होगा। शनि ग्रह से प्राप्त रिपोर्ट अभी अधूरी है और चित्र वैसे ही हैं जैसे पहले आये थे। अभी हमे दूसरी रिपोर्ट की प्रतीक्षा करनी होगी।

—दूसरी रिपोर्ट? चीनी वैज्ञानिक ने पूछा—अब दूसरी रिपोर्ट क्यो आयेगी?

—क्योंकि इस रिपोर्ट मे यही लिखा है। भारतीय वैज्ञानिक ने मुसकराते हुए कहा।

चीनी वैज्ञानिक बोला – मैंने तो नही सुना।

भारतीय वैज्ञानिक ने रिपोर्ट का अतिम अश फिर पढने के लिए कहा।

नियन्त्रण-केन्द्र प्रभारी ने रिपोर्ट पढ़ना शुरू किया—शनि ग्रह पर विलम्ब से पहुँचने के कारण प्रकाश की पूरी अवधि तक इस बार खोज नहीं हो पाई है। इसलिये अभी यह रिपोर्ट भेजी जा रही है।

भारतीय वैज्ञानिक बोला—इस रिपोर्ट में 'इस बार' और 'अभी' शब्दों का प्रयोग यही सकेत करता है कि दूसरी रिपोर्ट अवश्य आयेगी और वह रिपोर्ट विस्तृत होगी।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने कहा—वास्तव मे तुम्हारी समझ बडी सूक्ष्म है।

अमेरिकी वैज्ञानिक बोला—अगली रिपोर्ट आने पर ही कुछ निश्चय किया जा सकेगा।

फ्रांसिसी वैज्ञानिक ने पूछा—क्या हम कोई निर्देश उन्हे नही भेज सकते?

—उन्हें किसी प्रकार के निर्देश की आवश्यकता नही है। वे अपनी दिशा में ठीक बढ़ रहे हैं। रूसी वैज्ञानिक ने कहा।

—सही है। हमारे निर्देश उनकी कार्य-प्रणाली में बाधक भी बन सकते हैं। जर्मन वैज्ञानिक ने अपनी बात कही।

चीनी वैज्ञानिक बोला—बाधक तो क्या, हम तो यही कहेंगे कि अगली रिपोर्ट जल्दी भेजें।

—यह निर्देश इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि वे खोज करते ही तो अपनी रिपोर्ट भेज देंगें। जापानी वैज्ञानिक ने कहा।

भारतीय वैज्ञानिक बोला—यह तो ठीक है कि हमें शनि-केन्द्र को किसी निर्देश भेजने की आवश्यकता नहीं है किन्तु हमें अपनी सरकारों से निवेदन करना बहुत आवश्यक हो गया है कि वे अन्तरिक्ष युद्ध की तैयारी प्रारम्भ करदें। सूर्य की मुक्ति के लिए इसके अतिरिक्त कोई उपाय संभव नहीं।

रूसी वैज्ञानिक बोला—लीजिए, सबसे आवश्यक बात पर हमारा ध्यान ही नहीं गया। हमें इस रिपोर्ट के अंश को अपनी-अपनी सरकारों और संयुक्त राष्ट्र संघ को भेज देना चाहिए जिससे राष्ट्राध्यक्ष आपस में मिलकर कोई सामूहिक निर्णय ले सकें।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—मैं यह प्रस्ताव रखना चाहता हूँ कि हमारे पृथ्वी के इस नियंत्रण केन्द्र का, भारतीय वैज्ञानिक कर्णीकर को, प्रवक्ता नियुक्त कर दिया जाए जिससे वह आवश्यकता पड़ने पर तत्काल उचित व्यवस्था कर सके।

सारे वैज्ञानिक एक साथ बोल पड़े—बहुत ही उपयुक्त प्रस्ताव है। हमें स्वीकार है।

कर्णीकर ने खड़े होकर कहा—मैं आपके विश्वास का पूरी सामर्थ्य से निर्वहन करूँगा।

और उसने संयुक्त राष्ट्र संघ तथा आठों देशों की सरकारों को अब तक की प्रगति से परिचित कराने हेतु आवश्यक संदेश भेज दिये।

□ □

स्टेनले के अनुसार आज रात्रि को फिर सूर्य का प्रकाश शनि ग्रह के आकाश पर दिखाई देने वाला था। इसलिए भारतीय वैज्ञानिक सवेरे से ही अपने यान में विभिन्न उपकरणों को लगाने में व्यस्त था। उसके साथ नितिकाशा भी सहयोग कर रही थी। उसने दूरमारक-प्रक्षेपास्त्र, ध्वनिसकेतक प्रक्षेपास्त्र, अग्निवर्षक, लक्ष्यवेधक, इच्छाचारी आदि सारे वैज्ञानिक, रासायनिक और जैविक आयुध अपने यान में यथा-स्थान रख लिये। अपने यान को भी उसने अग्नि-अस्त्र-रोधक बना लिया था।

शाम होते-होते अपने सारे कार्यों से निश्चिन्त होकर अंजरेकर अन्तरिक्षवेधी दूरबीन लेकर यो ही इधर-उधर देखने लगा तो वह चौक पडा।

उसने पास खडे रूसी वैज्ञानिक को बुलाकर उसकी आँखें दूरबीन के लैस पर लगादी। फिर तो एक के बाद एक सारे वैज्ञानिक दूरबीन से चिपक गये।

चीनी वैज्ञानिक ने प्रश्न किया—शनि ग्रह पर उतरने वाले ये लोग किस ग्रह के हो सकते है?

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने दूरबीन पर आँखें गढाते हुए कहा—ये लोग भी वैज्ञानिक उपकरणो से लैस है।

भारतीय वैज्ञानिक ने दूरबीन सम्हालते हीं कहा—अरे, यह तो ऊर्जा संचय-केन्द्र स्थापित कर रहे हैं।

यह सुन जर्मनी, रूस और चीन के वैज्ञानिक फिर दूरबीन पर लपके।

भारतीय वैज्ञानिक के पास आकर अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा—यह क्या हो सकता है?

—कुछ समझ मे नही आया। सप्ताह में एक बार तीन घण्टे के लिए शनि ग्रह से जाती हुई सौर-ऊर्जा को बीच में ही सचय करने का कार्य कौन कर सकता है?

स्टेनले बोली—शनि ग्रह स्वय इस अतिरिक्त ऊर्जा का सचय कर सकता है।

—वह दिन की इतनी अधिक ऊर्जा के बाद इस ऊर्जा का क्या करेगा ? नितिकाशा ने पूछा।

जर्मन वैज्ञानिक ने कहा—नितिकाशा का निश्कर्प सही है।

चीनी वैज्ञानिक ने कहा--कह काम निश्चित ही किसी अन्य ग्रह का है।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने पूछा—क्या हम लोग वहाँ चलकर जानकारी हासिल नहीं कर सकते ?

—जानकारी तो हासिल कर सकते हैं लेकिन क्या वो लोग इस चोरी की जानकारी हमें देंगे ? और क्या हमें अचानक देख हमला नहीं कर देंगे ? रूसी वैज्ञानिक ने आशंका उछाली।

--यह तो बड़ी असमंजस की स्थिति हो गई। अब हम अपने यान का प्रयोग भी प्रकाश में नहीं कर पायेंगे क्योंकि हमारा यान स्पष्टतः उनकी पहुँच में होगा। भारतीय वैज्ञानिक ने परिस्थिति का विवेचन करते हुए कहा।

—फिर क्या सोचते हो तुम ? रूसी वैज्ञानिक ने पूछा।

—मैं अभी उड़ता हूँ। वे शायद हमसे दो सौ किलोमीटर के फासले पर हैं। मैं उनके क्षेत्र में पहुँच कर रेडियो सम्पर्क स्थापित कर उनसे वहाँ उतरने की इजाजत माँगता हूँ। भारतीय वैज्ञानिक ने कहा।

--इसमें खतरा भी हो सकता है। अमेरिकी वैज्ञानिक बोला।

—खतरा कैसा ? यदि उन्होंने आज्ञा दी तो ठीक, नहीं तो आगे बढ़ जाऊँगा।

—और अगर वे तुम्हारे उतर जाने पर कोई अभद्र व्यवहार करें तो ? जर्मन वैज्ञानिक ने पूछा।

--पूरा ऊर्जा संचय-केन्द्र जलाकर आ जाऊँगा। भारतीय वैज्ञानिक ने मुसकराते हुये कहा।

नितिकाशा ने पास आते हुये पूछा—इस अभियान में कौन-कौन जायेंगे ?

उत्तर दिया स्टेनले ने—मैं जा रही हूँ अँजरेकर के साथ।

भारतीय वैज्ञानिक बोला—नही, मेरे साथ कोई नही जायेगा। सब यही रहकर मेरे सदेश की प्रतीक्षा करेंगे।

बाकी वैज्ञानिक कुछ सोचते-समझते कि अंजरेकर यान ले आसमान की ओर उड़ गया।

अब अंतरिक्षवेधी दूरबीन रूसी वैज्ञानिक के हाथ में थी। अन्य वैज्ञानिकों ने छोटी-छोटी दूरबीन आँखो पर लगा रखी थी।

रूसी वैज्ञानिक बोला—अंजरेकर का यान अभी आकाश में ही मँडरा रहा है। शायद उसे उतरने की अनुमति नहीं मिली है। अब वह आगे बढ गया है। ऊर्जा संचय-केन्द्र वाले शायद ज्यादा चौंकन्ने हो गये हैं।

दूरबीन से निगाहे हटाते हुए रूसी वैज्ञानिक ने कहा—उसे आगे नही जाना चाहिए था।

सारे वैज्ञानिक भावहीन आँखो से कभी दूरबीन को, कभी आकाश को देखने लगे कि अकस्मात् आसमान सूर्य की रोशनी से जगमगा उठा।

रूसी वैज्ञानिक ने दूरबीन से देखा कि ऊर्जा संचय-केन्द्र सक्रिय हो उठा था। प्रकाश की एक रेखा आकाश से उस केन्द्र तक सीधी आ रही थी।

एक-एक कर प्रत्येक वैज्ञानिक ने, दूरबीन से, वह दृश्य देखा। सभी वैज्ञानिक एक ही निश्कर्ष पर पहुँचे कि वह सचय-केन्द्र किसी अन्य ग्रह ने स्थापित किया है।

तभी नितिकाशा ने पूछा—उस यान का क्या हुआ?

सारे वैज्ञानिक फिर अपनी-अपनी दूरबीन लेकर सक्रिय हो उठे लेकिन दूर तक वह यान नजर नही आ रहा था।

नितिकाशा ने अपनी भरी आँखें, गर्दन मोडकर, पोंछली। आँसुओं का जब मन हुआ वे आँख मे झिलमिलाये हैं, उन्होंने किसी प्रकार की, कोई पावन्दी कभी नही मानी।

चीनी वैज्ञानिक बोला—वो भाई पूरी प्रकाश-अवधि तक कोई न कोई अध्ययन करके लौटेगा। वह गया तो अत्यन्त महत्वपूर्ण यात्रा पर है किन्तु अकेला चला गया, यही कष्टकारी बात है।

—वह धुन का धुनी है, जो ठान लेता है करके रहता है। रूसी वैज्ञानिक ने कहा।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—हमारे बीच ऐसे कर्मठ वैज्ञानिक का होना बहुत जरूरी था।

ब्रिटिश वैज्ञानिक बोला—क्या हम लोग उसकी खोज में निकलें ?

—नहीं। प्रकाश के समाप्त होने तक हमें उसके लौटने या किसी संदेश की प्रतीक्षा करनी चाहिए। जर्मन वैज्ञानिक ने कहा।

इसके बाद आकाश पर प्रकाश प्रखर हो उठा और शनि ग्रह पर पृथ्वी के वैज्ञानिकों के बीच मौन मुखर हो उठा।

सभी के हृदयों में सनसनी थी। थोड़ा भय था। आशंका थी। वैज्ञानिकों सहित पृथ्वी का सुलगता यान अभी तक उनकी निगाहों में समाया हुआ था। अज्ञात भय की अधिकता कभी-कभी जीवित देह सहन नहीं कर पाती। इसीलिए चीनी वैज्ञानिक उन बोझिल क्षणों के भारीपन को दूर करने के उद्देश्य से बोला—मुझे लगता है, अँजरेकर किसी ग्रह पर उतर गया है।

—बिलकुल। इतनी देर तक वह आकाश में रह ही नहीं सकता। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने समर्थन करते हुए कहा।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने शंका प्रस्तुत करते हुए कहा—लेकिन यों अचानक किसी ग्रह पर उतरना भी ठीक नहीं है।

—किसी न किसी को तो पहल करनी ही थी। जर्मन वैज्ञानिक ने समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा।

रूसी वैज्ञानिक ने मर्म सुलझाते हुए कहा—बात पहल की नहीं है, जान जोखिम में डालने की है और इसमें भारत का कोई मुकाबला नहीं।

भारत की मिट्टी की व्याख्या करते हुए स्टेनले ने कहा—सच है, पहले अपने देश की खातिर और अब अपनी पृथ्वी के लिए मर मिटने का जज्बा भारत की मिट्टी में कुछ ज्यादा ही रमा-घुला है।

नितिकाशा ने धीरे से कहा—अब तो यह पूरी पृथ्वी में ही समा गया है। पहले तो वास्तव में भारत शिरोमणि था लेकिन अब तो सभी

पृथ्वी-पुत्र अपनी पृथ्वी के लिए सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर हो उठे हैं। लेकिन हाँ, ये भारतीय वैज्ञानिक वास्तव में कुछ अलग ही है।

—ठीक कहा तुमने। पहले अंतरिक्ष-केन्द्र से खोजी यान लेकर भागा था। फिर शनि ग्रह पर उतरते ही प्रकाश देखकर उड़ लिया और आज फिर सिर हथेली पर रखकर चल दिया। चीनी वैज्ञानिक ने कहा—वास्तव में उसका साहस अनुपमेय है।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने कहा—उत्साह की अति कभी-कभी अनहोनी कर डालती है।

—उत्साह की अतिशयता जब दुस्साहस बन जाती है तब वह स्वप्न-वृक्ष को निर्वंशी कर देती है। जर्मन वैज्ञानिक ने मनोविज्ञान की व्याख्या करते हुए कहा।

रूसी वैज्ञानिक बोला—हमारे वैज्ञानिक में उत्साह है, नये क्षितिज निर्माण करने की क्षमता है। वह दिशा-बोध प्राप्त करके ही लौटेगा। सकल्प कभी लक्ष्य-भ्रष्ट नहीं होता।

—मुझे तो ऐसा लगता है कि वह गलती से वैज्ञानिक बन गया है। वह स्वप्नजीवी कवि होता तो अधिक सफल होता। नितिकाशा ने आकाश देखते हुए कहा।

—भविष्य का आकाश, कवि की दृष्टि के साथ चलकर ही, देखा जा सकता है। स्टेनले ने इतना कहा और आकाश पर उभरा प्रकाश बुझ गया।

तारों भरे आकाश ने वैज्ञानिकों की आँखों को भर दिया। अब मन की चिन्ता चेहरों पर उभरने लगी थी। किसी बात को छिपाने के लिए, खुद को, खुद से छिपाना पड़ता है।

पृथ्वी के नियन्त्रण-केन्द्र से प्राप्त सूचना, सचमुच में, चौंकाने वाली थी। संयुक्त राष्ट्र संघ के अध्यक्ष इसके लिए सारे राष्ट्रों की बैठक नहीं बुलाना चाहते थे। यही परामर्श उन्हें प्रमुख राष्ट्रों ने भी दिया था क्योंकि बैठक बुलाने से छोटे राष्ट्रों का अहित हो सकता था। वे अधिक भयभीत हो सकते थे। अज्ञात भविष्य वर्तमान पर भी बहुत भारी पड़ता है। इसलिए आठ राष्ट्राध्यक्षों ने संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय पर ही सचिव स्तर की बैठक आयोजित करने की बात तय करली क्योंकि अभी शनि ग्रह पर स्थापित संकेत केन्द्र से पूरा विवरण प्राप्त होना था। इसलिए प्रारम्भिक चर्चा और व्यवस्था की रूपरेखा निश्चित करने के लिए इस बैठक का आयोजन किया गया था।

बैठक के आरम्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव ने कहा—पृथ्वी पर इतना बड़ा संकट आज तक कभी नहीं आया। इस संकट ने जहाँ प्राणलेवा पीड़ा दी है वहाँ ऐतिहासिक उपलब्धि भी हुई है कि आज सारी पृथ्वी एक परिवार बन चुकी है और इस संकट के पश्चात् ऐसी संगठित पृथ्वी पर कोई संकट फिर कभी नहीं आ सकेगा।

अमेरिकी सचिव ने कहा—अज्ञात ग्रह से अंतरिक्ष-युद्ध लड़ने के लिए बहुत सोच-विचार कर व्यवस्था करनी होगी।

रूसी सरकार के प्रतिनिधि ने कहा—हमारे वैज्ञानिक उस ग्रह की शक्ति का आकलन कर जब रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे तब उस पर विधिवत् चर्चा होकर दिशा-निर्धारण हो सकेगा।

—बात चर्चा की नहीं है। हमें तय यह करना है कि यह अंतरिक्ष युद्ध पृथ्वी पर रहकर लड़ा जाना चाहिए या अंतरिक्ष में जाकर। चीन के प्रतिनिधि ने एक सहज प्रश्न उछाला।

फ्रांसिसी सचिव ने कहा—युद्ध के लिए तो हमें अंतरिक्ष में ही पड़ाव डालना होगा।

हमें शनि ग्रह से रिपोर्ट मिली है। इसका अर्थ यह है कि वह ग्रह शनि ग्रह से भी कहीं आगे स्थित है। इसलिए सीधी सी बात है कि हमें यह युद्ध शनि ग्रह पर अपना केन्द्र स्थापित कर लड़ना होगा। जापान सरकार के वरिष्ठ अधिकारी ने कहा।

इसके अतिरिक्त हमें यह भी सुनिश्चित करना पड़ेगा कि हमारी आकाशगंगा के कितने विकसित और वैज्ञानिक क्षमता से युक्त ग्रह उस अज्ञात ग्रह की सहायता करते हैं। ब्रिटिश अधिकारी ने अपनी बात कही।

—यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। जर्मन प्रतिनिधि बोला—शत्रु की क्षमता से पूरी तरह परिचित होकर ही हमें तैयारी करनी होगी।

भारतीय प्रतिनिधि बोला—आज पृथ्वी को सूर्यविहीन हुए कितना समय हो गया है। पूरी पृथ्वी उजाड़ हो गई है। अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं, लाखों पृथ्वीवासी। हमारे निष्णात वैज्ञानिकों को जलाकर मारा है उस ग्रह ने। इसलिए अब हम और विलम्ब सहन नहीं कर सकते। यह प्रतिष्ठा का नहीं, जीवन-मरण का प्रश्न है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के महा सचिव ने कहा—वास्तव में पूरी पृथ्वी की पीड़ा को बहुत सही रूप में, भारत ने, व्यक्त किया है। हम सूचना, सर्वेक्षण और आँकड़ों के लिए और समय नष्ट नहीं कर सकते।

—तो आप ही बतायें कि हम क्या करें? अमेरिकी सचिव ने पूछा।

उत्तर दिया भारतीय प्रतिनिधि ने—पृथ्वी स्थित अपने नियन्त्रण-केन्द्र को निर्देश दिये जायें कि वे शनि ग्रह पर स्थापित अपने संकेत-केन्द्र से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखे और अपने वैज्ञानिकों से स्पष्ट निवेदन करदे कि पूरा विवरण भेजने में एक सप्ताह से अधिक विलम्ब अब सहन नहीं होगा। सूर्य की वापसी हमें किसी भी मूल्य पर चाहिए।

सारे प्रतिनिधियों ने एकमत होकर भारत के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव को इस दिशा में आवश्यक व्यवस्था करने के लिए अधिकृत कर दिया गया और साथ ही यह भी निर्णय ले लिया गया कि दो सप्ताह पश्चात् वे सब प्रतिनिधि अपने राष्ट्राध्यक्षों के साथ यहाँ मिलेंगे।

□ □

अँजरेकर ने ऊर्जा संचय-केन्द्र के ऊपर आकाश में पहुँच रेडियो सम्पर्क स्थापित कर कहा—हम भी इसी सूर्य से अपने ग्रह के लिए ऊर्जा संचय कर रहे हैं। आप क्या शनिग्रह के लिए यह संचय कर रहे हैं ?

—नहीं, हम लोग अपने ग्रह के लिए ऊर्जा एकत्र कर रहे हैं जहाँ यह प्रकाश जा रहा है। आपका कौनसा ग्रह है ?

एक क्षण अँजरेकर चकराया फिर सम्हलते हुए बोला—सेल्यूट और आपका ?

—जिब्राटो।

अँजरेकर के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना थी। अब उसे वहाँ उतरना व्यर्थ लगा इसलिए वह यान को उस प्रकाश से ऊपर उठा ले गया और उस प्रकाश की सीध में आगे बढ़ता चला गया।

जहाँ प्रकाश सीधा धरती पर जा रहा था, वह वहीं आकाश में थोड़ी देर रुक गया। बर्फ की पहाड़ियों के बीच में बसा था वह ग्रह। यदि प्रकाश की किरणें सीधी वहाँ न जा रही होतीं तो, सहज रूप में, वह ग्रह दिखाई ही नहीं पड़ता।

अँजरेकर सूर्य के प्रकाश में उस ग्रह पर उतरना नहीं चाहता था इसलिए थोड़ा आगे बढ़कर उसने अपना यान बर्फ के एक समतल फर्श पर उतार लिया।

बहुत देर तक वह यान में बैठा-बैठा ही अपनी कार्य-प्रणाली को अंतिम रूप देता रहा। फिर उसने लक्ष्यवेधक और इच्छाचारी जैसे कुछ विशेष आयुध तथा प्रकाश-किरण अपने साथ लिये और यान से बाहर आकर उस ग्रह की ओर बढ़ने लगा। समतल को पारकर वह बर्फ के पहाड़ पर चढ़ गया और फिसलते हुए उसकी तलहटी तक पहुँच गया। फिर खड़ा होकर वह चलने लगा। उसे दिशाभ्रम होने का डर था इसलिए वह सूर्य छिपने से पहले ही उस ग्रह तक पहुँच जाना चाहता था।

वह तेजी से किन्तु सावधानीपूर्वक चल रहा था। बर्फ के किसी भी नाले में गिरकर वह जीवित मृत्यु नहीं चाहता था। सामने बर्फ का एक और विशालकाय पहाड़ आया तो वह उस पर भी चढ़ने लगा। दो-चार बार उसके पाँव डगमगाये। बर्फ टूटकर गिरी। वह फिसला भी लेकिन

फिर सम्हल कर चढने लगा और अन्ततः वह उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया। नीचे वह ग्रह था। सूरज की किरणें वर्फ के उस गाँव को रंग-बिरगा वना रही थी।

उसने छोटी दूरवीन से देखा—सौर-ऊर्जा को एकत्र करने के लिए सैंकड़ों वैज्ञानिक काम कर रहे थे। कुछ नई क्यारियाँ भी वनाई गई थी। बर्फ के फर्श को काटकर वहाँ हरियाली भी बिछाई गई थी। वर्फ को गला, पानी वनाकर, एक तालाव में उसे इकट्ठा होते हुए उसने देखा। एक बड़े मकान की छत पर उसने तारों का जाल बिछा देखा। एन्टीना देखा। संकेत-ग्रहरण करने के अनेक उपकरण देखे। अँजरेकर को लगा कि पृथ्वी से तो अधिक विकसित विज्ञान इस छोटे से ग्रह के पास है।

वह अचानक चौंका क्योंकि वह आधे से अधिक बर्फ में धँस गया था। किसी प्रकार हाथो से वर्फ हटाकर वह धीरे-धीरे पहाड़ से उतरने लगा। यहाँ वह फिसलकर किसी आदमी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना नही चाहता था।

नीचे आकर वह बड़े मकान के पिछवाड़े की दिशा मे जाने के लिए दाहिनी ओर चल पडा। अब वह बहुत चौकन्ना था। वैसे वह किसी भी खतरे के लिए तैयार था लेकिन उसका यान काफी दूर और अँधेरे में था और भागते वक्त रास्ता गुम होने का भी डर था। वह प्रकाश-किरण का प्रयोग कर पूरे ग्रह को भी चौंकाना नही चाहता था। इसलिए वह चुपचाप उस बड़े मकान के पिछवाड़े जाकर खडा हो गया। उसे अन्दर मशीनों के चलने की आवाज सुनाई देने लगी। उस मकान मे कोई खिडकी नही थी। बर्फ के पहाड़ के पास बने होने के कारण खिड़की का न होना वाजिब ही था। उसने मकान को छूकर देखा। वे दीवारें शायद किसी धातु की थी जिन पर किसी अन्य चमकीली धातु का घोल चढा हुआ था जिससे उसका रूप निखर उठा था।

वह वहाँ से आगे वढ गया। अब एक से मकानो का सिलसिला शुरू हो गया था। वह मकानो के पिछवाडे को छूता हुआ आगे वढता चला गया। आखरी मकान पर पहुँच वह रुक गया। उसने अन्दर की टोह ली लेकिन उसे कोई आवाज सुनाई नही दी। वह वायें मुडकर मकान के दरवाजे पर पहुँच गया। दरवाजा खुला हुआ था। उसने धीरे से अन्दर

झाँका लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं दिया। वह इधर-उधर देखता हुआ अन्दर घुस गया। उसने देखा, बगल वाले कमरे में, नीचे फर्श पर एक चमकीली कटोरी में कुछ सूखे फल रखे हुए थे और दूसरी कटोरी में कोई पेय पदार्थ था।

अँजरेकर ने इधर-उधर पीने का पानी तलाशा लेकिन कहीं उसे पानी नजर नहीं आया। उसने अनुमान लगाया कि कोई व्यक्ति वहाँ बैठा होगा और ग्रह पर प्रकाश-किरण आते ही भाग गया होगा, ऊर्जा-संचय के कार्य में सहयोग करने के लिए। उसने वह कटोरी उठाई और एक घूँट चखा। वह कोई मादक द्रव था। मीठा, सुगंधित और पीने में स्वादिष्ट। अँजरेकर ने कटोरी वहीं रखदी और एक सूखा फल उठाकर मुँह में डाल लिया।

उस कमरे से निकल वह जैसे ही बाहर आने को हुआ कि चारों ओर अँधेरा छा गया। आकाश का सूरज अस्त हो गया था।

थोड़ी देर आँख बन्द करके अँजरेकर वहाँ एक ओर खड़ा हो गया जिससे वह स्वयं को अँधेरे में कुछ देख पाने के लिए सक्षम बना सके। अँधेरा, अँधेरे को, आसानी से पहचान लेता है। तभी उस ग्रह के रास्तों पर रोशनियाँ चमक उठीं। सामने वाले एक-दो बड़े घर भी प्रकाशित हो उठे। यह सौर-ऊर्जा का चमत्कार था। अभी अँजरेकर कुछ निर्णय कर पाता कि उसे सामने से कुछ लोग आते दिखाई दिये। वह उस मकान की आड़ में हो गया।

दो आदमी उसके सामने से आते हुए अन्दर घुसे और उसी कमरे में चले गये जहाँ से वह अभी-अभी आया था। उसने छिपते-छिपते देखा कि एक व्यक्ति के हाथ से शोला भड़का और उसके दूसरे हाथ में पकड़ी बत्ती जल उठी।

उसके दायें हाथ में कोई वैज्ञानिक उपकरण था जिससे वह आग की लपट निकली थी और बायें हाथ में किसी जानवर के तेल में भीगी हुई बत्ती थी जिसके जलते ही उस व्यक्ति ने उसे एक चौड़े मुँह के पात्र में रख दिया। घर क्षीण प्रकाश से भर उठा। कभी अँधेरों में जुगनू भी सूरज जैसा सुहाता है।

दूसरे व्यक्ति ने मादक-द्रव का पात्र उठा एक लम्बा घूँट लिया और वह पात्र पहले वाले व्यक्ति को पकड़ा दिया। उसने एक घूँट लेकर

वह पात्र वापिस कर दिया। उस पात्र को घूरते हुए वह बोला—यह सौर-ऊर्जा का धन्धा ज्यादा दिन तक नहीं चलने का।

—क्यों ? क्या बात हो गई ? पहले व्यक्ति ने सूखे फल का एक टुकडा उठाते हुए पूछा।

वह व्यक्ति धीरे से बोला—शनि ग्रह पर नव स्थापित अपने ऊर्जा-संचय-केन्द्र से किसी व्यक्ति ने यान में बैठे बात की थी।

—फिर ?

—उसने पूछा, तुम यह ऊर्जा-संचय किस ग्रह के लिए कर रहे हो?

—फिर क्या हुआ ?

—हमारे आदमी ने कह दिया, जिब्राटो के लिए।

—कैसी मूर्खता की उसने ? हिमशैल का नाम ले दिया होता। अपना नाम लेने से तो असली चोर का नाम लेना ठीक था।

—धीरे बोल। नशे में कही बात दीवारें दुहरा देती हैं।

—दीवारों के कान होते सुने थे। जबान होने की बात तुम से सुनी।

—बात, कहने के लिए नहीं, सुनने के लिए क्षमता चाहिए।

— मैं चुप हूँ।

—अपना विज्ञान-प्रमुख समरीनू भी बहुत दुःखी है। वह ग्रहपति के पास ही बैठा है।

—क्यों ?

—क्योंकि शनि ग्रह के संचय-केन्द्र की बात सुन वह यान जिब्राटो की तरफ बढ़ गया।

—जिब्राटो आता तो कभी का आ गया होता। वह हिमशैल का न हो ?

—और अगर हिमशैल का हुआ तो ?

—तो यह चोरी हो गई ना ? वह तो सप्ताह में तीन घण्टे के लिए हमारे ग्रह को प्रकाश देता है और हम अन्य ग्रह पर जाकर उसी प्रकाश का संचय कर रहे हैं।

—फिर क्या हो सकता है ?

—हिमशैल ग्रह प्रकाश देना बन्द कर सकता है।

—मतलब फिर जिन्नाटो पहले जैसा उजड़ा, वीरान और अँधेरे से घिरा ग्रह बन जायेगा।

—कौन जाने ?

अंजरेकर का काम पूरा हो चुका था। वह धीरे से वहाँ से निकला और जिस रास्ते आया था, उसी पर वापिस चलने लगा।

दूर से आ रहा प्रकाश उसके मार्ग की बाधा दूर कर रहा था। आदमी को सितारों की रोशनी भी कभी मंजिल का पता दे देती है।

उसने सम्हल कर पहाड़ उलांघा और फिसलता हुआ नीचे पहुँच गया। फिर उसने सम्हल-सम्हल कर समतल को पार किया और दूसरे पहाड़ पर चढ़ गया। यहाँ उसे एक-दो बार प्रकाश-किरण का उपयोग करना पड़ा। पहाड़ की चोटी पर पहुँच वह फिर फिसलता हुआ नीचे आ गया।

थोड़ी दूर पर उसका यान खड़ा था। वह बहुत थक चुका था। उसके पाँव उसका साथ छोड़ रहे थे। तन के हारने पर मन की शक्ति व्यक्ति से काम करवाती है। वह गिरते-पड़ते अपने यान तक पहुँचा, दरवाजा खोलकर अन्दर घुसा और गिर पड़ा।

अंजरेकर की जब आँख खुली तो उसने देखा—आकाश के बहुत ऊपर प्रकाश-किरण निर्बाध गति से आगे जा रही थी।

एक बार उसका मन हिमशैल ग्रह चलने को हुआ किन्तु फिर न जाने क्या सोचकर उसने अपना यान आकाश में उठाया और वापिस शनि ग्रह की ओर चल पड़ा।

□ □

शनि ग्रह पर सातों वैज्ञानिकों ने पूरी रात अपनी आँखों में काट दी। हरेक की निगाहों में अंजरेकर का चेहरा घूम रहा था।

नितिकाशा एक बार तो फूट-फूट कर रो ली थी। सारे वैज्ञानिक हतप्रभ थे। किसी को कुछ नहीं सूझ रहा था। तभी चीनी वैज्ञानिक ने कहा—अगर अंजरेकर के साथ कोई दुर्घटना हो गई तो समझ लीजिए ये मिशन समाप्त हुआ। हम कभी भी अपने सूरज को मुक्त नहीं करा पायेंगे।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने कहा—मेरा दिल नहीं मानता। वह इतना निपुण वैज्ञानिक है कि दुर्घटना ग्रस्त हो ही नहीं सकता। कोई यांत्रिक खराबी अलबत्ता हो सकती है।

—यांत्रिक खराबी ? प्रश्न ही नहीं उठता। उसने दिन भर अपने यान की खुद सार-सम्हाल की थी। स्टेनले ने कहा।

रूसी और अमेरिकी वैज्ञानिक अब भी बड़ी आशा से आकाश को टकटकी लगाये देख रहे थे। तभी संकेत-केन्द्र का बल्ब जलने-बुझने लगा।

सारे लोग उसके निकट आ गये। जर्मन वैज्ञानिक बोला—जरूर यह संदेश अंजरेकर का है।

जैसे ही रोशनी बुझी स्टेनले ने फुर्ती से वह कागज निकाला। उसे देखते ही वह बोली—यह तो नियमण-केन्द्र का सन्देश है। आठों राष्ट्रों की उच्च स्तरीय बैठक ने एक सप्ताह में पूरी रिपोर्ट माँगी है जिससे राष्ट्राध्यक्षों की बैठक में उचित निर्णय लेकर अंतरिक्ष युद्ध की व्यवस्था की जा सके।

रूसी वैज्ञानिक बोला—अब तो अंजरेकर का आना बहुत आवश्यक है।

जर्मन वैज्ञानिक बोला—वह आयेगा और निश्चित आयेगा। उसे कुछ नहीं हो सकता।

—इतने निश्चय के साथ कैसे कह सकते हैं आप ? रूसी वैज्ञानिक ने पूछा।

—मन की बात सच तो होती है लेकिन प्रमाणित नहीं की जा सकती। जर्मन वैज्ञानिक ने कहा।

अमेरिकी वैज्ञानिक बोला—उसका यान कहीं भटक सकता है।

गैस

—नहीं, उसका यान भटक नहीं सकता। वो सारी सूचनायें लेकर न की पहली किरण के साथ लौट आयेगा। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने आंख हुए कहा।

—सच ? क्या तुम सच कह रहे हो ? निनिकाशा ने उसे झक-झोरते हुए पूछा।

जर्मन वैज्ञानिक धीरे से बोला—उसके लिए तुम्हारा प्यार हम सब जानते हैं। वो है ही प्यार करने के काबिल। हम सब भी उसे मन से चाहते हैं।

तभी चीनी वैज्ञानिक दूरबीन आंखों पर लगाते हुए चिल्लाया—आ गया! वो आ गया।

निनिकाशा ने उसके हाथों से दूरबीन झपट कर जो ऊपर देखा तो आकाश उसकी आंखों में समा गया। सच है, आकाश आंखों में ही सिमट सकता है।

और अंजरेकर के यान ने शनि ग्रह की धरती को छू लिया।

□ □

सम्राट ने आज सुबह-सुबह ही तंदुल को बुलवा लिया। तंदुल ने आकर जैसे ही प्रणाम किया, सम्राट बोले—तुम्हारा पृथ्वी ग्रह तो मर गया लगता है, तंदुल।

तंदुल चुप रहा।

सम्राट ने फिर कहा—हमें पृथ्वी ग्रह से ऐसी आशा नहीं थी। हमें तो विश्वास था कि जल्दी ही पृथ्वी का सूरज वापिस करना पड़ेगा।

—एक दूसरे की आँखों में किरकिरी बने घूमते लोग अपनी मृत्यु से पहले ही मर जाते हैं, सम्राट। तंदुल ने विनयपूर्वक कहा।

उस समय चेटिन, कुंदू और शेटिन भी सम्राट के पास बैठे थे।

सम्राट के चुप होते ही सम्पर्क-कक्ष-प्रमुख चेटिन ने कहा—सम्राट ! जिव्राटो ने हमारा विश्वास तोड़ा है।

—विश्वास तोड़ा है ? कैसी बात कर रहे हो, चेटिन ! और वो भी जिव्राटो के लिए ? सम्राट ने दृढ़ता पूर्वक कहा।

चेटिन बोला—सम्पर्क-कक्ष बिना वास्तविकता जाने कोई भी सूचना सम्राट को देना अपराध समझता है। हमें यह विश्वस्त जानकारी है कि जिव्राटो ने शनि ग्रह पर भी कोई ऊर्जा संचय-केन्द्र स्थापित कर रखा है, जहाँ से वो चोरी-चोरी उर्जा का संचय कर रहा है।

—तुम्हारे पास कोई प्रमाण है ? सम्राट ने पूछा।

—शोध कक्ष प्रभारी के पास जिव्राटो के व्यक्तियों की चर्चा का अभिलेख है। चेटिन ने कहा।

सम्राट ने ताली बजाते हुए कहा—केरिन को बुलवाओ। फिर सम्राट ने कहा—हमें जिव्राटो से ऐसी आशा नही थी। आशा की कसौटी पर न व्यक्ति खरे उतरते हैं, न सपने।

तंदुल बोला—सम्राट ! उपकार को भूल जाना सृष्टि के संस्कार मे है।

तभी केरिन ने आकर सिर झुकाया।

सम्राट ने पूछा—जिव्राटो के बारे में क्या समाचार है ?

केरिन ने विनत भाव से कहा—सम्राट ! सम्पर्क सूत्रों की शोध करते समय हमें एक यान के गुजरने और उतरने की आवाज और एक वार्तालाप सुनाई दी है।

—यान तो जिव्राटो का हो सकता है ? सम्राट ने पूछा।

—नही, सम्राट। ऐसा कोई प्रमाण नही मिला है किन्तु यह निश्चित है कि वह यान जिव्राटो का नही था अन्यथा जिव्राटो के निवासियों की वार्तालाप में उसका उल्लेख होता। उन्होंने तो उसे हमारे ग्रह का बताया है। केरिन ने धीरे से कहा।

—यह तो गम्भीर समस्या है। वह यान किस ग्रह का हो सकता है ? थोड़ा रुककर सम्राट ने पूछा—क्या हम वह वार्तालाप सुन सकते हैं ?

केरिन ने सम्राट के कक्ष में लगे कुछ उपकरणों को शोध-कक्ष से जोड़ा और वार्तालाप सुनाई देने लगी।

और जब सम्राट ने यह सुना—कैसी मूर्खता की उसने ? हिमशैल का नाम ले दिया होता। अपना नाम लेने से असली चोर का नाम लेना ठीक था तो वे चिल्लाते हुए बोले—बंद करो यह बकवास। आदमी से अधिक कृतघ्न कौन हो सकता है जो साया देने वाले हरे वृक्ष को अपने हाथ से काट डालता है। क्या किया जाये इस कृतघ्न ग्रह का ? क्यों न इसे नष्ट कर दिया जाये ?

शेटिन ने धीरे से कहा—सम्राट ! आवेश में लिये गये निर्णय आत्मघाती होते हैं। पहले इस बात की पूरी छानबीन करली जाये तो श्रेष्ठ रहेगा।

—अब क्या छान-बीन करनी शेष रह गई ? सम्राट ने कटु स्वर में पूछा।

कुन्दू बोला—शनि ग्रह पर ये लोग काम कर रहे हैं, सम्राट ! इनकी योजना क्या है, इसका पूरा ज्ञान प्राप्त करके ही कोई कदम उठाना ठीक रहेगा।

सम्राट थोड़ी देर यों ही, हाथ बाँधे, टहलते रहे फिर अचानक रुककर, थोड़ा मुसकराते हुए, बोले—केरिन ! तुम तंदुल को फिर साथ लेकर शनि ग्रह जाओ और सारी स्थिति का ज्ञान प्राप्त करके लौटो। और हाँ, तंदुल ! इस बार तुम भी केरिन के साथ रहोगे, यान में बैठकर उसके लौटने की, जिन्दगी भर, प्रतीक्षा नहीं करोगे।

केरिन ने शरमा कर और तन्दुल ने सकुचा कर अपने सिर झुका दिये।

□ □

अँजरेकर अपने यान से उतरता इससे पहले ही सातों वैज्ञानिकों ने उसे घेर लिया। जब उसने यान का द्वार खोला तो जर्मन वैज्ञानिक ने

हाथ बढ़ाकर, उसे सहारा देकर, नीचे उतारा। उसका शरीर अभी तक थकान के बोझ तले दबा हुआ था।

सारे वैज्ञानिक उसे सुनना चाहते थे लेकिन वह, धीरे-धीरे, सहारा लेकर चलता हुआ अपने केन्द्र पर आकर लेट गया। स्टेनले ने उसे पानी लाकर दिया जिसे एक साँस में ही वह पी गया।

अभी तक कोई कुछ नहीं बोला था। कभी बात चुभती है, कभी मौन अखरता है। अंजरेकर का मौन सबको साल रहा था। तभी अंजरेकर ने धीरे से उठते हुए कहा—स्टेनले ! नियन्त्रण-केन्द्र से सम्पर्क जोड़ो।

बिना कोई प्रश्न किये नियन्त्रण-केन्द्र से सम्पर्क जोड़ दिया गया। अंजरेकर ने कहा—आप बिना कुछ पूछे रिपोर्ट रिकार्ड करलें। यह शनि ग्रह का संकेत-केन्द्र है।

और अंजरेकर ने शनि ग्रह पर ऊर्जा-संचय-केन्द्र द्वारा जिब्राटो की चोरी और हिमशॅल ग्रह का विस्तार से वर्णन किया। इसी के साथ उसने कहा—इस ग्रह के दुस्साहस और पृथ्वी के वैज्ञानिकों के भीषण अग्नि-संस्कार को ध्यान में रखते हुए, अपने सूर्य की मुक्ति के साथ, हिमशॅल ग्रह को दण्डित करने की शीघ्र व्यवस्था की जानी चाहिए।

थोड़ा रुककर अंजरेकर बोला—जिब्राटो को प्रकाश देना हिमशॅल जल्दी ही बन्द कर देगा इसलिए हम जिब्राटो को अपना केन्द्र बनाकर हिमशॅल ग्रह का नाम अपनी आकाशगंगा से सदैव के लिए मिटा देंगे। दण्ड तभी दण्ड होता है जब वह प्रमाण बन सके अन्यथा क्षमा का आश्रय लेना सर्वोत्तम है। किन्तु इस ग्रह को क्षमा नहीं किया जा सकता। ऑपरेशन हिमशॅल का बेस शनि ग्रह बनाया जा सकता है और अग्रिम चौकी जिब्राटो।

इतना कहकर अंजरेकर चुप हो गया तो नियन्त्रण-केन्द्र ने पूछा—देट्स आल।

और अंजरेकर ने धीरे से कहा—ओवर।

सारे वैज्ञानिक अंजरेकर को घेरकर बैठ गये। नियन्त्रण-केन्द्र को प्रेषित सूचना सुनने के बाद अमेरिकी वैज्ञानिक बोला—तुम इतिहास में अमर हो गये, अंजरेकर ! आज तुमने वह काम किया है जिसने पृथ्वी के इतिहास में सारे वैज्ञानिको को अछूता गौरव प्रदान किया है।

रूसी वैज्ञानिक ने कहा—तुमने असम्भव को सम्भव कर दिखाया। तुमने सिद्ध कर दिया—इच्छा-शक्ति प्राण-शक्ति से बलवान होती है।

जर्मन वैज्ञानिक बोला—अब मैं भविष्यवाणी कर सकता हूँ, अँजरेकर जैसा वैज्ञानिक शताब्दियों में पैदा होता है।

चीन के वैज्ञानिक ने कहा—अब मैं दावे के साथ कह सकता हूँ—लगन और सतत साधना से अश्रुत व्यक्ति भी ख्याति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है।

ब्रिटिश वैज्ञानिक बोला—प्रबल इच्छा-शक्ति हो तो सूरज भी आँगन में सोना बिखेर देता है। अँजरेकर ने आज ऐसा ही काम किया है।

नितिकाशा धीरे से बोली—किसी व्यक्ति के आचरण से स्वयं को गौरवान्वित करने की प्रतीक्षा इतिहास को भी रहती है।

स्टेनले ने कहा—वाह ! नितिकाशा, तुम कवि तो बता रही थीं अँजरेकर को, और स्वयं कविता करने लगी।

अँजरेकर ने धीरे से कहा—कभी-कभी चादर भी तन को अपने रंग में रँग लेती है।

यह सुन सारे साथी एक साथ हँस पड़े। नितिकाशा सकुचा गई।

सभी वैज्ञानिकों ने भारतीय वैज्ञानिक को व्यक्तिगत रूप से बधाई , तभी अँजरेकर ने कहा—एक आदमी निरन्तर दूरबीन पर निगाहें जमाये रहे।

—क्यों……क्यों ? सभी ने एक साथ पूछा।

अँजरेकर ने कहा—मुझे आशंका है कि कुछ होगा। कोई बात देखो तो मुझे तुरन्त बताना, मैं अपने यान को वहाँ से हटाने जा रहा हूँ।

वैज्ञानिकों को लगा कि अँजरेकर किसी भावी क्षण को देख रहा है। वर्तमान की आँखें यदि कमजोर न हों तो वे भविष्य को पहले ही देख लेती हैं।

चीनी वैज्ञानिक ने दूरबीन सम्हाल ली।

□ □

सब वैज्ञानिक अंजरेकर से उसकी यात्रा के बारे में विस्तार से ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। इसलिए अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा—ये जिब्राटो ग्रह है कहाँ ?

अंजरेकर ने कहा—बर्फ के बीच में बसा एक टापू सा है, जिब्राटो ग्रह। मुश्किल से आठ सौ मकान होंगे और चार हजार के करीब आबादी होगी।

—इतना छोटा ग्रह ? जैसे अपनी पृथ्वी के किसी नगर का मौहल्ला ? रूसी वैज्ञानिक ने आश्चर्य से कहा।

—और विज्ञान में इतना प्रबल ? जर्मन वैज्ञानिक ने पूछा। तभी चीनी वैज्ञानिक चिल्लाया—अंजरेकर ! कोई यान आया है।

अंजरेकर ने भागकर दूरबीन पर अपनी आँखें लगादी। शेष वैज्ञानिक भी अपनी छोटी-छोटी दूरबीनों पर सक्रिय हो उठे।

अंजरेकर समझ गया कि यह यान जिब्राटो का नहीं है। वह गेंदनुमा यान था और उस पर सूर्य का गोला बना हुआ था। उसने सोचा—निश्चित ही यह यान हिमशैल ग्रह का होना चाहिए। तभी उन्होंने नई उपलब्धि के रूप में सूर्य को अपने ग्रह का प्रतीक मान लिया होगा।

यान का द्वार खोल सबसे पहले एक महिला उतरी और उसके बाद एक पुरुष।

पुरुष को देख अंजरेकर चौंक उठा। उसे एकाएक पुरानी घटना याद हो आई। सूरज की चोरी में किसी पृथ्वी ग्रह के निवासी के सहयोग की बात नियन्त्रण-केन्द्र ने बहुत पहले बताई थी जब वह किसी अदृश्य यान का पीछा करने गया था।

अंजरेकर ने नितिकाशा को बुलाकर कहा—कैमरा लटकाकर, हाथ में दूरबीन लेकर, तुम उन लोगों के सामने से निकलो। वे इस ग्रह के लिए नये है। तुम्हे देखकर वे कुछ जानकारी अवश्य प्राप्त करना चाहेंगे। तब तुम उन्हें अपने साथ यहाँ ले आना।

इसके बाद उसने स्टेनले से कहा—तुम इच्छाचारी आयुध लेकर नितिकाशा के पीछे जाओ और जब वे दोनों इनसे मिलें तो तुम उन्हे

अपने रेंज में रखना। यदि उनमें से कोई समझदार बनने की कोशिश करे तो बिना झिझक उसे जला देना।

दोनों वैज्ञानिक अपने निश्चित लक्ष्य की ओर चल दिये। अँजरेकर ने अपनी दूरबीन रूसी वैज्ञानिक को पकड़ाते हुए कहा—मैं अभी आया।

और अँजरेकर उसी ओर चल दिया जहाँ वो यान उतर कर खड़ा हुआ था।

अँजरेकर का सोचना एकदम सही था। जब नितिकाशा थोड़ी दूर ही गई थी, उसने किसी के पुकारने की आवाज सुनी। वह महिला का स्वर था। वह समझ गई कि उसे पुकारने वाली यान से उतरी वही महिला है तब भी उसने गर्दन घुमाकर चारों ओर देखा। हाथ से अपने पास बुलाती महिला को देख नितिकाशा उस ओर बढ़ गई।

नितिकाशा के पास पहुँचते ही उस महिला ने उससे कोई सवाल पूछा जिसके उत्तर में नितिकाशा ने हाथ के संकेत से अपना केन्द्र दिखा दिया और वह मुड़कर उसी केन्द्र की ओर चलदी।

तंदुल ने केरिन से पूछा—क्या यह जिन्नाटो की रहने वाली है ?

—नहीं, मुझे तो नहीं लगती। केरिन ने जाती हुई नितिकाशा की ओर देखते हुए कहा।

—क्या यह शनि ग्रह की है ?

—मुझे यहाँ की कोई जानकारी नहीं है।

—वहाँ चलना क्या ठीक रहेगा ?

—क्यों ? वो हमारा कुछ अहित करेंगे क्या ?

—अहित तो नहीं, लेकिन हम उनसे जाकर पूछेंगे क्या ?

—पूछना क्या है ? आपस में परिचय करना है।

—हम यहाँ परिचय करने नहीं आये हैं। तंदुल ने नितिकाशा द्वारा बताये केन्द्र की ओर देखते हुए कहा।

केरिन बोली—तंदुल। देखो, अपने काम की शुरुआत कहीं न कहीं से तो करनी ही पड़ेगी।

तंदुल बोला—मेरा विचार यह है कि हम यान में बैठकर रात होने की प्रतीक्षा करें। सूरज के प्रकाश में यहाँ आकर शायद हमने गलती की है।

—गलती ? वो कैसे ? केरिन ने पूछा।

—वो ऐसे कि जिब्राटो रात को ही ऊर्जा का संचय कर रहा है।

—फिर ?

—फिर। इस समय हम वहाँ जाकर क्या करेंगे ?

—करना क्या है, बस मिलना है।

—परिचय तो करना पडेगा ना ?

—तो उसमें कौनसी कठिनाई है। वे जिबाटो के हैं तो हम शनि ग्रह के।

—और यदि वे शनि ग्रह के हुए तो ?

—तो हम हिमशैल के।

—उन्होंने पूछा कि हम यहाँ क्या कर रहे हैं ?

—यान की खराबी दूर करने के लिए उतरे है।

—तंदुल हारकर बोला—अब तुम देख लेना, कहीं विपत्ति में न पड जायें।

—कैसे पड़ेंगे विपत्ति में ? यदि चर्चा अनुकूल न लगे तो लौट आयेंगे। इतना कह केरिन बोली—चलो। चलकर देखते तो हैं।

और अनमना सा तंदुल केरिन के पीछे-पीछे चल पडा।

अँजरेकर ने जब दोनों को अपने संकेत-केन्द्र की ओर जाते हुए देखा तो वह भागता हुआ अपने केन्द्र पर पहुँच गया। उसने हाँफते हुए कहा—वे लोग इधर ही आ रहे हैं इसलिए आप सब अन्दर चले जायें। केन्द्र के मुख्य कक्ष में दूरबीन पर बैठने के अतिरिक्त एक साथी और रहे। और हाँ, हम लोग शनि ग्रह के हैं। आकाशगंगा के नये नक्षत्रों की खोज कर रहे हैं।

भारतीय वैज्ञानिक की बात सब लोग तुरन्त समझ गये। रूसी वैज्ञानिक तो दूरबीन पर था ही, जर्मन वैज्ञानिक वहाँ और रह गया। बाकी सब विश्राम-कक्ष में चले गये।

तदुल और केरिन ने जब धड़कते दिल से संकेत-केन्द्र में प्रवेश किया तो किसी ने उनकी ओर ध्यान नही दिया। एक वैज्ञानिक दूरबीन से आकाश की ओर देखता रहा, दूसरा किसी यन्त्र की सुइयाँ घुमाता रहा।

उस मौन को तोड़ा केरिन ने—हम आपको नमस्कार करने आये हैं।

दोनों वैज्ञानिकों ने चौंककर उन्हें देखा और हाथ जोड़ दिये। इस बार तंदुल ने उन्हें गौर से देखते हुए पूछा—क्या आप पृथ्वी ग्रह के निवासी हैं ?

—पृथ्वी ग्रह ? जर्मन वैज्ञानिक बोला—नहीं, क्या आप पृथ्वी ग्रह से आये हैं।

—जी नहीं। केरिन ने कहा।

—तो फिर किस ग्रह से आये हैं आप ? रूसी वैज्ञानिक ने पूछा।

—आप कहाँ से ? केरिन ने पूछा।

—हमारा तो यही ग्रह है। जर्मन वैज्ञानिक ने कहा।

—शनि ग्रह ? केरिन ने कौतूहल पूर्वक पूछा।

—जी। रूसी वैज्ञानिक बोला।

—तो फिर, आप यहाँ क्या कर रहे हैं ? इस बार साहस करके तंदुल ने पूछा।

रूसी वैज्ञानिक ने दूरबीन से आँख हटाते हुए कहा—नये नक्षत्रों की खोज कर रहे हैं।

—ओह ! अच्छा हुआ जो आपसे मुलाकात हो गई। केरिन ने मुसकराते हुए कहा।

तंदुल बैठे-बैठे संकेत-केन्द्र देखने लगा। तभी रूसी वैज्ञानिक ने अचानक पूछा—आपके शुभ नाम ?

केरिन ने कहा—मुझे केरिन कहते हैं और ये हैं तंदुल।

तंदुल नाम सुनकर अन्दर अँजरेकर चौंक उठा। उसने अपने साथी वैज्ञानिकों से धीरे से कहा—मुझे यह आदमी अपने ग्रह का लगता है।

—पृथ्वी ग्रह का ? अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा।

—ऐसा कैसे हो सकता है ? चीनी वैज्ञानिक ने विस्मय से कहा।

ब्रिटेन का वैज्ञानिक बोला—तुम्हारा ख्याल यह है कि ये वही आदमी है जो पृथ्वी पर उस अदृश्य और स्वरहीन यान से गया था।

—बिलकुल, ये वही आदमी लगता है। इन लोगों से हमें विस्तृत चर्चा करनी होगी। मैं अन्दर चलता हूँ। आप लोग, धीरे-धीरे, एक-एक करके आयें।

जब अँजरेकर अन्दर पहुँचा तो तंदुल उसे देखकर खड़ा हो गया। वह घबराया सा बोला—आप ......आप तो पृथ्वी ग्रह के लगते हैं।

अँजरेकर ने, मुसकराते हुए, उसका हाथ पकड़ते हुए कहा—तुम्हें यहाँ देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

—जी.......जी, क्या मतलब ? मैं समझा नहीं। तंदुल ने हाथ छुडाने की चेष्टा करते हुए कहा।

अँजरेकर ने दोनों हाथों के बीच उसका हाथ लेते हुए कहा—तुम इतने घबरा क्यों रहे हो ? परदेश में किसी अपने से मिलने का सुख बडा रोमांचकारी होता है। तुम भी तो पृथ्वी ग्रह के हो, तदुल !

तंदुल तो चौंका ही, केरिन भी चौंक पड़ी। उसने खड़े होकर, हकलाते हुए पूछा—क्या.......क्या आप तंदुल को जानते हैं ?

अब तक जर्मन और चीनी वैज्ञानिक भी आ चुके थे। तंदुल का हाथ छोड़ते हुए अँजरेकर ने कहा—आप सब बैठिये। खड़े क्यों हो गये ?

ब्रिटिश वैज्ञानिक के साथ नितिकाशा और स्टेनले भी अन्दर आ गईं।

चारों ओर से स्वय को घिरा पाकर तदुल चिल्लाया—केरिन ! हम लोग फँस गये। बहुत बड़ा धोखा हो गया। भाग चलो यहाँ से।

इस घटना का किसी को पूर्वानुमान नहीं था। केरिन ने जैसे ही भागना चाहा, नितिकाशा और स्टेनले ने उसे पकड लिया। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने भागते हुए तंदुल की गर्दन पकड ली। चीनी वैज्ञानिक ने उसका एक हाथ और जर्मन वैज्ञानिक ने दूसरा हाथ पकड लिया।

अँजरेकर धीरे से बोला—पृथ्वी ग्रह के सूर्य की चोरी कराने में तुम बहुत बड़े सहयोगी रहे हो, तंदुल ! तुमने ऐसा जघन्य अपराध किया है जिसे कभी क्षमा नहीं किया जा सकता। तुम्हे इसका दंड तो भुगतना ही पड़ेगा।

तंदुल और केरिन कभी एक-दूसरे को तो कभी वहाँ खड़े वैज्ञानिकों को बड़ी दयनीय विवशता से देख रहे थे। अपराध जब उघरता है, व्यक्ति दिगम्बर हो जाता है। तंदुल सहम सा गया। वह टूटते-टूटते बोला—मैं·······मैंने कोई अपराध नहीं किया।

—तुम झूँठ बोलते हो। अँजरेकर ने चिल्लाते हुए कहा—कोई ग्रह पृथ्वी के सूर्य को चुराने का दुस्साहस नहीं कर सकता था। यह पृथ्वी ग्रह-निवासी के ही दुष्कृत्य का परिणाम है कि आज पृथ्वी ग्रह पर चारों ओर अँधेरा है, बीमारी है, चीत्कार है, अकाल मृत्यु है, भूख है, आँसू हैं, दर्द है, अभाव है। लाखों निरपराध लोग प्यास से मर गये। लाखों बच्चों ने बिना दूध के दम तोड़ दिया। हरी-भरी पृथ्वी बंजर बन गई। बोलो, क्या तुम्हें क्षमा किया जा सकता है ?

तंदुल रोने लगा, जोर-जोर से रोने लगा। आँसुओं से शुरू हुआ यह सिलसिला सिसकियों तक जा पहुँचा।

सारे वैज्ञानिक चुप थे।

अँजरेकर ने तंदुल के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा—आखिर तुमने ऐसा क्यों किया ? क्यों किया यह सब ?

तंदुल आँसुओं में डूबा रहा। केरिन नितिकाशा के हाथों में बेसुध सी हो गई थी।

अँजरेकर ने कहा—केरिन को बिठादो और इन दोनों को पानी पिलवाओ, नितिकाशा !

पानी पीकर तंदुल कुछ स्वस्थ हुआ।

जब सब लोग बैठ गये तो तंदुल ने अपनी रामकहानी सुनाते हुए अन्त में कहा—अँधेरे से घिरे उस हिमशैल ग्रह के सम्राट को बातों-बातों में मैंने कह दिया कि पृथ्वी ग्रह का कोई रक्षक नहीं है। जहाँ भाई-भाई आपस में लड़ते हों, जहाँ एक देश के निवासी, अपने ही देशवासियों से, आपस में, आँखों में बबूल लिये बात करते हों, जहाँ एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को खूनी इरादों से देखता हो, जहाँ दुराव, छिपाव और अलगाव की छाया में इंसानियत जी रही हो, जहाँ हर व्यवहार छलपूर्ण हो, जहाँ आदमी को जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर टुकड़े-टुकड़े कर बाँट दिया हो, ऐसे

आचरणहीन, संस्कारहीन ग्रह से यदि सूर्य का प्रकाश चुरा लिया जाये तो पृथ्वी के विभिन्न राष्ट्र एक-दूसरे पर संदेह और अविश्वास कर, आपस में, टकरा-टकरा कर ही मर जायेंगे।

तंदुल एक सांस में यह सब कुछ कह गया। तंदुल ने पृथ्वी के अतीत का वास्तविक वर्णन किया था। कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला। पृथ्वी ग्रह के सभी वैज्ञानिक गहन सोच मे डूब गये। फिर धीरे से अँजरेकर बोला—तंदुल ! मैं समझ सकता हूं तुम्हारा दर्द। तुम्हारे मन में उठती हुई टीस ने मेरी आँखें भी गीली करदीं। लेकिन इसका अर्थ यह तो नहीं हुआ कि हम आपसी झगड़े से उकताकर अपनी सम्पत्ति ही किसी तीसरे व्यक्ति को सौंपदें और अपने हाथों अपना गला घोटलें।

थोड़ा रुककर अँजरेकर फिर बोला—तुम्हें पता है, आज पूरा पृथ्वी ग्रह एक है। अंधकार के साये में आज वहां स्थायी प्रेम का साम्राज्य स्थापित हो गया है। आज एक का दुःख सबका दुःख है, एक राष्ट्र की पीड़ा पूरे ग्रह की पीडा है। पूरा पृथ्वी ग्रह इस समय भी तुम्हारे सामने है —रूस, चीन, जापान, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और भारत—पृथ्वी के पौने दो सौ देशों के प्रतिनिधि यहां, एकजुट, एक जान हुए खड़े हैं।

तन्दुल अचानक अँजरेकर के कदमो पर गिर पड़ा। वह जोर-जोर से सिर पटकता हुआ बोला—मुझे मार दो। मार डालो मुझे। मैं ही वह पापी हूँ जिसने पृथ्वी ग्रह की सुख-शांति मे आग लगाई है। मुझे जीने का कोई अधिकार नही है। मैं अपने हाथो अपना गला घोट लूँगा।

इतना कहते-कहते तन्दुल ने अपने हाथ अपनी गर्दन के इर्द-गिर्द कस लिये जिन्हें शक्तिपूर्वक हटाते हुए अँजरेकर बोला—यह फिर मूर्खता कर रहे हो। अपराध करने पर सच्चे दिल से पश्चाताप कर लेने से अधिक प्रभावकारी और कोई दण्ड नहीं होता। तुम पश्चाताप की आग में जल चुके हो। तुम्हारे मन का सारा कलुष आँखों की राह बह चुका है। अब हमें मिलकर अपने सूरज की वापसी के बारे मे सोचना है। पृथ्वी ग्रह को लगे इस ग्रहण से मुक्ति दिलानी है। उठो, अब सब मिलकर अपनी भावी योजना तय करेंगे।

अँजरेकर ने बलपूर्वक तंदुल को उठाया। उसका मुँह अपने हाथों से पोंछा। उसे कुर्सी पर बिठाया। सारे वैज्ञानिक भी कुर्सियो पर बैठ

गये। सारी स्थिति अब उनके समक्ष स्पष्ट हो चुकी थी। उन्हें लगा कि पृथ्वी का यह संकट उनके अपने आचरण का प्रतिफल है। वास्तव में, पीड़ा आती नहीं, आमन्त्रित की जाती है।

केरिन ने तंदुल की ओर देखा। तंदुल एक-दो क्षण चुप रहा। वह मन में उठे तूफान में घिरा हुआ था। धरती की आंधी से तो बचा जा सकता है, मन में उठे तूफान से बच पाना सम्भव नहीं। अपने को थोड़ा संयत करते हुए तंदुल बोला—केरिन ! मैं वापिस अपनों के बीच आ गया हूँ। राह भटक गया था उसे फिर से पा गया हूँ। अब नहीं भटकूँगा।

अँजरेकर ने उठकर तंदुल का माथा चूम लिया। एक क्षण पूर्व का वह अपराधी अब सबके मन की धड़कन बन गया था। मन महासागर से विशाल होता है जो प्यार और तिरस्कार के दो कूलों के बीच लाखों सपनों को डुबाता, बहाता रहता है। वहाँ बैठे सभी वैज्ञानिकों ने उससे हाथ मिलाया। उसका माथा चूमा। अपने आचरण से धरती पर रहते हुए भी आदमी आकाश बन जाता है।

तंदुल ने भरी आँखों से कहा—केरिन ! तुम लौट जाओ। लौट जाओ अपने घर। डाल से टूटी शाख, जीवन से टूट जाती है। तुम वापिस चली जाओ।

केरिन दौड़कर तंदुल के गले लग गई और काँपते स्वर में बोली—यह····यह तुम कह रहे हो, तंदुल ! तुम कह रहे हो यह ? तभी नितिकाशा बोली—तंदुल ! मैं तुम्हारी बहिन हूँ। सुनो, केरिन कहीं नहीं जायेगी। ये यहीं रहेगी। हम लोगों के साथ रहेगी।

पृथ्वी के प्यार ने केरिन को रुला-रुला दिया। वह नितिकाशा के गले लग गई। उसका गला रुँध गया। वह बहुत देर तक नितिकाशा के कंधों को भिगोती रही और स्टेनले उसका सिर सहलाती रही।

प्रेम और आँसुओं का जन्म-जन्मातर का रिश्ता है। प्रेम साकार हो तो आँसू, वियोग हो तो आँसू। आँसू से अधिक मनुष्य का कोई निकट सम्बन्धी नहीं होता।

अंजरेकर द्वारा प्रेषित रिपोर्ट नियन्त्रण केन्द्र ने सम्बन्धित राष्ट्रों और संयुक्त राष्ट्र संघ को तत्काल प्रेषित करदी। राष्ट्रसंघ के महासचिव ने उन राष्ट्रों से निजी सम्पर्क स्थापित कर समस्या की गम्भीरता के बारे में चर्चा करते हुए पूछा—क्या यह अनुकूल नही रहेगा कि राष्ट्राध्यक्षों की प्रस्तावित बैठक से पूर्व संयुक्त राष्ट्रसंघ की बैठक बुलाकर सारे राष्ट्रों को वर्तमान विपत्ति के बारे में पूरी तरह से परिचित करा दिया जाये?

अधिकांश राष्ट्रों ने इस सदर्भ में महासचिव को अपने विवेक के अनुसार कार्य करने का परामर्श दिया किन्तु भारत ने इस प्रस्ताव पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—अभी समस्त राष्ट्रों की बैठक बुलाने से कोई लाभ प्राप्त होने की सभावना नहीं है। सारे देश इस समय क्षुब्ध और पीडित है। वे कोई सतुलित सुझाव देने की स्थिति में नही हैं। अतः हमारी दृष्टि मे यही उपयुक्त है कि राष्ट्राध्यक्षो की पूर्व निर्धारित बैठक ही बुलाई जाये जिससे भावी कार्यक्रम निश्चित किया जा सके।

महासचिव को भारत का सुझाव अधिक व्यावहारिक लगा इसलिए राष्ट्रसंघ की बैठक की अपेक्षा सुरक्षा परिषद् की बैठक बुलाना उन्हें समीचीन लगा। सुरक्षा परिषद् में वे आठो राष्ट्र तो सदस्य थे ही, सात छोटे तथा मँझोले राष्ट्र और थे।

बैठक मे पृथ्वी ग्रह के सूरज की चोरी के बारे मे विस्तार से जानकारी देते हुए महासचिव ने कहा—अब उस ग्रह को नष्ट करने के अतिरिक्त और कोई उपाय शेष नही है।

इस पर अफ्रीकी देशो के प्रतिनिधि ने कहा—क्या हम एक बार उस ग्रह से बात नहीं कर सकते? क्या शनि ग्रह पर स्थापित अपना सकेत-केन्द्र इस बारे मे पहल नही कर सकता? पृथ्वी पहले ही बहुत रक्त-रंजित हो उठी है। अब सर्वत्र व्याप्त स्नेह की छाया मे जीने वाली पृथ्वी शत्रु को भी जीने का एक अवसर तो दे ही सकती है।

परिषद् के अध्यक्ष ने कहा—यह सुझाव हमारी परम्पराओ के अनुरूप है। हम उस ग्रह को एक निश्चित तिथि दे सकते हैं और उस तिथि के निकल जाने पर आक्रमण करके अपने सूर्य को मुक्त करा सकते हैं।

यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पारित हो गया।

महासचिव ने पृथ्वी स्थित अपने नियन्त्रण-केन्द्र को परिषद् के निर्णय से अवगत कराते हुए इतना और कहा—अधिक अनुकूल यह रहेगा कि राष्ट्राध्यक्षों की बैठक में विषय-प्रवर्तन के लिए उस वैज्ञानिक को शनि ग्रह से बुला लिया जाये जिसने यह रिपोर्ट भेजी है जिससे निर्णय लेने और कार्य-प्रणाली निश्चित करने में सुविधा हो सके।

परिषद के प्रस्ताव को सुन, मुसकराते हुए, नियंत्रण-केन्द्र पर, अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—हम आज सब मिलकर एक हो गये हैं लेकिन अपनी लीक से नहीं हटे।

—मेरी दृष्टि में पृथ्वी की स्थापित गरिमा के अनुकूल है यह प्रस्ताव। रूसी वैज्ञानिक बोला।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने तनिक अनमने मन से कहा—ऐसे घोर शत्रु को समय देना व्यर्थ है।

—इतना समय हो गया, थोड़ा और सही। हम अपनी दृष्टि में तो अपने आचरण को सही सिद्ध कर सकेंगे। स्वयं की दृष्टि में व्यक्ति का पतन उसके जीवन की सबसे बड़ी पराजय होती है। जर्मन वैज्ञानिक ने सपाट स्वर में कहा।

फ्रांसिसी वैज्ञानिक बोला—मुझे तो यह संभव दिखाई देता नहीं है। वह ग्रह आसानी से हमारे सूर्य को मुक्त नहीं करेगा। अहंकार इसलिए सदैव मरा है कि उसने अपनी गलती कभी नहीं स्वीकारी।

—जब इतना संतोष किया है तो कुछ दिन और सही। मन को समझा लेने से अनेक दुर्घटनाओं को टाला जा सकता है। जापानी वैज्ञानिक ने अपना मंतव्य प्रकट किया।

भारतीय वैज्ञानिक ने कहा—सूरज तो मुक्त होगा ही। किसी अंधकार का जीवन शाश्वत नहीं होता। उस ग्रह को समय देकर हम उसे अपने भविष्य को सुखी बनाने का एक अवसर तो दे ही सकते हैं। इससे हम अपनी परम्परा का भी निर्वाह कर सकेंगे। अपनी परम्पराओं का निर्वहन स्वयं में एक बड़ी उपलब्धि है।

अन्त में, परिषद के दोनों निर्देश नियन्त्रण-केन्द्र ने शनि ग्रह स्थित अपने संकेत-केन्द्र को भेज दिये।

□ □

जर्मन वैज्ञानिक ने अधलेटे अंजरेकर को पुकारते हुए कहा—कभी-कभी विनम्रता भी आदमी को मार डालती है।

—क्या मतलब ? अंजरेकर ने उठकर बैठते हुए पूछा।

—पृथ्वी के नियन्त्रण-केन्द्र ने निर्देश दिया है हिमशैल को सूर्य-मुक्त करने के लिए एक निश्चित समय-सीमा दे दी जाए। जर्मन वैज्ञानिक ने बताया।

—समय-सीमा ? रूसी वैज्ञानिक ने पूछा।

जर्मन वैज्ञानिक ने कहा—वही अपनी परम्परागत विनम्रता। कब बदलेगा पृथ्वी ग्रह पूरी तरह ?

—संस्कारशील व्यक्ति विषम परिस्थिति में भी कुसंस्कारों से समझौता नहीं कर सकता। अपने ग्रह के संस्कारों में विनम्रता रमी-घुली है। सह-अस्तित्व उसके प्राणों में है। मैं जानता था कि पृथ्वी ग्रह से यही निर्देश आयेगा। अंजरेकर ने मुसकराते हुये कहा।

—तुम जानते थे ? अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा।

बिलकुल। हिमशैल यदि अपनी गलती मानकर हमारे सूर्य को मुक्त करदे तो वहाँ के असंख्य अनजान निवासियों को मृत्यु दण्ड क्यों दिया जाये ? कल तक की अनजान केरिन अब हमारी आँख की पुतली है। अनजान लोगों की भीड़ में भी खुली आँखों देखने से कोई परिचित-सा चेहरा दिखाई पड़ ही जाता है।

अंजरेकर के चुप होते ही ब्रिटिश वैज्ञानिक बोला—तुमने तो उसे क्षमा न करने को कहा था। पृथ्वी ग्रह के बेगुनाह वैज्ञानिकों को जला डालने वाला ग्रह कैसे क्षमा किया जा सकता है ?

—वह बात अपनी जगह सही है और यह अपनी जगह। सोते हुए पर वार करना जंगल की परम्परा है। पृथ्वी अब अजातशत्रु है। अपनी आकाशगंगा के शत्रु ग्रह को सम्हलने के लिए अवसर देना अजातशत्रु ग्रह की आवश्यक विनम्रता है। अंजरेकर ने गम्भीर स्वर में कहा।

चीनी वैज्ञानिक ने पूछा—यह काम कौन करेगा ?

—कौन करेगा से क्या मतलब ? यहीं से सम्पर्क स्थापित करेंगे और कह देंगे। जर्मन वैज्ञानिक ने उत्तर दिया।

इस बीच केरिन बोली—यह काम मैं करूँगी। मैं अपने यान से हिमशैल सम्राट से बात करके जो तिथि आप कहेंगे उन्हें बता दूँगी।

स्टेनले ने उसकी पीठ ठोकते हुए अँजरेकर से कहा—अब केरिन भी तो पृथ्वी ग्रहवासी हो गई है। क्यों, तंदुल !

तंदुल सहसा कुछ नहीं बोल पाया। वह अभी तक अपराध-बोध के बोझ से उबर नहीं पाया था। आत्म-ग्लानि के भँवर में कभी-कभी निष्णात तैराक भी डूब जाते हैं।

तंदुल के मौन रहने पर अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—इन दोनों को इस काम में उलझाना उपयुक्त नहीं है।

—बिलकुल ठीक। मेरा भी यही सोचना है। रूसी वैज्ञानिक ने कहा।

चीनी वैज्ञानिक बोला—हमें तो इनके मिलने का भी उल्लेख नहीं करना चाहिए।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने मुसकराते हुये कहा—वहाँ के लोग भी सिद्ध वैज्ञानिक हैं। उनके सम्पर्क-केन्द्र पर बात करोगे तो वे स्वतः समझ जायेंगे कि ये दोनों तुम्हें मिल गये हैं।

इस बीच नितिकाशा बोली—मैं केरिन के साथ जाकर हिमशैल सम्राट से बात करके उन्हें अन्तिम तिथि बताकर आती हूँ।

अँजरेकर ने जर्मन वैज्ञानिक से कहा—बन्धुवर ! अपने नियन्त्रण-केन्द्र से राष्ट्राध्यक्षों की होने वाली बैठक की तिथि तो ज्ञात करो जिससे हिमशैल को उपयुक्त समय-सीमा दी जा सके और मैं भी पृथ्वी पर जाने की तैयारी कर सकूँ।

नियन्त्रण-केन्द्र से सम्पर्क स्थापित होते ही जर्मन वैज्ञानिक ने अँजरेकर का प्रश्न दुहरा दिया। नियन्त्रण-केन्द्र ने उत्तर दिया कि एक सप्ताह बाद राष्ट्रसंघ मुख्यालय पर राष्ट्राध्यक्षों की बैठक आयोजित की गई है।

अँजरेकर ने केरिन से कहा—चलो, हम सब तुम्हारा यान देखने चलते हैं।

सब लोग एक साथ चल दिये। चलते-चलते अमेरिकी वैज्ञानिक ने केरिन से पूछा—तुम जब तंदुल के साथ पृथ्वी ग्रह की यात्रा पर गई थी तब तो तुम्हारे पास स्वरहीन, अदृश्य यान था।

यह सुन केरिन और तंदुल दोनों चौंक पड़े। तंदुल ने अटकते हुए पूछा—आप—आपको जानकारी है, इस बात की ?

—जी हाँ। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने उत्तर दिया।

तभी रूसी वैज्ञानिक बोला—पृथ्वी ग्रह से तुमने अपने सम्राट को वहाँ की स्थिति बताई थी और फिर बिना खोज किये वापिस लौट पड़े थे।

दोनों की आँखें आश्चर्य से फैल गईं।

चीनी वैज्ञानिक ने कहा— इतना ही नहीं, तुम्हारे वापिस लौटते समय वायु-तरंगों की सहायता से, अँजरेकर ने तुम्हारे यान का पीछा भी किया था।

—हे भगवान् ! केरिन इससे अधिक कुछ न कह सकी। जब कोई राह सुझाई न दे तब आदमी बरबस ईश्वर का नाम लेने लगता है। तंदुल तो बीच राह में ही बैठ गया।

सब लोग रुक गये। तंदुल को सहारा देकर जर्मन वैज्ञानिक ने उठाया और रुका हुआ काफिला फिर चल पड़ा।

हिमशैल ग्रह का वो यान पूरी प्रयोगशाला था। असंख्यों बटन लगे थे। स्पीकर थे। स्क्रीन थी। यान छोटा था पर सारी सुविधाओं से युक्त था।

अँजरेकर के संकेत पर केरिन ने हिमशैल सम्राट से बात करने के लिए संपर्क जोड़ दिया। तभी सम्राट की आवाज सुनाई दी—हाँ, केरिन ! बोलो।

—यहाँ केरिन नहीं है, हिमशैल सम्राट ! यह पृथ्वी ग्रह का संकेत-केन्द्र है।

—क्या—क्या ? पृथ्वी ग्रह ? सम्राट ने रुकते-रुकते पूछा। असंभव को समक्ष देख पलकें तो नहीं झुकतीं, वाणी के स्वर जरूर टूटने लगते हैं।

—हाँ, सम्राट। पृथ्वी ग्रह हिमर्शल को नष्ट करना नहीं चाहता। इसलिए यह प्रथम और अन्तिम चेतावनी है। यदि पाँच दिन में पृथ्वी का सूर्य मुक्त नहीं हुआ तो इस आकाशगंगा से हिमर्शल ग्रह अवश्य मुक्त हो जाएगा। अँजरेकर ने सधे हुए स्वर में कहा।

—सुनिये, सुनिये, ! आप—आप बोल कौन रहे हैं ? सम्राट ने अटक—अटक कर पूछा।

—मैं आपसे पाँच दिन बाद संपर्क स्थापित करूँगा। मेरी यही कामना है कि वह आपका और आपके ग्रहवासियों का अन्तिम दिन न हो।

□ □

सम्राट बोलते रह गये और अँजरेकर ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

हिमर्शल सम्राट ने अपने समस्त कक्षों के प्रमुखों को तत्काल बुलवा लिया। उनका चेहरा कांतिहीन हो गया था। वे पीठ पीछे हाथ बाँधे घूम रहे थे। सारे लोग जब आगये तो सम्राट ने उनको बैठने का संकेत किया। वे स्वयं भी बैठ गये। अज्ञात भय रोंगटे तो खड़े कर देता है किन्तु दिल को डुबा देता है। सम्राट का दिल डूब-डूब रहा था। वे फिर खड़े हो गये। खड़े होते अन्य लोगों को उन्होंने बैठे रहने का ही संकेत किया।

थोड़ा संयत होकर सम्राट बोले—अभी-अभी हमें पृथ्वी ग्रह से चेतावनी मिली है कि हम उनके सूर्य को पाँच दिन में मुक्त करदें अन्यथा वे हमारे ग्रह को नष्ट कर देंगे।

—क्या ? शेटिन ने खड़े होते हुए पूछा।

—और तंदुल ?

—मेरे पास है ।

—उससे बात कराओ ।

केरिन ने तंदुल को पास आने को कहा तो उसने मना कर दिया । अमेरिकी वैज्ञानिक पकड़कर उसे केरिन के पास ले गया । वो टूटते स्वर में बोला—हाँ—सम्राट ! मैं—मैं तंदुल ।

—तंदुल ! तुम इतने घबराये हुए क्यों हो ?

—नहीं—नहीं तो—मैं घबराया—नहीं, सम्राट !

—ये तुम क्या बोले जा रहे हो, तंदुल !

और तंदुल आगे कुछ नहीं बोल सका । केरिन ने कहा—सम्राट ! इसकी तबियत ठीक नहीं है ।

सम्राट ने गम्भीर स्वर में पूछा—केरिन ! तुम्हारे पास और भी कोई है ?

केरिन ने इधर-उधर देखा तो अँजरेकर ने सीधी गर्दन हिलाई ।

—हाँ, सम्राट !

—कौन है ?

केरिन चुप रही । अँजरेकर ने आगे बढ़कर कहा—सम्राट—ये लोग हमारे अधिकार में हैं और आप भी सिर्फ पाँच दिन के लिए स्वतन्त्र हैं ।

फिर सम्बन्ध टूट गया । सम्राट के कक्ष में अँजरेकर की बात सभी ने सुनली थी ।

शेटिन बोला—वही हुआ ना, सम्राट ! पृथ्वीवासी शनि ग्रह पर आ गये हैं और हमारा यान तथा दोनों व्यक्ति उनके अधिकार में हैं । अब वे वहाँ स्थापित जिब्राटो का ऊर्जा-संचय-केन्द्र भी अपने आधीन कर लेंगे ।

कुन्दू ने कहा—सबसे पहला कार्य हमें जिब्राटो को सूर्य का प्रकाश देना बन्द करना होगा ।

—क्या ऐसा तो नहीं कि पृथ्वी ग्रह ने अपना सूर्य मुक्त करा लिया हो ? ग्रहपति ने अपनी आशंका प्रकट की।

समरीनू ने आकाश की ओर संकेत करते हुये कहा—आप वह प्रकाश-रेखा देख रहे हैं ना ? सूर्य का प्रकाश अबाधगति से हिमशैल जा रहा है।

—फिर अब क्या हो सकता है, समरीनू ! ग्रहपति ने विवश भाव से पूछा।

—हम क्या कर सकते हैं, ग्रहपति ! हिमशैल को प्रकाश देने के लिए बाध्य तो नहीं कर सकते और न उनसे युद्ध कर सकते हैं। समरीनू ने आँखें झुकाते हुए कहा।

—इसका अर्थ यह हुआ कि हम संचित ऊर्जा की समाप्ति पर फिर अन्धकार में खो जायेंगे। फिर सारा ग्रह आदिमयुग में चला जायेगा। क्या यह अपने ग्रह-निवासियों के साथ अन्याय नहीं होगा ? ग्रहपति ने थके शब्दों में समरीनू से पूछा।

—साँसों के मोल पर अपनों को सुख देने की चेष्टा आत्मदाह करना है, ग्रहपति! विवशता को, विद्रोहपूर्वक नहीं, सहज भावसे स्वीकारने में मन खिन्न नहीं होता। समरीनू ने दिशा-संकेत करते हुए कहा।

—फिर शनि ग्रह के अपने ऊर्जा-सचय केन्द्र का क्या होगा ? ग्रहपति ने पूछा।

—उन्हें भी अपना काम समेट कर वापिस अपने घर लौट आना होगा। समरीनू ने स्पष्ट किया।

—क्या यह परिस्थितियों के समक्ष आत्मसमर्पण नहीं है ? ग्रहपति ने समरीनू की आँखों में झाँकते हुए पूछा।

—जी नहीं। यह अनुग्रह की वापसी है। कृपा करने वाला असंस्कारी व्यक्ति उसे जताता है और कुसंस्कारी व्यक्ति उसे छीन लेता है। हिमशैल-सम्राट ने अपनी कृपा छीन ली है, ग्रहपति ! समरीनू ने विनम्र भाव से कहा।

—क्या हिमशैल को जाते हुए प्रकाश का कुछ नहीं हो सकता ? ग्रहपति ने पुनः आकाश की ओर देखते हुए पूछा।

—उसे अवरुद्ध किया जा सकता है जिससे उनके ग्रह को भी प्रकाश न मिले।

—और हमें ?

—हमें तो मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता।

—क्या उस प्रकाश को अवरुद्ध करना ठीक रहेगा ?

—अपने दुःख को भूलकर दूसरे को दुःखी करने की चेष्टा दुःख का उपचार नहीं होता।

समरीनू की बात सुन ग्रहपति सहसा कुछ नहीं बोले।

तभी सम्पर्क प्रमुख ने पूछा—क्या पृथ्वी ग्रह अपने सूर्य को वापिस लाने के लिए प्रयत्नशील नहीं है ?

समरीनू बोला—वैसे तो हमें इसका ज्ञान नहीं है किन्तु पृथ्वी ग्रह प्रयत्न तो करेगा ही। अप्रयत्नशील रूप से आई विपति को स्वीकार कर उससे मुक्त होने की चेष्टा ही तो पुरुषार्थ है। और यह पुरुषार्थ पृथ्वी ग्रह अवश्य करेगा।

ग्रहपति ने हारकर कहा—तब भी, समरीनू ! तुम सोच-विचार कर कोई तो मार्ग खोजना ही।

और समरीनू ने अपना सिर झुका दिया।

□ □

शनि ग्रह पर पृथ्वी के वैज्ञानिक अपने संकेत-केन्द्र पर वाणी-विलास कर रहे थे। अत्यधिक उद्विग्नता में संतुलन बनाये रखने के लिए मुसकराना अचूक औषधि है। तभी स्टेनले बोली—मेरी समझ में आज तक नहीं आया, ये लीपिन इतने गम्भीर क्यों रहते हैं ?

चीनी वैज्ञानिक बोला—सिर्फ इसलिए कि कोई ये बात कहे। और सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

चीनी वैज्ञानिक फिर बोला—पृथ्वी के अलिखित नियमों के अनुसार अपने मित्र को चाहने वाली नितिकाशा तो हमारी बहिन हो गई फिर हम क्या करें ? रात को सितारे देखें, दिन में दूरबीन और खाली वक्त में आईना।

—आईना क्यों ? अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा।

—आईना इसलिये कि भारतीय कवियों ने कहा है, कभी-कभी उसमें अपनी सूरत देखते-देखते उनकी सूरत दिखाई देने लगती है। चीनी वैज्ञानिक ने स्टैनले को देखते हुए कहा।

—उनकी सूरत से क्या मतलब ? ब्रिटिश वैज्ञानिक ने पूछा।

—आप निश्चिन्त रहें। उनकी सूरत से मतलब आपकी सूरत नहीं है। जर्मन वैज्ञानिक ने कहा।

और फिर सब मुसकरा उठे।

तभी तंदुल बोला—केरिन ! जिब्राटो वालों को नहीं देखना है क्या ?

तंदुल के प्रश्न पर अंजरेकर ने धीरे से पूछा—शनि ग्रह पर जो ऊर्जा-संचय-केन्द्र स्थापित कर बैठे हुए हैं, उन जिब्राटोवालों को ?

अंजरेकर की बात केरिन और तंदुल दोनों को विस्मय में डाल गई।

केरिन ने पूछा-- आप इतना सब कुछ कैसे जानते हैं ?

—मैं जिब्राटो होकर आया हूँ। अंजरेकर ने कहा।

—क्या……क्या ? आप वहाँ होकर आये हैं ! तंदुल ने आश्चर्य मिश्रित स्वर से पूछा।

अंजरेकर बोला—इसमें विस्मय की कौनसी बात है ? मैं वहाँ होकर आया हूँ और आज जिब्राटो को शनि ग्रह पर ऊर्जा नहीं मिलेगी क्योंकि हिमशंल ने उन्हें सूर्य का प्रकाश देना बन्द कर दिया होगा।

—क्या मतलब ? केरिन ने पूछा।

—आँख की सीमा ने दृष्टि को पारदर्शी होने से रोका है। मेरी चेतावनी सुनकर हिमशंल वाले सबसे पहले जिब्राटो को सूर्य का प्रकाश देना

बंद करेंगे जिससे हम सहज रूप में उन तक न पहुँच सकें। अँजरेकर ने कहा।

केरिन ने पूछा—क्या आपको पता है, वह संचय-केन्द्र कहाँ है ?

अपनी अँगुली से संकेत करते हुए अँजरेकर ने कहा—वो सामने रहा। कहो तो चलें। उनसे भी मुलाकात कर आयें। तुम भी तो उन्हें ही देखने आई थीं।

केरिन फिर चौंक पड़ी। वह धीरे से बोली—पृथ्वी ग्रह के ज्योतिषियों के बारे में बहुत सुना था, आज देख लिया।

अँजरेकर ने हँसते हुए कहा—मैडम ! मैं वैज्ञानिक हूँ, ज्योतिषी नहीं। वैसे ज्योतिष भी एक विज्ञान ही है। विज्ञान के धरातल पर खड़े होकर खुली आँखों से कोई भी भविष्य को पढ़ सकता है। इसलिए वैज्ञानिक आधा ज्योतिषी तो होता ही है ?

जिन्नाटो का ऊर्जा-संचय-केन्द्र चल रहा था किन्तु अभी तक सूर्य उनके आकाश पर नहीं उगा था। तभी केरिन ने सामने पहुँच कर पूछा-आपका केन्द्र-प्रमुख कौन है ?

—आप कहाँ से ?

—हिमशैल से।

उस व्यक्ति ने गर्दन झुकाते हुए कहा—मैं ही केन्द्र-प्रमुख सुरन्तू हूँ।

—सुरन्तू ! जब हिमशैल तुम्हें सूर्य का प्रकाश दे ही रहा है तो शनि ग्रह पर ऊर्जा-संचय-केन्द्र स्थापित करने का क्या मतलब है ? केरिन ने सीधा प्रश्न पूछा।

—जी……जी, वो बात ये है।

—बात ये है कि एक सप्ताह में केवल तीन घण्टे का प्रकाश पर्याप्त नहीं होता। केरिन ने मुसकराते हुए कहा।

—जी, जी हाँ। हमारे ग्रहपति ने यही सोचकर यहाँ ऊर्जा—केन्द्र स्थापित करने का आदेश दिया था। सुरन्तू ने विनयपूर्वक कहा।

अब अँजरेकर ने सामने आकर कहा—अब तुम्हें सूर्य का प्रकाश नहीं मिलेगा। हिमर्शल–सम्राट ने यही आदेश दिया है। तुम अपने उपकरण समेट कर हमारे साथ चलो।

—आप—आप भी हिमर्शल ग्रह ·······

सुरन्तू का प्रश्न पूरा होने से पहले ही केरिन बोल उठी—तुम लोग सामने चलो। वही बैठकर इत्मीनान से बातें करेंगे।

और थोड़ी देर में ही जिब्राटो का ऊर्जा-संचय-केन्द्र पृथ्वी के संकेत-केन्द्र में समा गया।

तभी वहां आवाज सुनाई देने लगी—जिब्राटो ऊर्जा ! जिब्राटो ऊर्जा।

सुरन्तू को हक्का-बक्का देख अँजरेकर बोला—कहिये, जिब्राटो ऊर्जा।

—मैं समरीनू बोल रहा हूँ, सुरन्तू ! हिमर्शल ने सूर्य का प्रकाश देना बन्द कर दिया है। तुम अपना केन्द्र बन्द कर वापिस चले आओ।

—जी, ठीक है। अँजरेकर ने कहा।

– ये तुम्हारी आवाज को क्या हो गया, सुरन्तू !

—जी, कुछ नही, सब ठीक है।

—फिर कब तक आ रहे हो ?

इस प्रश्न के उत्तर मे अँजरेकर बोला—पृथ्वी ग्रह का सूर्य चुराने वाले हिमर्शल ग्रह के मित्र समरीनू ! तुम्हारा ऊर्जा-केन्द्र पृथ्वी ग्रह ने अपने आधीन कर लिया है।

—जी, आप ?

—मैं पृथ्वीग्रह का वैज्ञानिक हूँ। हिमर्शल का नाश तो निश्चित ही है, तुम्हारा क्या विचार है ?

यह प्रश्न सुन समरीनू बोला—आप हमारे ग्रहपति से बात करलें।

थोड़ी देर मे ग्रहपति की आवाज सुनाई दी—मैं जिब्राटो का ग्रहपति बोल रहा हूँ।

अँजरेकर ने सपाट स्वर में कहा—आप चोर के साथी हैं। अपनी सजा खुद निश्चित कर लीजिए।

—सुनिये, सुनिये। हमने चोरी में कोई सहयोग नहीं किया है। ग्रहपति ने सहमते हुए कहा।

—चोरी की वस्तु का लाभ तो उठाया है! अँजरेकर ने पूछा।

—वह भी बन्द हो गया है। हम लोग फिर अँधेरे में खो गये हैं। ग्रहपति ने अपनी विवशता व्यक्त करते हुए कहा।

—ठीक है, हम समय आने पर आपसे पुनः सम्पर्क करेंगे। अँजरेकर बोला।

—जी, आपकी सेवा कर हमें प्रसन्नता होगी। ग्रहपति ने औपचारिकता पूरी की।

सम्पर्क टूटते ही केरिन हँसी। रूसी वैज्ञानिक ने पूछा—इसमें हँसने की कौनसी बात है?

केरिन बोली—ये सारे ग्रह कुछ दिनों में पृथ्वी ग्रह के आधीन हो जाएँगे।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने गम्भीर होते हुए कहा—पृथ्वी ग्रह व्यक्तियों की स्वतंत्रता में विश्वास रखता है, उन्हें पराधीन बनाने में नहीं।

और केरिन की मुसकान उसके ओठों में सिमट गई।

□ □

पृथ्वी ग्रह की चेतावनी का आज पाँचवाँ दिन था। हिमर्शल-सम्राट सुबह से ही अनमने थे। उन्होंने ग्रहों के चारों ओर सुरक्षा—व्यवस्था को कड़ा कर दिया था, तब भी उनके मन के किसी कोने में भय समाया हुआ था। वे रात भर ढंग से सो भी नहीं पाये थे। आँखें अनिद्रा और आशंका से गुलाबी होकर बोझिल हो उठी थीं।

सभी कक्ष—प्रमुख उनके साथ थे। वातावरण सवेरे से ही बड़ा उमसीला और उदास था। ग्रह-सम्राट ने धीरे से पूछा—चेटिन ! क्या पृथ्वी ग्रह आक्रमण करेगा ?

—कुछ कहा नहीं जा सकता, सम्राट ! गुप्त सूचना कक्ष के प्रमुख सुबह से ही अपने आकाश की निगरानी के लिए अदृश्य यान में घूम रहे हैं। तभी आवाज गूँजी—मैं ग्रेकिन बोल रहा हूँ।

—हाँ ग्रेकिन ! सम्राट घबराये से बोले—क्या समाचार है ?

—सब ठीक है, सम्राट ! दूर-दूर तक कोई हलचल नहीं है। लगता है, पृथ्वी ग्रह चेतावनी देकर सो गया।

सम्राट ने फीकी हँसी हँसते हुए पूछा—तुम्हारा क्या कार्यक्रम है ?

—मैं थोड़ी-थोड़ी देर में आकाश की गतिविधियों की जानकारी लेता रहूँगा।

—हमें भी सूचित करते रहना, ग्रेकिन ! सारे कक्ष-प्रमुख यहाँ हैं और शाम तक यहीं रहेंगे। सम्राट ने एक नजर उन प्रमुखों पर डालते हुए कहा।

—जो आज्ञा, सम्राट !

ग्रेकिन से बात हो जाने पर सम्राट कुछ आश्वस्त से हो गये। स्याह पड़े और भी चेहरों पर रोशनी आने लगी।

चेटिन बोला—पृथ्वी ग्रह के बारे में हम लोगों को कोई विशेष जानकारी तो है नहीं। चेतावनी का आज पाँचवाँ और अन्तिम दिन है। हो सकता है, वह ग्रह कल सक्रिय हो जाये।

—कभी सक्रिय हो लेकिन सक्रिय होकर करेगा क्या ? कुन्दू ने पूछा।

—हमारे ग्रह पर आक्रमण करेगा और क्या करेगा ? चेटिन ने उखड़े अन्दाज में कहा।

सम्राट ने पूछा—और अगर आक्रमण नहीं किया तो ?

—ये संभव नहीं है, सम्राट ! साँसों के संसार में आग लग जाने पर असमर्थ आदमी भी उसे आँसुओं से बुझाने की कोशिश करता है। अपना

जलता हुआ संसार कोई नहीं देख सकता, फिर पृथ्वी तो समर्थ ग्रह है। चेटिन ने गम्भीर होते हुए कहा।

—कभी तो शुभ-शुभ बोला करो। कुन्दू ने चेटिन की ओर देखते हुए कहा।

—ये शुभ ही बोल रहा है। अपिन्सू ने सम्राट की ओर देखते हुए कहा—हमें पृथ्वी के सूर्य को मुक्त कर देना चाहिए। इसी में हमारे ग्रह की भलाई है।

शेटिन बोला—तुम पर, अपिन्सू ! पृथ्वीग्रह का कुछ ज्यादा ही भय हावी हो गया है।

चेटिन ने कहा—भय की कोई बात नहीं है। पृथ्वी वालों ने हमारा यान अपने अधिकार में ले लिया। शनि ग्रह स्थित जिब्राटो का ऊर्जा-केन्द्र भी अपने अधीन कर लिया।

—क्या·······क्या कहा ? सम्राट ने विस्मय से पूछा।

—जी हाँ। मैं इसीलिए कह रहा हूँ कि पृथ्वी ग्रह से वैर मोल लेना हमारे ग्रह के हित में नहीं है। चेटिन ने अपना स्पष्ट मत व्यक्त करते हुए कहा।

सम्राट सहसा कुछ नहीं बोले तो कुन्दू ने कहा—चेटिन ! आज देखते हैं। फिर·······

इस बीच सम्राट बोले—क्या केरिन से सम्पर्क करें ?

—उससे क्या लाभ होगा ? यान पृथ्वी के आधीन है। केरिन क्या बात करेगी ? चेटिन ने शून्य में देखते हुए कहा।

—क्या पृथ्वी ग्रहवासी फिर सम्पर्क करेंगे ? सम्राट ने कुन्दू की ओर देखते हुए पूछा।

चेटिन बोला—वे क्यों सम्पर्क करेंगे ? वे तो जब भी करेंगे, आक्रमण ही करेंगे।

तभी ग्रेकिन की आवाज सुनाई दी—आकाश में कोई हलचल नहीं है, सम्राट !

—बहुत अच्छे, ग्रेकिन ! ऐसे ही समाचार देते रहना। सम्राट ने आकाश की ओर देखते हुए कहा। डूबते मन को हल्की सी दिलासा भी उबार लेती है। सम्राट की आँखों में थोड़ी सी बिजली उतर आई।

□ □

चेतावनी के अन्तिम दिन की शाम घिरने लगी थी। अंजरेकर पृथ्वी के नियन्त्रण-केन्द्र से सम्पर्क साध रहा था तभी उसे आवाज सुनाई दी—कर्णीकर, सरफेस कन्ट्रोल रूम।

—मैं, अंजरेकर ! शनि ग्रह के पृथ्वी संकेत केन्द्र से।

—बोलो।

—हिमशैल को पाँच दिन की समय-सीमा दी थी जो अब समाप्त हो रही है।

—कोई सूचना ?

—जी नहीं।

—तुम परसों पृथ्वी पर आ रहे हो ?

—जी।

—फिर अभी क्या चाहते हो ?

—हिमशैल के आकाश में आतिशबाजी करने की आज्ञा।

—अभी कैसे संभव है ? अभी निर्णय होना शेष है।

—सूर्य की मुक्ति न होने पर आक्रमण तो करना ही पड़ेगा।

—वह व्यवस्थित आक्रमण होगा।

—प्रारम्भिक तो आज हो ही सकता है।

—आज ही क्यों चाहते हो ?

—समय-सीमा की समाप्ति पर प्रतिक्रिया स्वरूप जो उस ग्रह को भयभीत कर सके।

—तुम्हें इस बारे में थोड़ी देर में आवश्यक निर्देश मिलेंगे।

नियंत्रण-केन्द्र से बात कर लेने पर अँजरेकर बोला—यदि हम आज कुछ नहीं करेंगे तो उस ग्रह पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

—क्या प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ? वे पृथ्वी ग्रह की ओर से निश्चिन्त हो जायेंगे। उसे एक निर्बल ग्रह के रूप में मान लेंगे। जर्मन वैज्ञानिक ने कहा।

—और ये ठीक भी है। फिर जब व्यवस्थित आक्रमण होगा तो वे सम्हल ही नहीं पायेंगे। रूसी वैज्ञानिक ने कहा।

ब्रिटिश वैज्ञानिक ने अँजरेकर की बात का समर्थन करते हुए कहा—हम पहले ही एक सप्ताह की अवधि देते तो ठीक रहता। अब समय-सीमा की समाप्ति पर कुछ फुलझड़ियाँ तो छूटनी ही चाहिए।

—हमें दो दिन तो धैर्य रखना ही पड़ेगा। यह पृथ्वी का प्रथम अंतरिक्ष युद्ध होगा। इसलिए पूरी तैयारी से लड़ना पड़ेगा। अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा।

चीनी वैज्ञानिक बोला—युद्ध प्रारम्भ करने के बारे में हम अपने स्तर पर कोई निर्णय नहीं ले सकते।

स्टेनले बोली—उस ग्रह के लिए हमारे पास दो विशेषज्ञ हैं। इस बारे में केरिन और तंदुल की राय भी ले ली जाये।

केरिन बोली—एक धमाका ही काफी है उस ग्रह को समर्पण के लिए प्रेरित करने को।

तंदुल ने कहा—वे दुस्साहस तो कर सकते हैं, साहस नहीं।

अन्त में नितिकाशा बोली—अपने सूर्य को मुक्त कराके परसों हम लोग सभी पृथ्वी पर वापिस चल सकते हैं।

तभी आवाज गूँजी—पृथ्वी ग्रह संकेत केन्द्र ?

अँजरेकर ने उत्साह से कहा—रिपोर्टिंग सर।

—कौन, अँजरेकर ?

—जी, सर।

—तुम परसों राष्ट्रसंघ के मुख्यालय पर पहुँचकर पूरा विवरण प्रस्तुत करो।

—जी।

—उसके पश्चात् लिये गये निर्णय के अनुसार अगली कार्यवाही निश्चित की जायेगी।

—जी।

—ओवर।

—हमें इसी निर्णय की अपेक्षा थी। चीनी वैज्ञानिक ने कहा।

ब्रिटिश वैज्ञानिक बोला—यह पृथ्वी ग्रह के सम्मान का प्रश्न है। एक बार युद्ध छिड़ जाने पर पूरी आकाशगंगा की दृष्टि पृथ्वी पर होगी।

—इतना ही नहीं। आकाशगंगा के कुछ ग्रह हिमशैल का भी सहयोग कर सकते हैं। अमेरिकी वैज्ञानिक ने आशंका प्रस्तुत की।

—ठीक है। अँजरेकर ने कहा—राष्ट्राध्यक्षों की बैठक के निर्णयानुसार ही अगला कदम उठाया जायेगा।

□ □

आठ देशों के राष्ट्राध्यक्षों की बैठक पृथ्वी की अत्यन्त विषम परिस्थिति को सुलझाने के लिए हो रही थी। सूर्यविहीन पृथ्वी की असम्भव कल्पना आज क्रूर यथार्थ बन गई थी।

शनि ग्रह पर स्थापित पृथ्वी के संकेत-केन्द्र से भारतीय वैज्ञानिक अँजरेकर अब तक किये कार्य की जानकारी प्रस्तुत करने के लिये पहुँच चुका था। संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव ने कहा—पृथ्वी के सूरज की चोरी से उत्पन्न गम्भीर स्थिति पर विचार कर आवश्यक निर्णय लेने हेतु आयोजित इस बैठक में सर्वप्रथम अँजरेकर अपनी प्रगति का विवरण देंगे।

अँजरेकर ने राष्ट्राध्यक्षों को देखकर सिर झुकाते हुए कहा—भावावेश में किसी अप्रिय बात के कह जाने के लिए मैं पूर्वत: क्षमा-याचना

करता हूँ। आज पूरी पृथ्वी अपने पाप का प्रायश्चित्त कर रही है। पृथ्वी के सूर्य को चुराने का दुस्साहस अपनी आकाशगंगा के एक छोटे से ग्रह ने इसलिए किया कि हमने अपने मुल्कों की हद के साथ अपने दिल और दिमाग पर भी सरहद की रेखा खींचली। हम पृथ्वीवासी एक-दूसरे पर सन्देह और अविश्वास करने के अभ्यस्त हो गये। मजहब, बोली और जातियों की आड़ लेकर हमने इन्सान को टुकड़ों-टुकड़ों में बाँट दिया और सियासी दाव पेचों ने मुल्क-मुल्क के बीच नफरत और अलगाव की कभी न भरने वाली खाइयाँ खोददीं।

भारत के प्रधान मंत्री ने टोकते हुए कहा—अँजरेकर ! अतीत की चर्चा से भविष्य नहीं सँवरता। जो होना था, हो चुका।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने धीरे से कहा—उसकी सही बात हमें सच्चे दिल से सुननी चाहिये। उसे बोलने दो, मित्र !

उनके चुप होते ही अँजरेकर बोला—मैं अपने दुस्साहस के लिए पूर्व में ही क्षमाप्रार्थना कर चुका हूँ। मुझे पुनः क्षमा करें। तोप, बम, बारूद की खाद देकर भाईचारे के पौधे को पनपाने की चेष्टा हम बरसों से करते रहे हैं। अपनेपन के जले हुए बिरवे को दिलासा की ऑक्सीजन पर जिन्दा रखने की हमारी कोशिश बराबर नाकाम रही है। आज अनेक सवाल खड़े होकर हमसे जवाब माँग रहे हैं। हम इन्सान होकर इन्सान को क्यों मारते हैं ? हम क्यों चाहते हैं उसे बोली, लिबास और मजहब के नाम से पहचानना ? क्या एक इन्सान के लिये ये जानना काफी नहीं है कि सामने वाला भी उस जैसा ही इन्सान है, इसलिए उसका अपना है ? फिर क्यों बनाते हैं हम जमाने भर को जला डालने वाले ये हथियार ? किसके लिए बनाते रहे हैं ये सब ?

थोड़ा रुककर अँजरेकर फिर बोला—आप नहीं मानते कि ये उसीका परिणाम है कि लाखों बेजुबान, बेगुनाह लोग मौत की नींद सो गये और हम कुछ नहीं कर पाये। हम अपने एटम, हाईड्रोजन और बैक्टीरियल बमों से, प्रक्षेपास्त्रों और रासायनिक हथियारों की सहायता से उन्हें बचा नहीं पाये।

अँजरेकर ने भरी आँखों से मौन बैठे राष्ट्राध्यक्षों को देखा, फिर उसने संयत होते हुए कहा—मैं निश्चित रूप से कुछ ज्यादा बोल गया हूँ।

—नहीं, तुमने बहुत सही कहा है, अंजरेकर ! रूसी राष्ट्रपति ने कहा—हमारे आचरण का ही प्रतिफल है आज का ये दिन। सम्पूर्ण पृथ्वी जो पीड़ा भोग रही है उसके पीछे हम लोगों का ही निहित स्वार्थ रहा है।

—एक तरह से यह ठीक ही रहा। जर्मनी के चांसलर ने कहा—सूर्यहरण ने हमारे दिलों को फिर से एक कर दिया। आदमी की बनाई हदें टूट गईं और इंसानी मौहब्बत जाग उठी।

ब्रिटिश प्रधान मंत्री ने पूछा—अब, अंजरेकर ! आज की समस्या का समाधान बताओ।

—जी, महामहिम ! अंजरेकर ने कहा—अपनी आकाशगंगा का वैज्ञानिक क्षमता में प्रबल एक छोटा सा ग्रह है हिमर्मल—सदैव अंधकार में रहने वाला ग्रह—जिसने हमारे सूर्य के प्रकाश को अपनी ओर मोड़ लिया है। उस बर्फ से घिरे ग्रह तक सूरज की किरणें नहीं पहुँचती हैं इसलिए उसने अपनी काली जिन्दगी को हमारे सूरज से जगमगा लिया है।

—लेकिन हमारे ही सूरज को उसने चुराने की बात क्यों सोची ? फ्रांसिसी राष्ट्रपति ने पूछा।

—हमारे पृथ्वी ग्रह की विशेषता के कारण, महामहिम ! हमारा एक पृथ्वीवासी वहाँ गलती से पहुँच गया। उस ग्रह का आतिथ्य सत्कार देखकर उसने कह दिया कि पृथ्वी ग्रह जो मेरा है, वहाँ मेरा कोई नहीं और यहाँ जहाँ सभी अजनबी हैं, कोई पराया नहीं लगता। पृथ्वी ग्रह की इसी कुरूपता और दुर्बलता का लाभ उठाते हुए उसने हमारा सूरज चुरा लिया।

चीन के प्रधान मंत्री ने पूछा—अब तुम्हारा सुझाव क्या है ?

—महामहिम ! मैंने उस ग्रह को सूर्य-मुक्ति के लिए पाँच दिन का समय दिया था जो परसों समाप्त हो चुका।

—अच्छा ! जापान के प्रधान मंत्री ने कहा—फिर देर किस बात की है। उसके वैज्ञानिक ठिकानों का पता लगाकर उन्हें नष्ट कर दो। हमारा सूरज स्वतः ही मुक्त हो जायेगा।

—आपने ठीक फरमाया, महामहिम ! मैंने वहाँ के सब ठिकानों का पता लगा लिया है। इच्छाचारी आयुध से उनका विनाश-कक्ष और ऐश्वर्य-कक्ष नष्ट करना होगा। अँजरेकर ने विनयपूर्वक कहा।

अमेरिकी राष्ट्रपति बोले—इस हिमर्गल आपरेशन की बागडोर हम तुम्हें सौंपते हैं, अँजरेकर ! तुम एक स्वचालित अन्तरिक्ष यान ले जाओ और प्रक्षेपास्त्रों को छोड़ने के उपकरण।

रूसी राष्ट्रपति ने पूछा - और बोलो, तुम्हें जिस चीज की, जिस राष्ट्र से आवश्यकता हो, वह तुम्हें उपलब्ध करादी जायेगी।

अँजरेकर ने कहा—महामहिम ! मुझे केवल आप सबका आशीर्वाद चाहिए। हम अपना सूर्य एक दिन में मुक्त करा लेंगे।

सारे राष्ट्राध्यक्षों ने स्नेह और गर्व से अँजरेकर को देखा। भारत के प्रधानमन्त्री ने कहा—हम सबकी शुभ कामनायें तुम्हारे साथ हैं।

फ्रांसिसी राष्ट्रपति ने कहा—ईश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करे।

—अपने अदृश्य यान में जब तब आकाश के चक्कर लगा रहा होगा।

—उस अदृश्य यान को क्या तुम नहीं देख सकतीं ?

—मैं ? एक बार तो केरिन झिझकी फिर सिर को झटका देकर बोली—मैं उसे देख सकती हूँ। इतना कहकर उसने स्क्रीन का बटन दबाकर दो-तीन बटन और दबाये, घुमाये। थोड़ी ही देर में एक गेंदनुमा यान आकाश में घूमता हुआ उस स्क्रीन पर उभर आया। केरिन ने एक नॉब और घुमाई तो आकाश गायब होता चला गया और पूरी स्क्रीन पर सिर्फ यान दिखाई देने लगा ?

केरिन बोली—यही है ग्रेकिन, जो सम्राट को कुछ सूचना दे रहा है।

इसके बाद अँजरेकर ने पूछा—पृथ्वी के सूर्य का नियन्त्रण और उस पर पड़े आवरण की सार-सम्हाल कहाँ से हो रही है।

केरिन बोली—विज्ञान-कक्ष एवं ऐश्वर्य-कक्ष सम्मिलित रूप से वह कार्य कर रहे हैं और इसकी प्रयोगशाला बर्फ की गुफा में बनी हुई है जिसे आकाश से नष्ट करना आसान नहीं है।

अँजरेकर मुसकराते हुए बोला केरिन ! जिनके लिए मौत आसान होती है उनके लिए ससार का कोई काम मुश्किल नहीं होता। हमने अपनी पृथ्वी पर प्यार का वो बिरवा रोपा है जिसकी गध से यह पूरी आकाशगंगा महक उठेगी। नफरत के बीज को हमने जला दिया है। इसीलिए तुम्हारे ग्रह को नष्ट करने का विचार मैंने दिल से निकाल दिया है। इन्सान, इन्सान से दुश्मनी कर ही नहीं सकता। ये गुनाह है, नाकाबिले माफी गुनाह, इसलिए मैं अब वो गुनाह नहीं करूँगा। इस बार धरती पर गया तो वहाँ की हवाओं में प्यार घुल रहा था। आठ राष्ट्राध्यक्षों को देखा तो लगा जैसे आठ जिस्मों मे एक ही प्राण बसा हो।

रूसी वैज्ञानिक बोला—भाई मेरे, अभी जज्बाती बनने का वक्त नहीं हैं। हमे करना क्या है, यह बोलो।

अँजरेकर ने सम्हलते हुए कहा—मैं निकलना हूँ हिमशैल के लिए। मैं उन्हें एक बार फिर समझाने की कोशिश करूँगा।

केरिन बोली—सम्राट को समझाना आसान है लेकिन ग्रेटिन और कुन्दू उन्हें समझने नहीं देंगे।

—ये.......ये दोनों कौन हैं ?

—विज्ञान-कक्ष के प्रमुख।

—इनका कोई उपचार नहीं ?

—अधम अभिमानी का कोई उपचार नहीं हो सकता।

—वाह, केरिन ! तुलसीदास के बाद तुमने यह प्रयोग किया है।

—किसका ?

—अधम अभिमानी का। उन्होंने भी कहा था—अस कहि चला अधम अभिमानी।

—ये तुलसीदास कौन हैं ?

—रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास।

—मैंने नहीं पढ़ा उन्हें।

तभी तंदुल बीच में बोल पड़ा—पृथ्वी पर चलोगी तो पढ़ा देंगे।

इस बात पर सब लोग हँस पड़े। केरिन लजा गई।

अँजरेकर बोला—फिर तो न चाहते हुए भी खून-खराबा करना ही पड़ेगा।

—दुस्साहस का दण्ड तो भुगतना ही पड़ता है। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने कहा।

—अँजरेकर ! सुनो, सबसे पहले तुम इस खोजी यान को नष्ट करदो। अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा—हो सकता है एक आदमी की मृत्यु उनको राह पर ले आये और सम्राट अपने ग्रह को बचालें।

—ये सुझाव बिलकुल सही है। जर्मन वैज्ञानिक ने कहा।

नितिकाशा और स्टेनले बराबर स्क्रीन पर निगाहें जमाये खड़ी थीं। स्टेनले बोली—ये आदमी - क्या नाम है इसका ?

—ग्रेकिन।

—हाँ, ग्रेकिन, यह भी मुझे खतरनाक इरादेवाला आदमी लगता है। स्टेनले ने कहा।

नितिकाशा बोली—आदमी से ज्यादा खतरनाक कोई इरादा नहीं होता।

चीनी वैज्ञानिक ने अंजरेकर की ओर देखते हुये पूछा—क्या अपना तजुर्बा बता रहे हो?

और फिर सब लोग हँस पड़े। नितिकाशा शान्त हो गई। जिन्दगी को जीना भी एक कला है। आँसू, भय और अभाव के संगम में भीगी हुई जिन्दगी को मुसकान की आँच दिखाते हुए जीना ही, वास्तव में, जिन्दगी को जीना है।

ये वैज्ञानिक अपने घरों से दूर, अन्तरिक्ष में टँगे हुए भी, जिन्दगी को जी रहे थे।

□ □

चेतावनी के बाद दो दिन सकुशल निकल गये थे लेकिन सम्राट के माथे की शिकन और गहरा गई थी।

ग्रेकिन ने जब आकाश की व्यवस्था देखने की बात कही तो शेटिन बोला—मेरे विचार से अब इसकी जरूरत नहीं है। वे सब शायद अब तक शनि ग्रह से पृथ्वी पर लौट गये हों।

—और केग्नि तथा वो नंदुल? सम्राट ने धीरे से पूछा।

—हो सकता है, उन्हें भी वे अपने साथ ही ले गये हों। इस बार कुंदू ने जवाब दिया।

चेटिन ने आकाश की ओर देखते हुए कहा—शराफत को दुर्बलता का नाम देने वाले कभी ऐसा धोखा खाते हैं कि उनका नामोनिशान तक मिट जाता है।

शेटिन ने जोर से कहा—तुम जरूरत से ज्यादा भयभीत हो और मुझे लगता है, तुम भयभीत ही नहीं कायर भी हो।

सम्राट बात बदलने की गरज से बोले—ठीक है, ग्रेकिन ! तुम आकाश का एक चक्कर लगा ही लो। तसल्ली हो जायेगी।

ग्रेकिन ने तत्काल आज्ञा का पालन किया।

कुन्दू बोला—सम्राट ! तंदुल ठीक कहता था। टूटे, बिखरे, अविश्वासी लोग कुछ पाना तो दूर खुद अपनी सम्पदा ही खो बैठते हैं।

तभी ग्रेकिन की आवाज आई—सम्राट। आकाश में दूर-दूर तक कहीं कोई गतिविधि नहीं……सम्राट ! सम्राट ! भर्राई आवाज में ग्रेकिन बोला—मेरा यान ! यान मे कुछ टकराया। आग……आग, मैं आग में घिर गया हूँ, सम्राट !

सम्राट भागते हुए कक्ष से बाहर आकर आकाश को देखने लगे। सभी लोगों की निगाहें आकाश की ओर उठी हुई थीं। आकाश से एक आग का गोला तेजी से उन्हें धरती की ओर आता दिखाई दिया।

सम्राट को लगा जैसे उनकी आँखों में उतरा कोई अंगारा उनके आंसुओं से बुझ गया हो। वह आग का गोला—ग्रेकिन का यान कहीं दूर गिरकर आँखों से ओझल हो गया।

सारे लोग शब्दहीन हो गये। सम्राट मूक और अवश से अब भी आकाश को देखते हुए ग्रेकिन के यान को अपनी निगाहों से टटोलने की कोशिश कर रहे थे। तभी चेटिन बोला—सम्राट ! ग्रेकिन कुर्बान हो गया। हमारी जिद पर उसकी जान चली गई।

—लेकिन ये हुआ क्या ? शेटिन ने कुन्दू की ओर देखते हुए पूछा।

—यान में कोई खराबी आ गई प्रतीत होती है। ग्रेकिन शायद बिना जाँच किये यान ले गया। कुन्दू ने सहज भाव से उत्तर दिया।

—नहीं, ऐसा नहीं है। उस यान को पृथ्वी के आयुध ने नष्ट किया है। अपिन्सू ने दुखी मन से कहा।

चेटिन बोला—आपने सुना नहीं, ग्रेकिन ने किसी वस्तु के उसके यान से टकराने की बात कही थी।

—हाँ। सम्राट चेतन होते हुए बोले—हाँ, ग्रेकिन ने कहा तो था। अब क्या करें ?

—पृथ्वी के सूर्य को छोड़ दीजिए, सम्राट ! नही, तो हम कहीं के नही रहेंगे। चेटिन ने दीर्घ श्वांस लेते हुए कहा।

—हमे, हमें लगता है शायद चेटिन ठीक कह रहा है। सम्राट टूटते हुए से बोले।

—आप भी कैसी बातें कर रहे हैं, सम्राट ! दुर्घटना को आक्रमण नहीं माना जा सकता। कुन्दू बोला—वह हमारा अदृश्य यान था। उसे देखा किसने होगा ?

—हमारे ही यान ने। अपिन्सू ने कहा।

—क्या मतलब ? सम्राट ने पूछा।

—केरिन के यान से क्या वे हमारा अदृश्य यान नही देख सकते ? चेटिन ने प्रश्न किया।

—हाँ। धीरे से बोला चेटिन—उस यान से तो वे देख सकते हैं।

—फिर ? सम्राट ने पूछा।

—फिर क्या, सम्राट ! उन्होंने केरिन के यान से प्रेकिन के यान को देखा और जला दिया। अपिन्सू ने खुलासा करते हुए कहा।

—मुझे अब भी विश्वास नहीं है। कुन्दू बोला—मैं स्वयं एक अदृश्य यान लेकर आकाश मे जाता हूँ।

चेटिन बोला—कुन्दू ! जान-बूझकर अपनी जान जोखिम में मत डालो। मान जाओ।

—बस, एक बार चक्कर लगाकर आता हूं। कहकर कुन्दू वहां से निकल गया।

चेटिन ने कहा—व्यक्ति वही आचरण करने को विवश हो जाता है जो होनी को मंजूर होता है।

सम्राट असमंजस मे अन्दर कक्ष में जाकर बैठ गये। सब गुमसुम, चुप, खोये हुए से थे। सभी की निगाहों में आकाश में घूमता वह आग का गोला अभी तक समाया हुआ था। कुछ को उसकी आग भीतर तक जला गई थी, कुछ की आग आंख के पानी ने बुझादी थी।

तभी कुन्दू के स्वर गूँजने लगे—सम्राट ! मैंने अपने आकाश का रा चक्कर लगा लिया है। किसी दिशा से ऐसे कोई संकेत नहीं हैं कि मारे ग्रह पर कोई आक्रमण होने वाला हो।

—बहुत अच्छे, कुन्दू ! तुम्हारी बात सुन हमें बड़ी तसल्ली हुई।

—सम्राट, आप आदेश दें तो शनि ग्रह तक देख आऊँ ? कुन्दू ने पूछा।

सम्राट ने शेटिन की ओर देखा।

शेटिन बोला—शनि ग्रह जाकर क्या होगा ?

सम्राट बोले—शनि ग्रह जाने से क्या फायदा, कुन्दू ! हो सकता है, वहाँ पृथ्वी वाले अभी तक अपना पड़ाव जमाये पड़े हों।

—इसीलिये तो, सम्राट ! मैं जाना……। सम्राट ! अभी कुछ टकराया है, यान से। टकरा गया कुछ ……मैं……। कुन्दू की काँपती आवाज सुन लोगों के रोंगटे खड़े हो गये। फिर लोग भागते हुए बाहर आ गये। सम्राट भी बदहवासी में बाहर निकल आये। वही आग का गोला फिर एक बार आकाश से धरती की ओर तेजी से आता दिखाई दिया। सम्राट गिर पड़ते अगर अपिन्सू ने उन्हें न सम्हाल लिया होता।

चेटिन चिल्लाया—कुन्दू ! तू अपनी मौत का खुद जिम्मेदार है। अपने को सर्वज्ञ समझने वाला विश्व का मूर्खतम व्यक्ति होता है।

लोग थके-हारे से अन्दर आकर बैठ गये। एक ही क्षण में सम्राट का चेहरा रक्तहीन हो गया। व्यक्ति का मुख ही नहीं अंग-अंग बोलता है। पीड़ा और प्रसन्नता बोलकर व्यक्त नहीं करनी पड़ती। सम्राट के चेहरे पर पीड़ा घनीभूत हो उठी थी।

कोई व्यक्ति कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं था। तभी आका में कुछ शोर सुनाई देने लगा। चेटिन भाग कर बाहर आया। उस आकाश को देखा तो चारों ओर यान ही यान दिखाई पड़ रहे थे। पू आकाश जैसे यानों से भर गया था। वह वहीं से चिल्लाया—सम्राट ! स बेमौत मारे गये।

सारे लोग गिरते-पड़ते बाहर आये। आकाश को देखते ही सब घबरा गये। तभी आग का एक शोला आकाश से आकर बगल में गिरा और सम्राट का भवन धू-धूकर जल उठा।

शेटिन अपने विज्ञान कक्ष की ओर भागा। वह वहाँ पहुँचता उस से पहले ही, विज्ञान कक्ष हवन की आहुति बन गया। अपिन्सू ने अपना सिर पीटते हुए कहा—वर्षों का मेरा श्रम आज स्वाह हो गया। उधर ऐश्वर्य-कक्ष की लपटें आकाश की ओर जा रही थीं और इधर अपिन्सू फूट-फूट कर रो रहा था।

चेटिन यह सब देख धीरे से बोला—सम्राट ! पृथ्वी ग्रह वासी आदमियो का संहार नही कर रहे है और न ही वे अधाधुंध बमबारी ही कर रहे है। इनकी शालीनता का उत्तर हमें विनम्रता से देना चाहिए।

तभी शेटिन ने पास आते हुए कहा—अब तो सब कुछ तबाह हो गया, अब कैसी विनम्रता ?

—तो इस पूरे ग्रह को ज्वालामुखी बनादो। सबको आग की भेंट चढादो। जलादो अपने हाथो से इन जीवित जिस्मो को। जिन्हे दुश्मन तक नही मार रहा उन्हें तुम मार डालो। अपिन्सू आवेश मे बोलता चला गया।

चेटिन कुछ नही बोला। सम्राट कभी अपिन्सू को, कभी शेटिन को और कभी जलते हुए अपने भवन को देख रहे थे और सोच रहे थे यदि वह शोला थोडी देर पहले गिरा होता तो सबका वही अग्नि संस्कार हो गया होता।

इस मौन को चेटिन ने तोडा। वह बोला—चलिये, सम्राट ! यहाँ से चलिये। सभाकक्ष में बैठकर ठंडे दिल से इस गभीर समस्या पर, विचार कर, निर्णय लें जिससे ग्रह को बचाया जा सके।

सम्राट के चलते ही सब लोग भी उनके पीछे हो लिये।

यह काफिला जब तक सभाकक्ष पहुँचता कि वह कक्ष भी आग की लपटों में खो गया। सम्राट ने बडी निरोह और निरुपाय दृष्टि से आसमान की ओर देखा। आकाश मे आये यानो के जमघटे ने पूरे ग्रह का चक्कर लगाकर वापिसी का रुख कर लिया था। धीरे-धीरे आकाश साफ हो गया। अब वहाँ एक भी यान नही था।

चेटिन इस अग्निकांड के बाद कुछ नहीं बोला। अपिन्सू ने धीरे से कहा—सम्राट ! विश्राम कक्ष में चलकर बैठें।

और सम्राट यंत्रचालित से अपिन्सू के साथ चल दिये।

हिमशैल ग्रह का उल्लास आग की लपटों में जल रहा था। बर्फ में लगी आग ने जिस्म में घूमते खून को पिघलाकर आँखों के रास्ते बहाना शुरू कर दिया था।

□ □

अँजरेकर ने आपरेशन हिमशैल के अन्तर्गत पहले दिन किये अपने नियंत्रित आक्रमण की जानकारी नियंत्रण-केन्द्र को भेज दी।

संकेत-केन्द्र पर बैठे अपने कार्य की समीक्षा करने के उद्देश्य से अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा—आज की इस शुरुआत का क्या परिणाम निकलेगा ?

—आज का पहला दिन उनमें भय और बौखलाहट उत्पन्न करने के काम आयेगा। जर्मन वैज्ञानिक ने उत्तर दिया।

रूसी वैज्ञानिक बोला—नरसंहार कम करने की दिशा में वैसे तो यह प्रयत्न ठीक है, पर देखना यह है कि यह कितना प्रभावी होता है ?

—यदि उन लोगों के भाग्य में अकाल मृत्यु का ही योग है तब तो उन्हें कौन बचा सकता है ? स्टेनले ने धीरे से कहा।

ब्रिटिश वैज्ञानिक बोला—उनकी वैज्ञानिक प्रक्रिया तो बिलकुल चरमरा गई है। इसका मनोवैज्ञानिक दबाव तो उन पर पड़ेगा ही।

—मुझे विश्वास है, हिमशैल कोई आत्मघाती निर्णय नहीं लेगा। चीनी वैज्ञानिक ने आश्वस्त भाव से कहा।

नितिकाशा बोली—इस बारे में तो केरिन या तंदुल ही विश्वास-पूर्वक कुछ कह सकते हैं।

तंदुल बोला—हिमर्शल सम्राट तो इतने महत्वाकांक्षी नही हैं लेकिन जब तक शेटिन है, वह सहज रूप में सूर्य को मुक्त नही होने देगा।

—मैं तो अब भी सोचता हूँ कि हिमर्शल जाकर बर्फ की गुफा में स्थापित सूर्य-नियंत्रिका प्रयोगशाला को नष्ट कर दूँ जिससे बिना खून बहाये अपने लक्ष्य की सिद्धि हो जाये। अँजरेकर ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

—शत्रु के घर में इस तरह जाना उपयुक्त नही है। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने कहा।

—और वो भी इसलिए कि उनकी जन-हानि न हो। चीनी वैज्ञानिक ने बात को आगे बढाते हुए कहा।

—मैं तो यह सोचता हूँ कि आज रात एक छोटी सी आतिशबाजी और करदी जाये जिससे दिन में पैदा हुआ भय जल्दी से जवान हो जाये। अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा।

स्टेनले बोली—बिलकुल, ये बात बिलकुल सही है।

अँजरेकर ने केरिन की ओर देखते हुए पूछा—ये शेटिन कहाँ रहता है ?

केरिन बोली—वो ? वो विज्ञान कक्ष से आगे चलकर पाँचवें मकान में रहता है।

—विज्ञान कक्ष तो हम नष्ट कर ही चुके है। रूसी वैज्ञानिक ने कहा।

—बस, उसी के साथ शोध-कक्ष है, सम्पर्क कक्ष है। तंदुल ने कहा।

—ये ठीक है, तदुल ! आज की आतिशबाजी मे ये दो अनार तो चलाये ही जा सकते है। अँजरेकर ने मुसकराते हुए कहा।

थोड़ा रुककर अँजरेकर ने केरिन से कहा—कल सवेरे ही तुम, नितिकाशा और स्टेनले अपने यान में चली जाना। शायद हिमर्शल ग्रह तुमसे सम्पर्क करना चाहे।

—लेकिन क्यों ? केरिन ने हैरानी से पूछा।

—यह तुम्हें सुबह ही पता चलेगा। अँजरेकर ने धीरे से कहा।

चीनी वैज्ञानिक बोला—मैं और तंदुल भी चले जायेंगे।

—फिर मैं ही यहाँ क्या करूँगा ? अँजरेकर ने मुसकराते हुए कहा। और सभी ने एक मीठी मुसकान चखली।

□ □

आग लगा दिन तो बुझ चुका था किन्तु हिमशैल ग्रह के निवासियों की बुझी-बुझी आँखों में अंगारे अभी तक जल रहे थे।

दो-दो, चार-चार के समूह में लोग बैठे-खड़े बात कर रहे थे।

एक ने कहा—यह तो होना ही था। चोरी करने से सम्पत्ति मिल सकती है, प्रतिष्ठा नहीं।

दूसरा बोला—भूख मिटाने के लिए कोई अपना घर नहीं जलाता।

तीसरे ने कहा—कितना ही अशक्त आदमी क्यों न हो, इज्जत पर उठा हाथ तो तोड़ेगा ही।

चौथा बोला—दूसरे के घर में अँधेरा कर दिवाली मनाने वालों के महल अपने ही चिराग की आग से जल जाते हैं।

पहले ने प्रश्न किया—लेकिन अब होगा क्या ?

दूसरे ने कहा—सुबह के बाद से अब तक तो शांति है।

तीसरा बोला—तूफान के आने से पहले हवा थम ही जाती है।

चौथे ने पूछा—तो क्या अभी और भी कुछ होना है ?

इस प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया। पहला व्यक्ति ही फिर बोला—सम्राट चेटिन के घर हैं, काफी ग्रहवासी भी वहाँ पर हैं, वहीं चलकर देखते हैं।

सम्राट के चेहरे पर उदासी की परतें बहुत गहरी हो गई थीं। सारा माहौल भीगा-भीगा, आँसू-आँसू हो रहा था। ग्रेकिन और कुन्दू की कमी

सबको अखर रही थी। सम्राट ने खाली निगाहों से इधर-उधर देखते हुए पूछा—शेटिन ! क्या तुम सोचते हो, पृथ्वी वाले बिना अपना सूरज लिये मान जायेंगे ?

शेटिन के पास इस प्रश्न का सहज उत्तर नहीं था।

चेटिन ने कहा—सम्राट ! क्या आप ऐसा सोचते हैं ? अपनी बहुमूल्य सम्पत्ति को वापस लिये बिना वे लौट सकते हैं ?

—लेकिन हम अपना विनाश अपने हाथों कैसे स्वीकारलें ? शेटिन ने बुझते दिये को जलाये रखने का प्रयास किया।

—बिलकुल ठीक। जब तक इस ग्रह पर एक भी आदमी जिन्दा है, हम उनका सूरज उन्हें क्यों दें ? जब यहाँ कोई नही बचेगा तो फिर सूरज कोई भी ले जाये। अपिन्सू ने शेटिन की ओर देखते हुए कहा।

सम्राट बोले—ये आपस मे लड़ने का समय नही है। सबको मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना है।

—ये कोई समस्या नही है, सम्राट ! पराई सम्पदा पर अपना अधिकार जताने की सामंती परम्परा से हमें मानसिक रूप से मुक्त होना ही पड़ेगा। पृथ्वी के सूर्य पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। चेटिन ने स्पष्ट शब्दों में अपनी बात कही।

—लेकिन यदि सूर्य नहीं रहा तो हमारा, हमारी योजनाओं का, हमारे विकास का क्या होगा ? शेटिन ने जहर-जहर होते हुए पूछा।

—और यदि हम लोग ही नही रहे तो फिर किसी का कुछ नही होगा। अपिन्सू ने अपनी बात कही।

शेटिन बोला—निराशावादी व्यक्ति सदैव अनाम मौत मरता है।

—अति आशावादी जीते हुए भी पल-पल मरता रहता है। चेटिन ने धीरे से कहा।

सम्राट कुछ कहते कि एक आदमी ने भाग कर आते हुए कहा—सम्राट ! सम्राट ! शोध-कक्ष और सम्पर्क-कक्ष ......

—क्या ? क्या कहा ? सम्राट खड़े हो गये। सारे लोग हड़बड़ी मे बाहर निकले। आकाश की ओर उठती हुई आग की लपटें सम्राट की विवशता पर अट्टहास करती हुई प्रतीत हो रही थी।

अपिन्सू ने टूटते हुए कहा—दुराग्रही का घर अनाथों जैसा जलता है। अपना ये ग्रह जल रहा है और हम कुछ नहीं कर पा रहे।

शेटिन ने कहा—सम्राट ! हमने बहुत सहन कर लिया। अब हमें भी जवाबी कार्यवाही करनी चाहिए।

—जवाबी कार्यवाही ? क्या कर सकते हैं हम ? अपिन्सू ने पूछा।

—हम·······हम, वो क्या है—शनिग्रह पर उनके ठिकानों पर·······

शेटिन की बात काटते हुए सम्राट आँसू से भरते हुए बोले·······अब हमारे पास रहा ही क्या है, शेटिन ! अपनी सारी शक्ति तो नष्ट हो चुकी है। ऐश्वर्य और विज्ञान-कक्ष राख हो गये। शोध एवं सम्पर्क-कक्ष जल रहे हैं। पृथ्वी वाले हमें एक साँस में क्यों नहीं जला देते ?

—वे हमें जलाना नहीं चाहते, सम्राट ! क्या आप यह अनुभव नहीं कर रहे हैं। वे नहीं चाहते नर-संहार। वे चाहते हैं केवल अपने सूर्य की वापसी। चेटिन ने अपने शब्दों पर जोर देते हुए कहा।

—शेटिन ! हमारा विचार है कि अब तुम्हें भी अपना हठ छोड़ देना चाहिए। सम्राट ने निरीह भाव से उसकी ओर देखते हुए कहा।

—ठीक है, सम्राट ! सुबह होने दें। फिर जैसा आप कहेंगे, उसके अनुसार निर्णय ले लिया जायेगा। वेमन से इतना कहकर शेटिन वहाँ से चल दिया।

□ □

आधी रात हुआ चाहती थी। शनि ग्रह पर कार्यरत पृथ्वी के संकेत-केन्द्र ने अभी नींद की चादर नहीं ओढ़ी थी।

अँजरेकर ने केरिन और तंदुल की सहायता से हिमशैल ग्रह का जो नक्शा तैयार किया था, वह सामने रखा हुआ था। सभी वैज्ञानिक उसे अपनी-अपनी नजर से देख रहे थे। पृथ्वी के सूर्य पर चढ़े आवरण-स्थल की नियन्त्रक प्रयोगशाला को पृथक से चित्रित कर रखा था।

अंजरेकर ने उस नक्शे पर निगाहें जमाये एक बिन्दु पर अँगुली रखते हुए कहा—मैं यहाँ उतरकर इस पहाड़ी पर चढकर फिसलता हुआ ठीक इस प्रयोगशाला की बगल मे आ सकता हूँ और फिर इसे नष्ट करना बांये हाथ का खेल है।

—वो बांये हाथ का खेल ही तो हम जानना चाहते है। चीनी वैज्ञानिक ने पूछा।

—कैसे नष्ट करोगे उसे ? अमेरिकी वैज्ञानिक ने प्रश्न किया।

—वहाँ कुछ रक्षक भी तो होगे, और उनके पास वैज्ञानिक शस्त्र भी होंगे। रूसी वैज्ञानिक ने धीरे से कहा।

—घातक और प्राण लेवा हथियार भी हो सकते है। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने अपना सदेह व्यक्त किया।

केरिन बोली—आप सब बिलकुल ठीक कह रहे हैं। पहले वहाँ दस सुरक्षा-सैनिक रहते थे। अब तो उनकी सख्या और भी बढ गई होगी।

—यह भी बडी विचित्र स्थिति है, केरिन ! तुम कहती हो कि वर्फ की गुफा मे स्थित यह प्रयोगशाला ऊपर से नष्ट नही हो सकती। नीचे जाने मे खतरा है तो हम कैसे करायेंगे अपने सूर्य को मुक्त ? अंजरेकर ने उलझन भरे अन्दाज मे पूछा।

—मेरे विचार से आपरेशन हिमशैल की बलिवेदी पर गेटिन को और चढा दिया जाये। स्टेनले ने कहा।

—ये ठीक है। फिर अपने आप सूर्य की मुक्ति हो जायेगी। केरिन बोली।

—बलिवेदी पर एक नही, अनेक चढ जायेंगे। अंजरेकर ने बुझे मन से कहा।

—एक व्यक्ति की हठ जब सामूहिक रूप ले लेती है तो उसका परिणाम भी समूह को ही भुगतना पड़ता है। जर्मन वैज्ञानिक ने कहा।

अंजरेकर ने फिर अपनी दृष्टि नक्शे पर टिकादी। गेटिन के घर पर लाल निशान लगाते हुए वह बोला—सूर्य-मुक्ति-यज्ञ मे एक आहुति और सही।

—देवता को प्रसन्न करने के लिए कभी-कभी अनचाहे काम भी करने पड़ते हैं। नितिकाशा ने मुसकराते हुए कहा।

—मुझे तो एक ही विस्मय है। इतनी वैज्ञानिक क्षमता से सम्पन्न ग्रह ने प्रतिरोध क्यों नहीं किया? रूसी वैज्ञानिक ने पूछा।

—मानव मूल्यों का अवमूल्यन कर डालने वाला कितना ही शक्ति सम्पन्न क्यों न हो, वह साहस एवं शौर्य से हीन हो जाता है और नैतिक सामर्थ्य का सामना नहीं कर पाता। अमेरिकी वैज्ञानिक ने उत्तर दिया।

□ □

भोर-किरण हिमर्शल पर भूकम्प लेकर उतरी। आकाश से बरसी आग ने एक-साथ चार-पाँच मकानों को अपने घेरे में ले लिया था। पहली बार उस ग्रह पर चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं।

सम्राट विश्राम कक्ष में ही थे। अपिन्सू ने वहाँ पहुँच सम्राट को सूचना देते हुए कहा—सम्राट! अनर्थ हो गया, शेटिन का घर श्मशान गया।

—अरे, क्या? शेटिन भी? सम्राट सहसा खड़े हो गये—अब हमें भी आत्मदाह कर लेना चाहिए।

अपिन्सू का मन हुआ कि वह कहदे—हठी होने की अपेक्षा आत्मदाही व्यक्ति श्रेष्ठ होता है. किन्तु वह धीरे से बोला—आप ऐसा क्यों सोचते हैं, सम्राट! आपने अकेले कभी कोई निर्णय लिया नहीं और सामूहिक निर्णय के लिए एक व्यक्ति उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता।

अब तक काफी लोग विश्राम-कक्ष में आ चुके थे। अपिन्सू की बात सुन चेटिन बोला—सम्राट! आपने जो कुछ भी किया, वह अपने ग्रह के हित में किया, अब आप उसका हवन रोकलें।

—चेटिन! हमने तुम्हारी बात नहीं मानी, उसका फल हमारे सामने है। सम्राट ने डूबते मन से कहा।

—सम्राट ! व्यक्ति की बात मानने, न मानने से कोई अंतर नहीं पड़ता, अंतर पड़ता है अज्ञानी की बात मानने से। अपिन्सू ने धीरे से कहा।

सम्राट ने चेटिन की ओर देखते हुए पूछा—चेटिन ! अब बताओ, हम क्या करें ?

—आप, सम्राट ! केरिन के यान पर उनसे सम्पर्क करें। उन्हें हिमशैल सम्मानपूर्वक आमंत्रित करें और उनका सूर्य उन्हें सौंपदें जिससे अपनी आकाशगंगा का एक प्रमुख ग्रह अपना मित्र भी बन जाये। चेटिन ने आँखें झुकाते हुए निवेदन किया।

—ठीक है, चेटिन ! हमारी ओर से तुम सब व्यवस्था सम्हाल लो। सम्राट ने परास्त होने के भाव से कहा।

चेटिन बोला—आप निश्चिन्त रहें, सम्राट ! मैं अभी सम्पर्क स्थापित करता हूँ।

सम्राट की बुझी आँखों में फिर कोई सुनहरा पल जाग उठा। जीवन की साँझ में फिर से सूर्योदय देखने की भावना प्रबल हो जाती है।

चेटिन ने विश्राम-कक्ष की प्रयोगशाला में जाकर विभिन्न तारों को जोड़ एक स्विच दबाया और बोला—केरिन ! केरिन !

केरिन अपना नाम सुन चौंक पड़ी। नितिकाशा और स्टेनले को भी आश्चर्य हुआ।

केरिन ने बटन दबाकर कहा—हाँ, बोलिये।

—मैं चेटिन बोल रहा हूँ, केरिन !

—हाँ, चेटिन !

—तुम्हें तो पता ही है, यहाँ क्या हो रहा है ?

—पता है, चेटिन ! लेकिन विवशता है।

—अब कोई बात नहीं है, केरिन ! सम्राट मान गये हैं।

—क्या ?

—हाँ, केरिन ! उन्होंने पृथ्वी वासियों को सादर आमन्त्रित किया है जिससे उनके सूर्य को वे उनके सामने मुक्त करें।

—सच कह रहे हो, चेटिन !

—बिलकुल सच, केरिन ! सम्राट पूरी तरह टूट चुके हैं अब उनमें पृथ्वी के सूर्य को रोके रखने की क्षमता नहीं है। तुम ग्रह पर आक्रमण भी बंद करवादो।

—ठीक है, चेटिन ! मैं सारी व्यवस्था करती हूँ और थोड़ी देर में पृथ्वी वासियों को वहाँ लेकर पहुँचती हूँ। केरिन ने संतोष की साँस लेते हुए कहा।

—ठीक है, केरिन ! ओवर।

—ओवर। केरिन ने धीरे से कहा।

□ □

यान से उतर जब वे तीनों संकेत-केन्द्र की ओर चलीं तो केरिन बोली—अँजरेकर को मैं तो नहीं समझ पाई। वह वैज्ञानिक कम, ज्योतिषी ज्यादा है।

—सच कह रही हो, केरिन ! आज सुबह अचानक हमें यान में भेज दिया। जैसे उसे पता हो कि कोई सन्देश आने वाला है। स्टेनले ने कहा।

नितिकाशा बोली—स्थूल परत पर अध्ययन एवं अनुभव ऐसी सूक्ष्म दृष्टि जगा देते हैं जिससे आने वाला पल स्वयं दिखाई देने लगता है।

—शायद तुम ठीक कह रही हो, केरिन ने कहा। जब वे तीनों संकेत-केन्द्र पहुँची, अँजरेकर सोया हुआ था, बाकी सब भी विश्राम-मुद्रा में थे। केरिन ने जोर से कहा—हिमशैल से संदेश आया है।

—उन्होंने हमें बुलाया है ? अँजरेकर ने आँखें मूँदे-मूँदे ही पूछा।

केरिन चौंक कर बोली—हाँ, लेकिन तुम्हें कैसे पता ?

—वैसे ही। सम्राट ने तो बात नहीं की होगी ? अँजरेकर ने पूछा।

—हाँ, चेटिन बोल रहा था। केरिन ने कहा।

—ठीक है, दो विमानों की व्यवस्था करो। अँजरेकर ने उठते हुए कहा।

—दो क्यों? इस बार अमेरिकी वैज्ञानिक ने पूछा।

—वो इसलिए कि एक यान आकाश में घूमता रहेगा। यदि आखिरी वक्त सम्राट के मन में कोई बेईमानी आ गई तो? अँजरेकर ने तैयार होने के लिए खड़े होते हुए कहा।

सारे वैज्ञानिक भी अज्ञात ग्रह की यात्रा पर चलने के लिए उत्सुकता से तैयार होने लगे। प्रेम और विस्मय को युवा बनाने में कौतूहल बड़ी सार्थक भूमिका निभाता है।

□ □

शनिग्रह से दो यानों ने हिमर्शल के लिए उड़ान भरी। एक यान में कैरिन और अँजरेकर थे, दूसरे यान में सारे वैज्ञानिक तथा तदुल बैठे। अँजरेकर ने यान में चढ़ने से पहले कहा—हिमर्शल पर यदि सब ठीक हुआ तो मैं आपको उतरने का संदेश भेज दूँगा।

दो यानों को अपने आकाश पर देख हिमर्शल वासी फिर चौंक पड़े। धीरे-धीरे एक यान नीचे की ओर आने लगा और जब अँजरेकर का यान हिमर्शल की धरती पर उतरा तो वहाँ खड़े अनेक ग्रहवासियों ने उसे घेर लिया।

दूसरा विमान आकाश में ही चक्कर लगा रहा था। तब तक अँजरेकर यान से बाहर आ चुका था। चेटिन ने उसका अभिवादन करते हुए कहा—हिमर्शल ग्रह पर आपका स्वागत है। आकाश में घूमते अपने और साथियों को भी बुला लीजिये।

अँजरेकर बोला—आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई। आप जैसे समझदार लोगों के रहते हिमर्शल ऐसा अपराध कर सका, विश्वास नहीं होता।

—आज के युग में समझदार होना सबसे बड़ा अभिशाप है। चेटिन ने आकाश में घूमते यान को देखते हुए कहा।

—शायद आप अपने ग्रह के अनुसार ठीक कह रहे हैं। अँजरेकर ने बात समाप्त करते हुए कहा।

चेटिन समझ गया कि वे अभी दूसरे विमान को नीचे नहीं उतारना चाहते इसलिए वह अँजरेकर और केरिन को साथ ले विश्राम-कक्ष की ओर चल दिया। भीड़ उनके पीछे चल दी।

सम्राट ने खड़े होकर अँजरेकर का स्वागत करते हुए कहा—आइये, पृथ्वी-ग्रह वासी ! हिमर्शल-ग्रह आपका स्वागत करता है।

—आप हमारा भी प्रणाम स्वीकारें। अँजरेकर ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

केरिन की ओर देखते हुए सम्राट ने पूछा—तुम कैसी हो ?

-आपकी कृपा है, सम्राट ! केरिन ने आँखें झुकाते हुए कहा।

सम्राट बोले—चेटिन ! उस प्रयोगशाला को नष्ट कर दो जिससे पृथ्वी के सूर्य पर पड़ा आवरण नष्ट हो जाये।

यह सुन अँजरेकर बोला—सम्राट ! आपके दर्शन पाकर वास्तव में प्रसन्नता हुई। यद्यपि आपके इस ग्रह को अपनी इस आकाश गंगा से समाप्त करने का हम संकल्प ले चुके थे क्योंकि आपने पृथ्वीग्रह के आठ श्रेष्ठ और निरपराध वैज्ञानिकों को जला दिया था।

—क्या, क्या कह रहे हैं ये आप ? सम्राट ने चकित होते हुए पूछा—हमें तो यह बताया गया था कि पृथ्वी का कोई खोजी यान सूर्य की कक्षा में प्रविष्ट हुआ है अतः उसे नष्ट करना आवश्यक है।

चेटिन बोला—सम्राट ! उसी यान में पृथ्वी के आठ वैज्ञानिक थे किन्तु क्रुन्द्र नहीं माना और उसने सूर्य से आवरण हटाकर उन्हें जला डाला।

—यह सुनकर हमें वास्तव में पीड़ा हुई। उसने अपनी करनी का फल पा लिया। वह भी आकाश में ही जला। सम्राट ने शून्य में निहारते हुए कहा।

—हम नर-संहार बिलकुल नही चाहते थे, सम्राट ! अनमोल जीवन स्नेह करने के लिए है, नष्ट करने के लिए नही । किन्तु हमारी विवशता थी जब आप समय-सीमा बीतने के तीन दिन बाद तक हमारा सुझाव स्वीकार नही कर सके । अंजरेकर ने सम्राट की ओर देखते हुए कहा ।

चेटिन बोला—बीते क्षण की चर्चा मन को कसैला तो कर जाती है पर वह क्षण कभी लौटता नही । आप अपने साथियों को बुला लें तो सम्राट की आज्ञा-पालन कर पृथ्वीग्रह के सूर्य का मुक्ति-उत्सव मनायें ।

अंजरेकर ने अपने हाथ में बँधे यंत्र को घुमाया और यान को उतरने का संकेत दे दिया । चेटिन ने अपिन्सू को उन मित्रों का स्वागत करने भेज दिया ।

जब वे सब लोग विश्राम-कक्ष पहुँचे तो अपिन्सू के साथ तन्दुल को देखकर सम्राट चौंकते हुए बोले—अरे, तंदुल ! तुम ? कैसे हो ?

—आपकी दया है, सम्राट ! तंदुल ने विनत भाव से कहा ।

सम्राट ने पूछा—आज पृथ्वी की शक्ति को पहचाना तुमने ?

तंदुल ने सहज भाव से कहा—यह पृथ्वी की शक्ति नहीं है, सम्राट ! यह पृथ्वी की एकता की शक्ति है । जिस पृथ्वी को मैंने देखा था—बोली, कपड़े, धर्म और हदों में बँटी-बिखरी हुई—अब वो नही रही । आज सारी पृथ्वी एक परिवार है । आपके सामने संपूर्ण पृथ्वी के प्रतिनिधि एकजुट हुए खड़े है । अब ऐसा कौनसा ग्रह है इस आकाशगंगा में जो पृथ्वी की ओर आँख उठाकर भी देख सके ।

अपने साथियो का परिचय कराते हुए अंजरेकर ने कहा—सम्राट ! ये जापान की वैज्ञानिक नितिकाशा है । ये फ्रांस की स्टेनले । ये रूस के निकोलाई, अमेरिका के इवान्स, चीन के लीपिन, ब्रिटेन के हरबर्ट, जर्मनी के ब्लेण्डो और मैं भारत का अंजरेकर ।

सम्राट ने सारे वैज्ञानिकों का हाथ जोड़कर अभिवादन किया । फिर सम्राट बोले—अब चलें, पृथ्वी के सूर्य को मुक्त करने ।

सारा काफिला सम्राट की अगुवाई में वहाँ से चल पड़ा । बर्फ की गुफा के बाहर पहुँच चेटिन ने जोर से आवाज दी—विस्किल ! अपने सारे साथियों सहित बाहर आ जाओ ।

एक-एक कर उस गुफा से दस वर्दीधारी बाहर निकल आये।

चेटिन ने सभी को वहाँ से दूर चले जाने को कहकर अपिन्सू से कहा—संचित ऊर्जा का प्रकाश करो।

तभी अँजरेकर बोला—क्या हम अन्दर प्रवेश कर सकते हैं?

—अब क्या करना है इस गुफा के अंतिम संस्कार का साक्षी बनकर? इतना कह चेटिन ने अपनी कमर में लगा आयुध निकाला और गुफा को लक्षित कर उसे दबा दिया। एक शोला लपका और बर्फ की वह पहाड़ी धमाके के साथ हवा में बिखर गई।

हिमशैल-ग्रह अँधेरे में डूब गया। तभी संचित ऊर्जा का क्षीण प्रकाश इधर-उधर दिखाई देने लगा।

सम्राट ने बहुत आग्रह किया रुकने का किन्तु अँजरेकर ने विवशता की बात कह चलना चाहा तो सम्राट बोले—केरिन वाला यान आप अपने साथ ही हमारी भेंट के रूप में पृथ्वी ग्रह पर ले जाना।

अँजरेकर ने आभार मानते हुए प्रणाम किया। केरिन और तंदुल ने जब अन्य वैज्ञानिकों के साथ झुककर नमन किया तो सम्राट ने अचकचाते हुए पूछा—क्या? क्या तुम लोग भी जा रहे हो?

—हाँ, सम्राट! मन-प्राण में बसी अपनी मिट्टी की गंध के सम्मोहन को कोई सम्पत्ति-सम्मान भंग नहीं कर सकता। तंदुल ने पुनः हाथ जोड़ते हुए कहा।

सम्राट अवाक् से देखते रह गये और पूरा काफिला दोनों यानों तक पहुँच गया। केरिन को यान में चढ़ता देख अपिन्सू की आँखें भर आईं। चेटिन की आँखें भी भीग गईं। ग्रह वासियों ने उन्हें भाव भीनी विदाई दी।

शनि ग्रह की धरती पर उतर जैसे ही अपने संकेत-केन्द्र पर वैज्ञानिकों का दल पहुँचा, उन्हें पृथ्वी के नियंत्रण केन्द्र से तुरन्त सम्पर्क करने के अनेक संदेश मिले। अँजरेकर ने जैसे ही सम्पर्क स्थापित किया, कर्णिकर की आवाज सुनाई दी—अपने सारे सहयोगियों को पूरी पृथ्वी की ओर से बधाई देकर जल्दी ही यहाँ आओ। लगता है, सदियों बाद जैसे अपनी पृथ्वी ने किरण-स्नान किया हो। पूरी पृथ्वी नये उत्साह और

उल्लास से भर गई है। सारा विश्व तुम सबको देखने के लिए आतुर है। तुम सुन रहे हो ना ?

अँजरेकर कुछ नहीं बोल पाया। उसका गला रुँध गया। श्रमजन्य सुख की अनुभूति सदा अव्यक्त रहती है। ब्रिटिश वैज्ञानिक ने उत्तर दिया—संदेश मिल गया। आप सबको भी बधाई। हम लोग शीघ्र ही यहाँ से रवाना हो रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में बोलते हुए महासचिव ने पृथ्वी के सूर्य-अपहरण की पूरी कहानी विस्तार से सुनाने के बाद कहा—और हमारी पृथ्वी के आठ सपूतों ने, अपनी आकाशगंगा के इस अज्ञात ग्रह हिमशैल का पता लगाकर, अपने कौशल और विवेक से, उसका समर्पण कराके, बिना नर-संहार किये, अपने सूर्य को छुड़ाया है।

एक छोटे एशियाई देश के प्रतिनिधि ने पूछा—इतना बड़ा हादसा हो गया और विश्व-संस्था ने अपने सदस्य देशों को विश्वास में नहीं लिया।

—यह समूची पृथ्वी के लिए एक काला अध्याय था जिसकी जानकारी देना भय को और बढ़ावा देना था। इसलिए आठ राष्ट्रों के निपुण वैज्ञानिकों को चुनकर इस काम पर लगा दिया गया जिनके दिन-रात के श्रम का परिणाम आपके सामने है।

इतना कहकर महासचिव ने कहा—इस दल का नेतृत्व भारतीय वैज्ञानिक अँजरेकर ने किया।

अँजरेकर ने खड़े होकर हाथ जोड़ दिये।

तालियों के समुन्दर में धड़कनें महकने लगीं।

महासचिव ने कहा—इनके सहयोगी थे अमेरिका के इवन्स।

तालियाँ बजती रहीं। वैज्ञानिक खड़े होकर सिर झुकाते रहे। महा-

सचिव बोलते रहे—इंगलैण्ड के हरबर्ट, सोवियत रूस के निकोलाई, फ्रांस की मिस स्टेनले, जर्मनी के ब्लैण्डो, चीन के लीपिन और जापान की मिस नितिकाशा। इनके विशेष सहयोगी रहे हिमर्शल की मिस केरिन और एशिया के तंदुल।

तालियों का शोर जब थमा तो महासचिव ने कहा—अपने इन वरद पृथ्वी-पुत्रों का हम अपनी पृथ्वी की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अध्यक्ष ने कहा—एक निर्बल पृथ्वी का सूर्य एक अज्ञात ग्रह चुराकर ले गया था और आज सबल पृथ्वी का सूर्य उसके आकाश पर प्रखर प्रकाश के साथ चमक रहा है। हमारे सूर्य की वापसी पूरी पृथ्वी की एकता, आपसी भाईचारे, पारस्परिक प्रेम एवं विश्वास के फलस्वरूप ही संभव हुई। जाति, धर्म, सम्प्रदाय के पहाड़ आज टूट चुके हैं। आज किसी आँख में बबूल नहीं है। आज प्यार की खुशबू से हर दिल महक रहा है। हमारी पृथ्वी ने नफरत के पौधे को समूल उखाड़ फेंका है। ऐसे ऐतिहासिक क्षण पर सारी पृथ्वी अपने इन लाड़ले बेटों का सम्पूर्ण मन से स्वागत करती है जिन्होंने पृथ्वी की प्रतिष्ठा को नया उत्कर्ष सौंपा है, नया अर्थ दिया है।

गंगा-जमुना के जल से अँजरेकर के गाल धुल रहे थे। वह स्नेह और सम्मान की उस निश्छल बरसात को सहेज नहीं पा रहा था इसलिए उसकी आँखें बरस रही थीं।

जब महासचिव ने उसका नाम पुकारा तो वह सहसा खड़ा नहीं हो सका। धीरे-धीरे खड़े होकर उसने कहा—मैं स्वयं और अपने समस्त सहयोगियों की ओर से पृथ्वी के समस्त राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को नमन करता हूँ। पृथ्वीग्रह की एकता की प्रबल शक्ति ने ही सत्कार का यह अभूतपूर्व क्षण हमें सौंपा है इसलिए हम पृथ्वीपुत्र अपनी प्राणोपम पृथ्वी को पुनः पुनः प्रणाम करते हैं।

एक बार फिर तालियों के प्रकाश में आँखें चमक उठीं।

□ □

हिमशैल का वह गेंदनुमा यान पृथ्वी के राष्ट्रों की यात्रा कर रहा था। हर देश में लाखों देशवासी उस विचित्र वैज्ञानिक उपकरण को बड़े विस्मय से देखते। वह अंतरिक्ष पर पृथ्वी की महान विजय का प्रतीक बन गया था।

अनेक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों-पुरस्कारों ने उन वैज्ञानिक पृथ्वीपुत्रों के नामों से जुड़ स्वयं को गौरवान्वित किया था।

नितिकाशा अंजरेकर की आँख की पुतली बन गई तो केरिन तंदुल की धडकन और स्टेनले लीपिन की साँसो में समा गई।

पृथ्वी के नियन्त्रण-केन्द्र पर कार्यरत अपने सभी सहयोगी वैज्ञानिकों से विदा लेकर, भारत के लिए प्रस्थान करते समय, कर्णीकर ने कहा—हिमशैल के इस रोमांचक प्रकरण के पश्चात् आज ऐसा लग रहा है, जैसे *आकाश गंगा पृथ्वी की गंगा में नहाकर पवित्र हो गई हो* और पृथ्वी की प्रतिष्ठा, सितारों से आगे तक पहुँच, निस्सीम हो गई हो।